श्रीमज्जैनाचार्य तपोधनी मध्यप्रांत केसरी परम प्रतापी पूज्य श्री १००८ श्री देवजी ऋषिजी महाराज साहब के सखा स्वरुप--

मेरे करुणा मूर्ति कृपालु गुरुदेव

श्री सखा ऋषिजी महाराज साहब !

आपश्री परम काव्य रसिकथे। आपकी मधुरता से जनता मंत्रमुग्ध हो जाती थी।

इस पामरको भी श्रीजीने काव्य पान के साथ संयम जीवन प्राण अर्पण किया है। जिसकी पुण्य स्मृति में यह 'जैनामृत सुबोध संग्रह' श्रीजी की प्रिय प्रसादी श्रीजी की सेवामें सविनय समर्पण करता हूँ।

चरण रज सेवक

"अक्षय"

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

दो शब्द

पूज्य श्री कानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय मे अधिकतर मुनि कवि एवं साहित्य रसिक होने की ही परम्परा चल रही है। यह सम्प्रदाय मालवा में अधिक रूप से था, परन्तु बाद में जहां मुनिराज नहीं पहुँचते हैं ऐसे देशों में विचरकर धर्मोद्योत करने का ध्यान इसी सम्प्रदाय के मुनिवरों को हुआ। फलतः निजाम स्टेट, बेंगलूर, रायपुर, दक्षिण-महाराष्ट्र छत्तीसगढ जिला आदि दूरवर्ती और जैन साधुओं के लिए विकट विहार के कष्टों को सहा और उक्त क्षेत्रों का उद्धार किया।

स्व० पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० सा० ने हैदराबाद (निजाम) तक पधार कर कुछ वर्ष तक उपकार किया। अनेक धर्म ग्रन्थ लिखे, बत्तीस सूत्रों का सरल हिंदी भाषानुवाद करके सूत्र ज्ञान को सुलभ बनाया, जिसको दानवीर रा, ब सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी ने छपवाकर मुफ्त प्रभावना की।

क्षेत्रोद्धारक विकट कार्य इसी सम्प्रदाय के वर्तमान पूज्य श्री देवजी ऋषिजी म० सा० घोर तपस्या करते हुए कर रहे हैं। आपके विद्याभिलाषी शिष्य रत्न प० अमरथऋषिजी महाराज की प्रेरणा से यह पुराना स्तवन सग्रह प्रसिद्ध हो रहा है।

२५ वर्ष पहिले ही ऋषि सम्प्रदाय मे दो जगमगाते जवाहिर मुनि पुगव मालवा देश को पावन कर रहे थे। एक थे ज्योतिष के

बेजोड़ विद्वान पं० मुनि श्री दौलत ऋषिजी महाराज जिनका शिष्य परिवार सुप्रसिद्ध अध्यात्म रसिक, सिद्धहस्त लेखक, प्रभाविक वक्ता वैराग्य आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी म० और विवेक व्यवहारविद विनयऋषिजी म० आदि वर्तमान में मौजूद हैं।

दूसरे थे कविकुल भूषण पं० मुनि श्री अमीऋषिजी महाराज जिनकी कविताएं बड़ी रोचक, भाववाही, हृदय स्पर्शी और ज्ञान उपदेश के खजाना रूप है। जिनके विषय अन्य प्रस्तावना क्या करें ? 'सुबोध संग्रह' ही पाठकों के सामने पेश होरहा है।

ऋषि सम्प्रदाय कविकुल सा ही है। स्व० कविवर्य श्री तिलोकऋषिजी म० सा० और कवि श्री रत्नऋषिजी म० सा० जैन जगत में सुप्रसिद्ध हैं ही। आपके परिवार में वर्तमान युवाचार्य श्री प्र० वक्ता पं० रत्न आनन्दऋषिजी म० सा० ऋषिकुल की शोभा रूप हैं।

प्राचीन कवि लोग तर्ज राग रागणी आदि द्वारा श्रोताओं की कर्णेन्द्रिय को पोषने का लक्ष्य नहीं रखते, परन्तु जीवों को ज्ञान वैराग्य आत्म भाव प्राप्त हो ऐसा प्रयत्न अपनी रचनाओं में रखते थे। यही विशेषता आप कविकुल भूषण पं० रत्न स्व० अमीऋषिजी म० का यह "जैनामृत सुबोध संग्रह" में पावेंगे।

इस पुस्तक को छपवाने के लिए उदार श्रीमन्तों ने सहायता दी है जिनकी शुभनामावली पीछे दी है उन सज्जनों का आभार स्वीकार किया जाता है। वे सब धन्यवाद के पात्र हैं।

सरदारमल पुंगलिया, इतवारी, नागपुर, प्रमुख

जवाहरलाल रामावत, चीरजलाल के. तुरखिया, मन्त्री, श्री ऋषि-श्रावक समिति

संवत्सरी पर्व सं १६८५

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

श्री जैनामृत बोध-माला

प्रथम चतुर्विंशति-जिनस्तवन
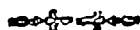
१ श्री ऋषभदेवजी का स्तवन।

आज आनन्द घन योगीश्वर आया ॥ यह देशी ॥

प्रथम जिनेश्वर नित प्रति वन्दूं, ऋषभदेव महाराया रेलो ।टेर।
सर्वार्थ सिद्ध तैंतिस सागर का, विलसी सौख्य सवाया रेलो ।
वनिता नगरी में अवतरिया, मरुदेवी उर आया रेलो ॥ प्र०
नाभिराय का नंद कहाया, कुल पै कलश चढ़ाया रेलो ।
पर उपकारी परम दयालु, जुगल्या धर्म छिपाया रेलो ए ॥ प्र०
जानि अनित्य राज्य ऋद्धि सम्पद संयम तप चित भाया रेलो ए।
इन्द्र नरेन्द्र असुर सुर मानव, प्रभु को शीस नमाया रेलो ए ॥प्र०
दे उपदेश भविक जन तारे, कर्म का वन्ध छुड़ाया रेलो ए ।
हाथी हौदे निज जननी को, शिवपुर महल बताया रेलो ए ॥प्र०
नाभि पिता भवकर शिव पाया, आवागमन मिटाया रेलो ए ।
कांच भवन नंदन भरतेश्वर, अनित्य-भाव मन भाया रेलो ए ॥प्र०
ब्राह्मी सुन्दरी सति सुखदायी, पुत्र निन्यानु कहाया रेलो ए ।
दीन दयालु कृपा मन आनी, कारज सिद्ध कराया रेलो ए ॥प्र०
अधम उद्धारन विरुद श्रवन कर, मैं तुम शरने आया रेलो ए ।
कहत अमीऋषि नाथ निरंजन, तार तार जिनराया रेलो ए ॥प्र०

२. अजितनाथजी का स्तवन ।

रे जीव विमल जिनधर वंदिये ॥ यह देशी ॥

रे जीव अजित जिनेश्वर सेविये ॥ टेक ॥
प्रभु सुख संपद दातार रे जीवा कल्पवृक्ष सम देवजी ।
मन वांछित पूरणहार रे जीवा ॥ अजित० ॥ १ ।
संपद वेलि बढ़ाया पुष्करावर्त जलधार रे जीवा ।
मिथ्या तिमिर मिटावण प्रभु सहस किरण दिनकार रे जीवा ॥अ
कर्म विकट वन काटवा प्रभु सुमिरण शुभ पद मान रे जीवा
संकट गिरिवर ढाया है विद्युत जिम ध्यान रे जीवा ॥अ
धन्वन्तरि सा वैद्य आप तू वैद्य भव व्याधि निवार रे जीवा
निर्यामिक जिम नाथजी भवसागर पार उतार रे जीवा ॥अ
चिंतामणि प्रभु नाम रे जीवा सब चिंता दूर पलाय रे जीवा
गरुड़ शब्द सुन सर्प डरे तिमि पाप समूह नसाय रे जीवा ॥अ
सकल भरम भय शान्त होत सब आरत दूर भगाय रे जीवा
मन वांछित शालता फल दें प्रभु राखे कर्मांकुर रे जीवा ॥अ
जीते शत्रु बधे सिर सेहरा विजयानंद सुखकार रे जीवा ।
कहत अमीऋषि नाथजी मम आवागमन निवार रे जीवा ॥अ

---

३ श्री संभवनाथ प्रभु का स्तवन ।

कपूर होवे अति ऊजलो ॥ ए देशी ॥

संभव जिनवर सांभलो रे सेवक की अरदास ।
तुम जग जीवन भय हरो रे मेटो भव दुःख पास ॥
जिनेश्वर तारो दीन दयाल ॥ टेर ॥ १ ॥

लोका लोक प्रकाशतोरे, केवल ज्ञान दिनेन्द्र।
भव भव तिमिर विनाशतोरे, तीरथनाथ जिनेन्द्र ॥जिने०२॥
ब्रह्मपने जिनरायजीरे, समता संवर खान।
आभ्यंतर गुण शोभतारे, धर्म शुक्ल दोय ध्यान ॥जिने०३॥
पर उपकारी जगत् पतीरे, सकल पदारथ जान।
प्राण वल्लभ प्रभु मेरा रे, साहिब तुम ही सुजान ॥जिने०४॥
आश करूँ प्रभु आपकी रे, और न ध्याऊँ चित्त।
तुमसे मुझ मन रंजियोरे, तुमसे लगी है प्रीत ॥जिने०५॥
तुम विन कौन सेवक तणी रे, सार करे जिनराज।
भय भंजन प्रभु आप होरे, तारो गरीब निवाज ॥जिने०६॥
नृपति जितारथ कुल भूषण रे, सेना रानी नंद।
अमीरिख मन भावतो रे, सम्भव जिन सुखकन्द ॥जिने०७॥

---

४. श्री अभिनन्दनजी का स्तवन।

जमींकन्द मेरे जीव जाइ ऊपनो । यह देशी ॥

श्री अभिनन्दन करुणा कीजिये, दोजी निज सुख सार।
भव भव भमतो रे शरने आयो, भव जल पार उतार ॥श्री०
वार अनन्त रे नरके ऊपनो, पायो दुःख अनन्त।
दीन दयाल सब जानते हो तुम, करिये सब दुख अन्त ॥श्री०
एक मुहूरत मांही भव किया, साढ़े पैंसठ शेष।
छत्तीस अधिक निगोदे जानो, सुख का नहीं कुछ लेश ॥श्री०
स्थावर त्रस तिर्यंच गती में, छेदन भेदन त्रास।
परवश होय सह्यो इन प्राणीन, बन्ध्यों मोहिनी पास ॥श्री०
नरभव जाति हीन कुल पाया, मिथ्यामत चितलाय।
खोटा पक्ष करी भव संचिया, व्यर्थ ही जन्म गमाय ॥श्री०

कप खपाले सुरगति पायो, राख्यो सौख्य विलास।
फुलियो चवम समे चेतन मयो मूक्यो सुर सुखरास ॥श्री०
संवर राय सिद्धार्थ मात का नन्दन सुखदाय।
क्षमी ऋषि कर जोड़ विनवे, तारो श्री जिनराय ॥ श्री०

५. श्री सुमतिनाथ प्रभु का स्तवन।

सुणो चन्दाजी श्रीमंधिर परमातम पास जायजो ॥ यह देशी ॥

श्री सुमति जिनेन्द्र सुमति दायक नायक त्रिभुवन नाथ हो।
प्रभु ज्ञान दिनेन्द्र मिथ्या तिमिर निवारक तारक तात हो तें
मन मोहन करुणा रस भरिया, तुम सुख संपद गुण आदरिया।
सब कर्म भर्म दूरा हरिया ॥ श्री सुमति० ॥१॥
प्रभु त्रिभुवन आनन्द कारक हो, जग जन के तुम उपकारक हो।
तुम समता रस गुण धारक हो ॥ श्री सुमति० ॥२॥
तुम लक्षण अङ्ग विराज रहें, एक सहस्र आठ मन काज रहें।
तुम आगे सुरपति लाज रहें ॥ श्री सुमति० ॥३॥
सुर इन्द्र सकल गुण गावत हैं प्रभु निरख निरख सुख पावत हैं।
धन्य धन्य जो तुमको ध्यावत हैं ॥ श्री सुमति० ॥४॥
प्रभु थारी अनुभव रस राची सब कर्म भर्म दूरे टेली।
चउगति विपदा दूरे मेली ॥ श्री सुमति० ॥५॥
प्रभु सुख अनन्त पाये हैं सब जन्म मरण मिटाये हैं।
मविजन शरणे तुम आये हैं ॥ श्री सुमति० ॥६॥
मेघरथ नृपति सुमङ्गला माता भव भव दीजो संपद साता।
क्षमी ऋषि चरण शरण चाहता ॥ श्री सुमति० ॥७॥

६. श्री पद्मप्रभु का स्तवन।

सद्गुरु चरनारे नमिये ॥ यह देशी ॥

पद्म जिनेश्वर रे, प्यारा प्रभु जगजीवन मोहनगारा।
जग वालेश्वर अन्तर्यामी, पुण्ययोगे तुम सेवा पामी।पद्म०टेर।
तुम ही आत्माराम हमारो, क्षण नहीं विसरूँ नाम तुम्हारो।
जब प्रभु तुमसे मुझ लय लागी, मिथ्यादेव भ्रमणा भागी।प०
मिलने प्रभु को मुझ मन तरसे, जब जगनायक किरपा करशे।
उस दिन मिलेंगे हर्ष भरे, अष्ट कर्म रिपु जब दूर हटे॥प०
तुम शरण विना भव भव भटक्यो,
अब तुम चरन कमल चित्त अटक्यो।
अवर देव सब आशा छांडी, निश्चल प्रीति प्रभु संग मांडी।प०
प्रीत रीत प्रभु जो तुम पारो, मुझ सन्मुख एक वार निहारो।
जो मुझ वांछित काज सुधारो, विसरूँ नहीं उपकार तुम्हारो।प०
द्वादश गुण महा उत्तम छाजे, दोष अठारह रहित विराजे।
रक्तोपल सम देही सोहे, देखकर सुर नर सब मन मोहे।प०
नायक तू ही सिद्धगति को, घायक नाथ कुमति कुगति को।
अधमोद्धार विरुद सुखकारी, जान शरण लिया सुविचारी।प०
श्रीधर भूपति के कुल चन्दा, सुसमाराणी सुत सुख कन्दा।
अमीरिख तुम चरन चल आया, कृपाकरी तारो महाराया।प०

७. श्री सुपार्श्वनाथ का स्तवन।

श्री मुनिसुव्रत साहिब सांभो ॥ यह देशी ॥

स्वामी सुपार्श्व आश मुझ पूरो, आयो शरन हजूरो रे।
ज्ञान दिनेन्द्र हिये प्रकटाओ, मिथ्या तिमिर प्रचूरो रे।स्वामी०

काल अनन्त कर्म वश भमियो, चउगति में दुःख खमिया रे।
पुण्य प्रसाद मनुज भव पायो, मिथ्यामत वश गमियो रे ॥स्वा०
देव अदोषी गुरु निरलोभी, धर्म दया नहीं धार्यो रे।
भ्रम उदय मिथ्यामत खेंची, निजगुण से पर हार्यो रे ॥स्वा०
इस विध काल अनेके बीत्यो अब प्रभुजी मुझ पाया रे।
करुणा भाव सेवक पर आणी, अर्ज सुणो महाराया रे ॥स्वा०
निज गुण संपद मुझको दीजे, कर्म कलंक हरीजे रे।
किंकर ऊपर किरपा करीजे तो सब कारज सीझे रे ॥स्वा०
प्रभु तुम सेवा लागत मीठी सार सुधारस वाणी रे।
रीझ रह्यो तिम सुदिल हमारो, तारो करुणा आणी रे ॥स्वा०
प्रतिष्ठसेन नरेश को नंदन, पृथवी तुम महतारी रे।
कहत अमीरिख शरणे आयो तारो भरम अपधारी रे ॥स्वा०

८. श्री चन्द्रप्रभुजी का स्तवन।

श्री आदीश्वर स्वामी हो, प्रणमूं शिरनामी तुम भणी।
प्रभु अन्तरयामी आप ॥ यह देशी ॥

चंदा प्रभु जिनराया हो, मन भाया साहिब माहरे कोइ
और न आवे दाय।
सूरत मोहनगारी हो बलिहारी तिहारी भावसी कोइ
सुरनर रह्या लुभाय ॥ चं० ॥१॥
चन्द्रपुरी पति शोभे हो, प्रभु चरणे लंछन चन्द्रमा कोइ,
चन्द्र परम मनुहार।
द्रव्य भाव जिम चन्द्रा हो मुख सोहे पूरण चन्द्र सो कोइ,
झलके तेज अपार। चं० ॥२॥

प्रबल ताप जग मांही हो, प्रभु विषय कषाय मिटाववा कांइ,
शीतल अमृत वेन ।
ध्यावे जो शुद्ध भावे हो, नहीं आवे आरत आसनी कांइ,
पावे शिव सुख चेन ॥ चं० ॥३॥
दास अरज अवधारी हो, विचारी विरद जिनेश्वर कांइ,
तारो प्रभु कृपाल ।
वार वार क्या कहिये हो, किम कठिन करो चित्त दाससुं कांइ
करुणावंत दयाल ॥ चं० ॥४॥
जिम तुम होय वड़ाई हो, भलाई कीजे हम थकी कांइ,
महिर करो महाराज ।
नेह नजर निहारो हो, प्रभुपालो पूरन प्रीतड़ी कांइ,
गिरुआ गरीब निवाज ॥ चं० ॥५॥
भक्त सहायक नायक हो, प्रभु घायक कर्म महाबली कांइ,
दायक शिव सुख सार ।
करुणा सागर नागर हो, प्रभु गुण रतनाकर जग गुरु कांइ,
कीजे भव जल पार ॥ चं० ॥६॥
महासेन नृप नन्दा हो, सुख कन्दा लक्ष्मा राणी का कांइ,
मन मोहन गुणवंत ।
अमीरिख ने तारो हो, उबारो दुःख सागर थकी कांइ,
भय भंजन भगवन्त ॥ चं० ॥७॥

९. श्री सुविधिनाथजी का स्तवन ।

देशी—मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी । (लावणी के राग में)

सुविधि जिन समरो नरनारी, मिथ्या देव अनेक जगत में,
जाणो दुःखकारी ॥ टेर ॥

विषय कषाय मोह वश पड़िया शैल चक्र धारी।
रामा संग लीन हो वरते शुद्ध बुद्ध परिहारी ॥ सुविधि०॥३॥
कोई दंड कमंडल धारी, लालच अधिकारी।
मृग छाला माला लेई हाथे, विषय आशधारी ॥ सु० ॥४॥
हस्त कपाल व्याल व्याल गल भूषण, कर वसु भ्रमधारी।
सेवमान छक रहे नशे में राखे संग नारी ॥ सु० ॥५॥
कोई भजा महिष मद माँगे, कोई मदिरा धारी।
राग द्वेष कर्मों वश पड़िया ते किम दे तारी ॥ सु० ॥४॥
सत्तरा गुण धारी उपकारी दोष सकल वारी।
केवल ज्ञान दर्शन से शोभे त्रिभुवन मनुहारी ॥ सु० ॥५॥
नहीं कोई तारक तुम सम जग में, हम निश्चय धारी।
चरम शरण जिनराज आपको, कीमो सुविधारी ॥ सु० ॥६॥
श्री सुग्रीव नृपति कुल चम्दा रामा महितारी।
अमीरिख कहे नाथ निरंजन कर भव जल पारी ॥ सु० ॥७॥

——×——

१० श्री शीतलनाथजी का स्तवन।

मानव जन्म जन्म रत क्यों पच्यो रे, सतगुरु समझायो ॥ यह देशी ॥

प्यारा लागो प्यारा लागो शीतल जिन देवा रे।
चाहुँ चरन की सेवा, नित वंदू ॥ टेर ॥
परमातम पूरन सुखकारी, प्रभु पूरन पर उपकारी रे।
भव्य जन समझाया सत्य मर्म मिटाया शीवपुर पहुँचाया ॥ प्या०
शीतल वचन महा सुखदाई धारे भवि प्रानी चित्त मांई रे।
भव ताप मिटावे, उपशम चित्त पावे, शिव पंथ बतावे ॥ प्या०

आश्रव मेल निवारण वानी, जिम निर्मल गंगा पानी रे।
मिथ्या तिमिर विनाशे, जिमभानु उजाशे, जिन धर्म प्रकाशे॥प्या०
श्री जिन वचन धारी नरनारी, लीनी मोक्षपुरी सुखकारी रे।
भव दुःख मिटाया, सब कर्म खपाया, अविचल सुख पाया॥प्या०
कयी अपराधी मुगत पहुँचाया, इम सुन मुझ चित्त ललचायारे।
भ्रमणा सब तोड़ी, तुमसे चित्त जोड़ी, प्रणमूँ कर जोड़ी॥प्या०
लागी बहुत तुमसे मुझ आशा, प्रभु हवे नहीं कीजे निराशारे।
सेवक निज जाणी, करुणा चित्त आणी, तारो गुणखानी॥प्या०
दृढ़रथ राय नंदादेवी नंदा, अमीऋषि कहे सुख कन्दारे।
विनती चित्त लाओ, निज भुवन बताओ, मुझे यही उमावो॥प्या०

—×—

११. श्री श्रेयांसनाथजी का स्तवन।

बंधव बोल मानो हो॥ यह देशी॥

श्री श्रेयांस जिनेश्वर, सुख संपद दाता हो, आनंदकारी नाथजी।
मुझ चित्त को सुहाता हो, जिनेश्वर अरज सुनोजी हो॥१॥
मुझ मन मोह्यो आपसुं, नहीं और सुहावे हो।
चिंतामणी तज कांच को, कौन मूरख चाहे हो॥ जिने०॥२॥
समय समय पर मुझे सांभरो, आप प्रभु अनुरागे हो।
इस जग में कोई नही ऐसा, जिनसे मन लागे हो॥ जिने०॥३॥
अमृत रस के स्वाद को, पीए सो ही जाने हो।
इम प्रभु से मुझ प्रीत को, नहीं कोई पिछाने हो॥ जिने०॥४॥
पूरन प्रीति आपसे, नहीं छूटे छुड़ाये हो।
शरने आयो आपके, प्रभु लीजे निभाई हो॥ जिने०॥५॥

अधम उद्धारक मैं सुण्यो, प्रभु बिरद तुम्हारो हो।
दास चरण अवधार के, कीजे भव पारो हो ॥ जिने० ॥६॥
विष्णु पिता विष्णु मात के नंदन सुखदायी हो।
कहता अमीरिख मायजी, होज्यो मुझ सहायी हो ॥ जिने० ॥७॥

१२. श्री वासुपूज्यजी का स्तवन।

गया निकल सुबह का तारा मुझे छोड़ चला बनजारा। यह देशी।

श्री वासुपूज्य अविकारी प्रभु पूरो आश हमारी ॥ टेर ॥
प्रभु काल अनन्तो भमियो कर्मवश जगत भमियोजी।
मैं सहा कष्ट अतिभारी ॥ प्रभु० ॥१॥
अब देव चवोपी आता, मैं तारण तरण पछियान्याजी।
आ शरन ग्रहो सुविचारी ॥ प्रभु० ॥२॥
अति करणी बिन कठोर तो भी तुम साये जोरजी।
नहीं कोई शरण तुम्हारी ॥ प्रभु० ॥३॥
सब अवगुण माफ करीजो मुझ आश तुम्हा हरीजोजी।
नहीं भूलूं तुम उपकारी ॥ प्रभु० ॥४॥
प्रभु मांगू जिम तिम आगे तो पात सभी नहीं लागेजी।
कुदेव दिया मैं विसारी ॥ प्रभु० ॥५॥
एक शम रस का प्यासा नहीं और कछु मुझ आशाजी।
करो पूरन मेह विचारी ॥ प्रभु० ॥६॥
वासुपूज्य जया के नन्दा अमीरिख तुम्हारा बंदाजी।
तुम चरण कमल बलिहारी ॥ प्रभु० ॥७॥

१३. श्री विमलनाथजी का स्तवन।

अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ यह देशी ॥

विमल जिनेश्वर साहिब सेविये, निर्मल ज्ञान विचारोजी।
विषय कषाय मिथ्यात्व निवारजो, धारे निज गुण सारोजी।वि०
सेवक निशदिन तुमसे विनवे, अवधारो अरिहन्तोजी।
तुम सम नहीं उपकारी, भय भंजन भगवन्तोजी ॥वि०
दीन अनाथ न मेरे सरीखा, तुम सम नहीं सुखकारीजी।
शरने आयो साहिब आपके, तारो दास विचारीजी ॥वि०
एक एक से अधिक जगत् में, कयी प्रभु दासोजी।
तो भी अन्तर मुझ सुमति करो, सरखी सहुने आशाजी ॥वि०
एक विसारो रे तारो एक को, जुगतो (उचित) नहीं तुम एहजी।
गिरुवा ठाकर चाकर ऊपरे, रखे सरीखो स्नेहजी ॥वि०
कर्म खपायारे जो मुझ तारशो, तो कैसो उपकारोजी।
सुख के समयेरे सज्जन हैं घने, दुःख में कोई विचारोजी ॥वि०
श्यामा माँय राय कृतवर्म को, नन्दन तुम जिनराजोजी।
कहत अमीरिख निभाओ प्रभु, बांह ग्रहे की लाजोजी।' वि०

---

१४. श्री अनंतनाथजी का स्तवन।

प्रह ऊठीने सुमरीजे हो भविजन, मंगलिक शरणा चार ॥ यह देशी ॥

अनन्त जिनेश्वर साहिबा हो प्रभुजी, अनन्त ज्ञान भंडार।
कर्म भर्म सब मेट दिया हो प्रभुजी, पाम्या शिव सुखसार॥
जिनवर सांभलो हो प्रभुजी, भवजल पार उतार ॥१॥
दर्शन ज्ञानावरण टल्या हो प्रभुजी, केवल दर्शन ज्ञान।
वेदनी कर्म निवार ने हो प्रभुजी, निराबाध सुखमान ॥ जिन०

क्षायक समकित पामिया हो प्रभुजी, मोहनी कर्म निवार।
आयु कर्म हटाय के हो प्रभुजी, अटल अवगाहन धार ॥ जिन०
नामकर्म को क्षय करी हो प्रभुजी अमूर्तिक पद पाय।
गोत्र गये प्रकट भयो हो प्रभुजी, अगुरु लघु पर्याय ॥ जिन०
अन्त करी अन्तराय को हो प्रभुजी शक्ति लही अनन्त।
इम आतमगुण धारिया हो प्रभुजी कीनो सब दुःख अंत ॥ जिन०
अजरामर अविकारिया हो प्रभुजी अक्षय अचल जिनेश।
आवागमन मिटाय के हो प्रभुजी दीजे अविचल देश ॥ जिन
सिंहसेन कुल चन्द्रमा हो प्रभुजी, सुयशा अंगजात।
धर्मऋषि की विनती हो प्रभुजी धारो श्री जगनाथ ॥ जिन०

---

१५. श्री धर्मनाथजी का स्तवन।

कुन्थु जिनराज तू ऐसा ॥ यह देशी ॥ (रखता राग में)

धरम जिनराज मज भाई सदा सुख साथ चित्त लाई।
सब मन वांछित फल पावे विघ्न सब दूर हट जावे ॥ धरम०
चतुर्गति मांही मैं भटक्यो, कर्मों ने निगोद में पटक्यो।
सह दुःख के मैं भया कायर पास तुम्हारे चल के आया ॥ धरम०
भ्रम से आतम गुण गैवाया, मैरा दिल पुद्गल से माया।
पापपङ्क लख्यियो जग मांई, कष्ट सह्यो मैं अधिकाई ॥ धरम०
प्रभु दर्शन का मैं प्यासा यही दिल में लगी आशा।
सुनो यह विनती मेरी, शरन चित्त चाहता है तेरी ॥ धरम०
कठिन दिल जो करो ऐसे, करो करुणा निधि कैसे !
प्रभु क्या बार बार कहिये, पतित की बांह दृढ़ गहिये ॥ धरम०

अरज की मरज दिल आणो, प्रभु अब बहुत मत ताणो ।
फिर है मुश्किल यह मेला, विचारो क्यों न अलबेला ॥धरम०
भानु नृप सुव्रता नंदा, नाथ सर्वज्ञ सुखकंदा ।
अमीरिख अर्ज दिल धारो, वेग ससार से तारो ॥धरम०

१६. श्री शान्तिनाथजी का स्तवन ।

आयो आदीश्वर आपके वर्षिको पारणो ॥ यह देशी ॥

गाओ शांति जिनेन्द सदा चित्त हित धरी,
दिन दिन संपद पूर विपद जावे टरी ।
संकट विकट विनाश, ऋद्धि वृद्धि करे,
करम भस्म दुःख शोक अरति दूर हरो ॥१॥
विश्वसेन कुल चन्द अमन्द गुण भर्या,
अचिरा देवी माय उदर आप अवतर्या ।
गरमे रही जिणे मृगी रोग मिटावियो,
साता कारक शांति नाम नस ठावियो ॥२॥
शांति जिनेश्वर नाम आनद आराम है,
अरिकरि हरिभय जाय, रहे सुख धाम है ।
ताव तिजारी रोग व्याधि सब उपशमे,
वैरी दुर्जन दुष्ट आवी चरने नमे ॥३॥
सज्जन जन संयोग वियोग दुर्जन तणो,
पृथ्वीपति सनमान, देवे तस अति घणो ।
डंकनी शंकनी भूत भोटिंग दूरे हटे,
बध बंधन ठग चोर, जहर सघला मिटे ॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीं शुद्ध बीज शांति शाति करे,
दुष्ट दमन स्वाहाः मंत्र भविक हिरदे धरे ।

जो ध्यावे गुरु भाव, टले सब आपदा
इह भव आनन्द पूर लहे शिव सपदा ॥१॥
शांति समा जग मांय देव दूजो नहीं,
तारक भव जल आप कियो निश्चय सही।
महिर करी महाराज हरो भव पासमैं
जन्म मरण दुःख मेट, दीओ शिवबास मे ॥२॥
अधमोद्धारण बिरद सुनके समाधियो,
तजिया सर्व कुदेव तूही मन भावियो।
अमृतरिख नित मेव चहे तुम सेवजी
यो निज गुण शिवपद्म, सदा जिन देवजी ॥३॥

१७ श्री कुंथुनाथजी का स्तवन।

विंदु पंखिया राणी गुणवन्ती तारजो ॥ यह देशी ॥

नमो जिनवरजी कुंथु जिनन्द दयालजी।
करुणा रस का सागर त्रिभुवन का धणी रे लो ॥ नमो० ॥
सतगुरु के उपकार जो
पुण्य पसाये पायो सेवा तुम तणी रे लो ॥ नु० ॥१
चीर न आवे दाय जो
हरिहर ब्रह्म पुरंदर जग शोभा अति रे लो ॥ नु० ॥
लाग्यो तुम सु नेह जो
गुणमणी रयण करंड सदा वरती रति रे ला ॥ नु० ॥२
पूरव पाप पसाय जो
दुःखमी आरे वसिया भरत में ऊपनोरे लो ॥ नु० ॥
आर्णी दीन अनाथ जो
भ्रम मिटावी दर्शन दो निज रूपनोरे लो ॥ नु० ॥३

ताणी वाद विवाद जो,

मिथ्यामत पाखंडी मुझ मन भोलव्योरे लो ॥ सु० ॥

छुड़ाया निज धर्म जो,

पुद्गल मांहि रचावी भव भव रोलव्योरे लो ॥ सु० ॥४

आगम के अनुसार जो,

किंचित शैली जाणी मै तुम धर्मकीरे लो ॥ सु० ॥

साचा तुमही देवजो,

करुणा धारी वारी टाटी कर्मकीरे लो ॥ सु० ॥५

खमजो मुझ अपराधजो,

अधमोद्धारक विरुद तुम्हारो जगपतिरे लो ॥ सु० ॥

तुम सम तारक नांय जो,

उस कारण जगनाथ करूँ नित विनतीरे लो ॥ सु० ॥६

सूर नृपति कुलचन्दजो,

श्री देवी सुत सुरनर जग मन भावियोरे लो ॥ सु० ॥

अमीरिख अरदास जो,

धारो पार उतारो शरणे आवियोरे लो ॥ सु० ॥७

---
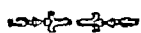
१८. श्री अरहनाथजी का स्तवन।

हीर रंजाकी, चम्पा देवादी निजरारो मेलो म्हारी वेंनरो । यह देशी।

श्री अरह जिनेश्वर, सेवा सुखकारी पूरन प्रीतसुं ॥ टेर ॥

कर्म हणी केवल लियो सरे, थाप्या तीरथ चार ।

स्वयमेव प्रति बोधिया सरे, पुरुषोत्तम गुणधार,

पुरिषसिंह पुंडरीक वर पंकज, गंध हस्ति सुविचार हो ॥श्री०

लोकोत्तम स्वामी हित कारक दीप रवि जिम जान।
अभय चक्षु मारग का दाता, दायक शरण सुजाण।
जीतव बोध धर्म उपदेशी नायक तुम गुण खाण हो॥ श्री
धरम चलावन सारथी रे, धर्म चक्री जिनराय।
भव सागर में द्वीप सरिखा, शरणो लियो सहाय।
अनन्त ज्ञान दर्श स्थिर पाया सर्व भाव दरशाय हो॥ श्री
जिणाणं जावयाणमी वैरी जीत जिताय।
तिरे तिरावे समझे समझावे मुक्त होय मुकाय।
पूरण ज्ञान दर्श शिव निश्चल, रोग रहित कहेवाय हो॥ श्री
अनन्त अक्षय पद बाधा नहीं, ऊपजे नहीं संसार।
सिद्ध गति शुभ नाम शाश्वतो, स्थानक महा सुखकार।
कर्म खपाय गया शिव मंदिर, पाया पद अधिकार हो॥ श्री
निर्विकल्प निष्कलंक निरंजन अलख अखंड अरूप।
अष्ट गुणोत्तम धारक स्वामी, चिदानन्द चिद्रूप।
अजर अमर अविनाशी वासी शिवनगरी का भूप हो॥ श्री
पिता सुदर्शन देवी माता, जगन्नाथ सुखकार।
निराधार आधार नाथजी शरण लियो सुविचार।
धर्मीरत्न कहै कृपा करीने, कीजे भवजल पार हो॥ श्री

श्री मल्लिनाथजी का स्तवन।

गाफल मत रहे रे। यह देशी॥

जपो जिनवर रे, मेरी जान, जपो जिनवर रे।
जिनेश्वर जपिये हितकारी मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी। जपो जि
मिथिला नगरी मनोहारी, नृप कुंभ महा गुणधारी,
परभावती उर अवतारी।
पूर्व भव माया परभावे, जिनेश्वर प्रथम वेद पावे॥ जपो० १॥

प्रभु महिमा जग में भारी, पूरव भव प्रीत विचारी,
व्याहन छऊ नृप हितकारी।
चतुर्विध सेना सज सघरी, आप घेरी मिथिला नगरी ॥ ज०
कुम्भराय सोचे मन मांही, प्रभु तब फरमावे आई,
छऊ नृप देसुं समझाई।
कराये मोहन घर तैयारी, रची पुतली निज अनुहारी ॥ ज०
एक ऊपर ढंक रखावे, माहि भोजन सरस भरावे,
कयी दिन अन्तर बीतावे।
मोहन घर भूपति बुलवाये, उमंग दिल धरके छऊ आये ॥ज०
रूप लखि पुतली को अनूप, देख चकित भये सब भूप,
पड़े विषय मोह अन्ध कूप।
उघार्यो पुतली ढकताई, दुरगंध फैली अधिकाई ॥ ज०
तब भूपति मन घबरावे, उपदेश प्रभु फरमावे,
तन धन अस्थिर बतलावे।
छिनक में देह विनश जावे, मोह वश मूरख ललचावे ॥ ज०
सुन भूपति मोह निवारे, सबहि मिल संयम तप धारे,
लई केवल मोक्ष सिधारे।
अमीरिख चरन शरन चाहता, मोय देना अचल सुखशाता ॥ज०

२०. श्री मुनिसुव्रतजी का स्तवन।
(राग-महाड़)

तुम धन धन तुम धन धन शांति जिनेश्वर स्वामी ॥ यह देशी ॥

श्री मुनिसुव्रत देव चरन चित्त लाओ तो सही।
एक शुद्ध मन ध्यान लगाय, परभव पाओ तो सही ॥ टेर ॥
अधमोद्धार देव प्रभु ने मनाओ तो सही।
दुःख विपत विडारन नाम, निरंजन ध्याओ तो सही ॥ श्री०

श्री जिन वचन आराध सदा सुख पाओ तो सही।
शुभ दर्शन ज्ञान चारित्र हिये तप ठाओ तो सही ॥ श्री
अद्भुत पूरण ज्ञान ज्योत प्रकटाओ तो सही।
ये राग द्वेष तम मर्म अनादि हटाओ तो सही ॥ श्री
मिथ्या कुमत छोड़ मुक्ति पथ आओ तो सही।
ये विषय विकार निवार, पार भव पाओ तो सही ॥ श्री
काम क्रोध मद लोभ कपट भ्रम छोड़ो तो सही।
एक निज गुण तत्त्व पिछान, परम लय लाओ तो सही ॥ श्री
घाए कर्म दल जीत निशान फिराओ तो सही।
सब जनम मरण दुख मेट, अचल गति आओ तो सही ॥ श्री
अगम अगोचर रूप निरंजन ध्याओ तो सही।
शिव नाम अमीरिख ध्याय अमर पद पाओ तो सही ॥ श्री

---

२१ श्री नमिनाथजी का स्तवन।

(राग-प्रभात)

जागे भावी अभागी निंद क्या दृग खोले तो सही ॥ यह टेर
प्रातः समय शुभ गाओ भविजन नमि जिनन्द हितकारी
आरती विपत विघ्न भय नासे पावै संपदा भारी ॥ प्रात
घन घाती कर्म दूर करी ने केवल भानु प्रकाशी।
चार अघातिक मेट विराजे, शिव मन्दिर अविकारी ॥ प्रात
जग तारक पदवी तुम पाये कयी तारे नरनारी।
इस पद किंकर पर करुणा कर, तारो मर्ज अपयारी ॥ प्रात
भूखा भोजन जल प्यासे को, पंथी धाम विचारी।
जहाज समुन्दर साथ दुखी को औषध राम आधारी ॥ प्रातः
रोगी को औषध आधारी, बालक को महतारी।
तिम आधार तुम्हारो जिनजी, करुणा निधि उपकारी ॥ प्रात॰

ाश निराश करे नहीं दाता, मंगन आये द्वारी ।
ेवक जाण कृपाल प्रभुजी, पूरो आश हमारी ॥ प्रात:०
वेजयसेन नृप विप्रा नन्दन, वन्दन वार हजारी ।
कहत अमीरिख देव निरंजन, कीजे भव जल पारी ॥ प्रात:०

२२. श्री अरिष्ठनेम प्रभुजी का स्तवन ।

मेरी मेरी करतां जनम गया रे । यह देशी ॥

श्री जिन नेम परम उपकारी, तारन तिरन सुख का दातारी ।टेर।
समुद्र विजय शिवादेवी के नंदा जादवकुल सुखदायी जिनंदा.
कृष्ण प्रिया मिल व्याह मनाया, उग्रसेन व्याहन घर आया ।श्री०
हरि हलधर महोत्सव अति कीना छप्पन क्रोड़ जादव संग लीना;
पशु पुकार दया चित्त लाया, तोरन से रथ फेर सिधाया ।श्री०
नव भव राजुल नेह निवार्यो, सहस्रावन जाई संजम धार्यो ।
होय अयोगी मुगत पद पाया, सेवक तुम पद शरन लुभाया ।श्री०
ज्यों जलधर जल बूंद न देवें, तो भी चातक और न सेवे ।
जो शशी चित्त स्नेह न लावें, तोहि चकोर और नहीं ध्यावें ।श्री०
मालति जो मन स्नेह न जोड़े, तो भी भ्रमर संग नहीं छोड़े ।
जो तरुवर पंखी नहीं तेड़े, तो पण विहंग भमे तस केड़े ।श्री०
देव निरागी जो राग न लावे, तो भी सेवक और न चहावे ।
किंकर जान तारो जग देवा, तो मैं जानूं सफल भयी सेवा ।श्री०
मुझ सम अनेक करे तुम आशा कृपा करी दीजे सबको दिलाशा ।
अमीरिख प्रभु दास तुम्हारो, कृपा करी भव भ्रमण निवारो ।श्री०

२३ श्री पार्श्वनाथजी का स्तवन ।

पीतमजी कहेवि सुण गुणावली ॥ यह देशी ॥

पार्श्व जिनेश्वर साहिब चित्त वसो, और न आवे दाय ।जि
अहोनिश ध्यान तुमहारो ध्यावता, आरति सब टल जाय ।जि
मोर का ध्यान लगा घन घोरसुँ, मरुघी इक चित्त ढोर ।जि
चकवी भानु मधुकर मालती, चाहे चन्द्र चकोर ।जि०।पा
हंस सरोवर कोकिल आम्र को, दीपक ध्यान पतंग ।जि
हस्ती सुमरे कजली वन को सफरी मन जल गंग ।जि०
सतवती चाहे जिम कंथ ने, पनिहारी घट चित्त ।जि
बालक के मन जिम जननी बसे, तिम मुझ मन्नु ले प्रीत ।जि०
रात दिवस नित सुरता आपरी दिल से दूर न होय ।जि
अन्तरजामी स्वामी हमारो तुम सम और न कोय ।जि०
भव भव भटकत शरणे आयो सुखकारी जिनदेव ।जि
सेवक जाणी किरपा राखजो दीजो अविचल सेव ।जि०
अश्वसेन नृप वामानंद को अर्ज करूँ कर जोड़ ।जि
कहत अमीरिख देव दया करी कर्म बंधन से छोड़ ।जि०

---

२४ श्री महावीर स्वामी का स्तवन ।

आज म्हारा सेमव जिनजी का,

हित चित से गुण गास्यां राज ॥ यह देशी ॥

आज हम महावीर जिनन्द के, चरन कमल चित्त धरस्यां
मन वच काय लगाय भजन से आत्मा निर्मल करस्यां राज।आ
समकित ज्ञान चारित तप से शिवपुर पथ आचरस्यां
श्री जिन आज्ञा चढ़ी शिर ऊपर, निर्भय होय विचरस्यां राज।आ
कंदर्प क्रोध लोभ मद माया सब ही पाप परहरस्यां

राग द्वेष दोय बंधन तोड़ी, कर्मरिपु दूर करस्यां राज ।आ०
सद्गुरु सेवा सूत्र की श्रद्धा, भाव उलट आदरस्यां ।
पुद्गल भर्म संग तज दूरे, आतमगुण अनुसरस्यां राज ।आ०
अविनाशी अविकार निरञ्जन, रसना तुम गुण वरस्यां ।
धर्म शुक्ल शुभ ध्यान आराधी, करणी कर भव तिरस्यां राज ।आ०
अधमोद्धारन विरुद प्रभु को, दृढ़ विश्वास पकरस्यां ।
अष्टकर्म दल दूर हटावी, मुगत पंथ पग भरस्यां राज ।आ०
सिद्धारथ नृप त्रिसला सुत ने, प्रतिश्वास सुमरस्यां ।
अमीरिख श्रीजिन भक्ति करीने भव जल पार ऊतरस्यां राज। आ०
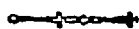
चौवीस जिन स्तवन ।

* कलश *

हरिगीत छन्द ।

चौवीस जिनवर कल्पतरुवर, ध्यान महा सुखकार है ।
लहे संपद विपद नाशे, होय भव जल पार है ॥
इम जाने जग गुरुदेव कीर्ति, स्तवो शुद्ध भावे भवि ।
उगनीस बावन मास कार्तिक, कृष्ण पक्ष दसवीं रवि ॥१॥
न्यूनाधिक जो वर्ण जाणो, कृपा करी सुधारजो ।
ज्ञान समकित दया संवर, शियल तप चित्त धारजो ॥
उपकार श्रीगुरु सुखारिखजी, भावसूं स्तवना करी ।
कहे अमीरिख सुने गावे, सो लहे अविचल सिरी ॥
नित लहे भविजन हिरी सिरी ॥२॥

प्रवर पण्डित कवीश्वर श्री, अमीऋषिजी महाराज रचित
चतुर्विंशति जिन स्तवन प्रथम समाप्त ।

ॐ शांति ! ॐ शांति !! ॐ शांति !!!

श्री चतुर्विंशति-जिनस्तवन

(दूसरी चौबीसी)

---

१ श्री आदीश्वर जिन स्तवन ।

धर्मजिन्द मेरे चीत आइ वसमे ॥ यह देशी ॥

वंदूं आदि जिनेश्वर आप से जीवन प्राण आधार
भव भव भमतां रे साहिब पामियो, श्री गुरु के उपकार ॥ वंदूं०
नाभि नरेश्वर कुल कमलाकरा मरुदेवी अंगजात ।
अन्तर्यामी रे स्वामी माहरा तीन भुवन का भी तात ॥ वं०
मोहनगारा रे प्यारा आपजी बसिया मुझ चित्त मांय ।
और न चाहूँजी ध्याऊं आपको, निशदिन ध्यान लगाय ॥ वं०
तुम बिन तारक जग में को नहीं जो आऊँ तिण पास ।
कल्पतरूजी रे बाउल वृक्ष से किम पहुँचे मन आस ॥ वं०
जिन गुण धारी रे धारी कर्म ने लीधा सुख अनंत ।
आप शुद्धातम परमातम विभु, भव भंजन भगवन्त ॥ वं०
तस भट शिवसुख प्रभु मुझ दीजिये, तो मुझ वांछित थाय ।
ज्यों हस्तिना रे भोजन कण से, कीड़ी उदर भराय ॥ वं०
महिमा सागर करुणा रस भर्या दया करो जिनदेव ।
अमीरिख अर्ज है मन में धारी, दीजे अविचल सेव ॥ वं०

२. अजितनाथजी का स्तवन ।

पीक की देशी ।

अजित जिनेश्वर जगपति, समरूं नित निर्मल मति ।
तिन भवन महिमा अति, वालेश्वर मुझ चढ़ती रति ॥
प्रभु हित करना शिवदायक नायक परम कृपाल छो ।
भ्रम तम हरना, दुर्गति वारक तारक दीन दयाल छो ॥१॥
जिनराज अनंत गुण का दरिया, मुझ आतम में अवगुण भरिया ।
तुम कर्म कपट दूरे करिया, मुझ कर्म अरि आड़ा फिरिया ।प्र०
प्रभु राग दशा से तुम न्यारा, मैं राग भाव उर में धारा ।
तुम द्वेष रहित निर्मल प्यारा, मन मेला द्वेष करी म्हारा ।प्र०
प्रभु कलंक रहित जिन गुण लीनो हुं कलंक सहित परगुण भीनो ।
तुम भाव निराशी पद चीनो, मुझ आशा चित्त लुब्ध कीनो ।प्र०
तुम जन्म मरण अरति वामी, मैं भव भ्रमणा विपदा पामी ।
प्रभु निश्चल चल मै स्वामी, मैं कामाक्लित तुम निष्कामी ।प्र०
तुम गुण से मै प्रतिकुल पाया, तुम ज्ञान महिं सब दर्शाया ।
प्रभु तारक जान शरन आया, सब अवगुण माफ करो राया ।प्र०
जितशत्रु विजयासुत रसिया, सब कर्म विगत मल वो घसियो ।
कहे अमी ऋषि शिवसुख तसिया, प्रभु रोम २ मुझ मन वसिया ।प्र०

---

३. श्री संभवनाथ प्रभु का स्तवन ।

पौष दसों हि दिन आनन्दकारी ॥ ए देशी ॥

संभव जिनवर अति सुखदाई, रोम रोम वसिया चित्त मांई ।टेर
अन्य कु देव सेवं नहीं चाहूं, तारन तरन मिले मुझताई ।
निशदिन ध्यान निरंतर ध्याना, अरति विपद सकल टलजाई ।सं०

मेघ मयूर अरु चन्द्र चकोरा चकवी भान ध्यान मन लाई ।
हंस सरोवर भ्रमर मालती, पिक इक मजरी चित्त धराई ।सं
दीप पतंग गंग सफरी जिम हस्ति कजलीवन जिम भाई ।
मदबूत चित्त शिशु जननी ज्यों, सती भर्तार प्यार अधिकाई ।सं
पनिहारी जिम कुंभ न भूले, योगी समाधि लगाई ।
तिम वाल्लेश्वर नाम तुम्हारो अहोनिश चित्त रहो मुझ थाई ।सं
जो शुभ नजर दयाल आपकी, और लगी परवा मुझ नाहीं ।
कल्पतरु निज आंगन फलियो, तो कहो आक सेवे कौन जाई ।सं
दास अर्ज पर नजर कीजिये तो मैं सेवा सफल मरपाई ।
करुणा सागर शरन मह्यो की, देव दया कर दीजे निमाई ।
राय जितारथ सेन्यारायी नंदन नंदन हो जो सदाई ।
दास समीरिक अर्ज करत है महिर करी मुझ होओ सहाई ।

---

४ श्री अभिनन्दन प्रभु का स्तवन ।

सोवन सिंहासन रेसी ॥ यह देशी ॥

श्री अभिनंदन साहिबा त्रिपद निकदन देवजी ।
त्रिभुवन जन मन रंजना भंजन भय भयदेवजी ॥श्री अभि
सब गमे सूपों मिले पावे नहीं मुझ मनजी ।
मिलिया प्रभु मन भावता सफल मानूँ धन्य दिनजी ॥श्री०
महेर करो महाराजजी, मुझको करो निज दासजी ।
निशदिन मुझ मन आपकी लागी निरंतर आशजी ॥श्री०
मेह मजर नर निरखता मानूँ चढी मुझे रिद्धिजी ।
भाव धरी तुम सेवतां, होवे मनोरथ सिद्धिजी ॥श्री०
चित्त लग्यो आप नामसुं चुबक लोह समानजी ।
आश्रित थई तुम पद तणो, भाव सहित धरूँ ध्यानजी ॥श्री

दीनदयाल दया करी, दीजिये वंछित दानजी।
तारिये भव सागर थकी, भय भंजन भगवानजी ।श्री०॥६
संवर नृप कुल शोभना, सिद्धार्था मात नंदजी।
अमीरिख द्विकर जोड़ के, वंदन पद अरविन्दजी ॥श्री०॥७

५. श्री सुमतिनाथजी का स्तवन।

पिय पखियां ॥ यह देशी ॥

सुण जगनायकजी सुमति जिनेन्द्र कृपाल जो।
सुमति दायक नायक, कुमति निकन्दनार लो॥ सुण० ॥
करुणा रस भंडारजो,
भव जल तारक वारक भय जग द्वंद नारे लो ॥ सुण० ॥१
अविचल तुम सनेहजी,
देव सदोषी और नहीं मुझ मन गमेरे लो॥ सुण० ॥
चाहत हंस समुद्र जो,
जैसे चंद्र चकार और दित नहीं जमेरे लो॥ सुण० ॥२
ध्यान धरूं निश दिन जो,
सेवक ऊपर करुणा क्यों नहीं आणतारे लो ॥ सुण० ॥
भूल होये मुझ मांय जो,
कृपा करी दरशाओ तुम सब जानतारे लो ॥ सुण० ॥३
मैं बालक अनजान जो,
विना तात शिखवे कौन कुल की रीतनेरे लो ॥ सुण० ॥
दया धरी दिल मांय जो,
समझाओ तप संयम गुण समकितनेरे लो ॥ सुण० ॥४
निपट निरागी देव जो,
बालेश्वर गुण गाते मन रीझे नहींरे लो ॥ सुण० ॥

तत्त्वा तत्त्व सुवोध से, जाने पंथ कुपथ लालरे ।
सूखे कादव पापनो, होवे भव दु:ख अन्त लालरे ॥ प० ॥६
श्रीधर नृप कुल दीपता, सुसमा राणी नन्द लाल रे ।
कहत अमीऋषि ध्यावता, टाले भव दुःख फन्द लालरे ॥प०॥७
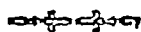
७. श्री सुपार्श्वनाथजी का स्तवन ।

मन हरणी प्रेमला पाणी ॥ यह देशी ॥

देव सुपास सेव सुखकारी, चाहत है चित्त मेरा ।
मन वच काय अनुदिन स्वामी, मै चरन का चेरा;
सुण जिनवरजी, सेवक करे इम अरजी ॥ सुण० ॥ १
तू हीज आतमराम सलूना, समरूँ नाही अनेरा ।
जब मुझको शुभ नजरे निहारो, वह दिन होय भलेरा ॥ सु०
भला बुरा अवगुन से भरिया, तो भी दास तुम्हारा ।
जग तारक प्रभुजी मुझ मिलिया, फलिया वंछित सारा ॥सु०
वार वार बलिहारी तिहारी, दर्शन दो जिनराय ।
तुम सम और नहीं जग मांही, तो कहां जाचूँ जाय ॥ सु०
प्रभुता धारी नाथ निरंजन, मुझ सेवा चित्त दीजे ।
दान तणो अवसर पाकर के, ढील हवे किम कीजे ॥ सु०
काल अनंतानंत भटकता, अब मैं अवसर पायो ।
अधम उद्धारक तारक जानी, तुम शरने चल आयो ॥ सु०
प्रतिष्ठसेन नरेश्वर नन्दन, प्रथवी सुत सुखदाई ।
अमीरिख अरदास सुनकर, होजो नाथ सहाई ॥ सु०

८. श्री चन्द्रप्रभुजी का स्तवन ।

आठ कूवा नव बावड़ी पनिहारी रे ॥ यह देशी ॥

कर जोड़ी अरजी करूँ शिववासीजी अभिरामीजी ।
निशदिन ध्यान लगाय, साहिबजी पतित पावन तुम नाम है । शि०
अरज सुणो महाराय । साहिबजी० ॥१॥
चन्द्रपुरी पति आप हो । शि० । चरणे लक्षण चन्द ॥सा०।
चन्द्र वर्णे महागुण भर्यो । शि० । निर्मल रूप अमन्द ॥सा०॥२
आनन शारद चन्द सो । शि० । चन्द्र ज्यूं शीतल वेण ॥सा०।
भव दावानल उपशमे । शि० । पावे शिव सुख चेन ॥सा०॥३
लगा चित्त एक आपसे । शि० । औरन चाहूँ चित्त ॥सा०।
अवर देव जग में घणा । शि० । नहीं मुझ मन प्रतीत । सा०॥४
मत विसारो दास मैं । शि० । राखो चरण हजूर ॥सा०।
उत्तम की यही रीत है । शि० । मेटो कर्म अंकूर ॥सा०॥५
तुम समरथ भव भयहर । शि० । दायक सुगत निवास ॥सा०।
मित्र सम वंछित आपवा । शि० । समर्थ आप सुजाण ॥सा०॥६
महासेन कुल शेखरा । शि० । लखमा अंगज देव ॥सा०।
अमीऋषि इम विनवे । शि० । चाहूँ भव भव सेव ॥सा०॥७

---

९. श्री सुविधिनाथजी का स्तवन ।

कपूर हुवे अति ऊजलो ॥ यह देशी ॥

सुविधि जिनेश्वर वंदिये जी भविक सुख दातार ।
नाम दिवाकर सोहतोजी संशय तम हरतार,
सोभागी साहिब परम पवित्र ॥१॥

सुरतरु सम प्रभु पामियोजी, और न आवे दाय।
गंगा तज छीलर तणोजी, कुण जल पीवा जाय। सोभागी०।२
अलख निरंजन साहिबाजी, भय भंजन जग देव।
सुन नर मुनिवर भावसुंजी, सेव करे नित्यमेव॥ सो०॥३
अष्ट कर्म दल जीतनेजी, लीनो अविचल वास।
पूरण पुन्ये पामियोजी, सफल भयी मुझ आशा॥ सो०॥४
कजली वन रेवानदीजी, गज राखे मन मांय।
तिम तुम गुण नित चित्त वसेजी, क्षण भर नहीं विसराय॥सो०
अपनायत जानी करीजी, करिये नाहीं निराश।
मै मन इम निश्चय कियोजी, भव भव तुमरो दास॥ सो०॥६
सुग्रीव भूपत कुल दीपोजी, रामा अंगज सार।
नित्य अमीरिख भावसुंजी, प्रणमे वार हजार॥ सो०॥७

---

१०. श्री शीतलनाथजी का स्तवन।

आओ हरि रास रमो व्हाला॥ गरबा की देशी॥

शीतल जिनराज भजो भाई. मिले मन वंछित अधिकाई हो।टेर
चौरासी लक्ष भ्रमत आयी, करी सुकृत नर भव पायो।
तिरन को दाव भलो आयो हो॥ शी०॥१॥
भ्रम वश आतम गुण खोया, कुगुरु कुदेव घणा जोया।
धर्म हिंसा में मन मोया हो॥ शी०॥२॥
कृपा गुरुदेव तणी पाई, पिछान्या तारण तुम तांई।
भेद निज आतम दरशाई हो॥ शी०॥३॥
अर्ज निज सेवक की मानो, दयाकर महिर हिये आनो।

कृपाकर तारो जग देवा, चाहुं चरम शरम सेवा ।
दीजे मुझको अविचल सेवा हो ॥ श्री० ॥५॥
प्रभु सुख सम्पद के दाता, लहे आनन्द मंगल ख्याता ।
नाम से वर्ते सुख शाता हो ॥ श्री० ॥६॥
भूप दृढ़रथ नन्दा नन्दा नाथ तुम शीतल जिम चन्दा ।
अमीरिख भय भव तुम फंदा हो ॥ श्री० ॥७॥

——

११ श्री श्रेयांसनाथजी का स्तवन ।

श्री आदीश्वर स्वामी हो प्रणमूं शिरनामी तुम भणी । यह देशी ।

श्री श्रेयांस जिनन्दा हो सुखकन्दा साहिब सेवतां कांइ,
पावे वंछित माल ।
जाप जपूं शुद्ध माले हो चाहूं नित सेवा आपरी कांइ
दीजे दीन दयाल ॥ श्री० ॥१॥
दरशन मुझको दीजो हो, अपनो कर लीजो दास मैं
जिम सीझे सुख काज ।
शिव सुख दायक स्वामी हो मैं पाया पूरन पुण्य सुं कांइ
मन मोहन महाराज ॥ श्री० ॥२॥
बार बार गुण गाऊँ हो हरखाऊँ मन वच काय सुं कांइ
सुनी तुम आगम वेण ।
धन्य २ अन्तरजामी हो, समरूँ शिरनामी आपने कांइ
सांचा श्री जिनसेण ॥ श्री० ॥३॥
मैं चरना को चाकर हो तुम ठाकुर जगत शिरोमनी कांइ
म्हारो गरीब निवाज ।
सेवक शरण आया हो निभाज्यो नाथ दयाकरी कांइ,
बांह ग्रहे की लाज ॥ श्री० ॥४॥

प्रभु तुम उपकारी हो, वलिहारी म्हारी नाथजी कांइ,
अरज एक अवधार ।
भमियो मैं भव मांहि हो, दुःखदायी कर्म पसाय सुं कांइ,
अब मुझ पार उतार ॥ श्री० ॥५॥
समता रस के सागर हो, चित्त धरिया साहिब भावसु कांइ,
जाचूं नहीं अब ओर ।
भव भव सेवा चाहूं हो, नित्य ध्याऊं चण २ चित्तसुं कांइ,
जैसे चन्द चकोर ॥ श्री० ॥६॥
विष्णु तात सोभागी हो, अनुरागी विष्णु मात के कांइ,
मन मोहन गुणवंत ।
अमीऋषि को तारो हो, अवधारो अर्ज दया धरी कांइ,
भय भंजन भगवन्त ॥ श्री० ॥७॥

---

१२. श्री वासुपूज्यजी का स्तवन ।

अजनाजी के रास की देशी ।

वासुपूज्य स्वामीसुं विनती, तारन तिरन प्रभु करुणा भंडार तो ।
अर्ज अवधार वालेश्वरु, दो अविचल सुख कर्म निवार तो ।वा०
मोह विकल भव में भम्यो, लच्च चौरासी में वार अनन्त तो ।
दुःख अनन्त मैं पामियो, कृपा करी हवे करो भव अन्त तो ।वा०
मैं अपराधी अवगुण भरा, तुम प्रभु समरथ गरीब निवाज तो ।
पतित पावन मन भावता, शरन ग्रहे की रखिये लाज तो ।वा०
प्रभु मुझ निपट निरागिया, तो भी मुझे तुम सु अनुराग तो।
शरण छोड़ूं नहीं तुम तणो जब लग नहीं होवे भव दुःख त्याग तो।वा
कुगुरु कुदेव कुधर्म को, सेविया मन धरी हर्ष अपार तो ।
शुद्ध मारग नहीं धारियो, मिथ्या वशे गयो निज गुण हार तो ।वा०

सार करो प्रभु हम तणो जिनग तारक देव दयाल हो।
मेह निश्चल प्रभु तुम थकी, चाकर ज्ञान करते प्रतिपाल होगया॰
मात जथा बस्तु भूप के सम्मल तुम प्रभु प्राण आधार हो।
५२ अमीरिख भावर्सु, भविर करी भव पार उतार हो ॥मा॰

११ श्री विमलनाथ प्रभु का स्तवन।

कुन्थु जिनराज तू एसा ॥ यह देशी ॥

विमल जिनराज उपकारी तुम्हारा नाम हितकारी।
कृपा करी तारिये मुझको शरण कर कहत हूं तुमको ॥ वि॰
ससूमा देव तुम प्यारा दिलों से होत नहीं न्यारा।
तू ही सर्वज्ञ है मेरा धरूँ मैं ध्यान नित्य तेरा ॥ वि॰
सरागी देव सब त्यागा स्नेह तुम चरन से लागा।
शरण तुम १महेर अब कीजे मुझे अपना समझ लीजे ॥वि॰
करम ने आ मुझे घेरा, चौरासी लख में फेरा।
मेरे गुरुदेव बतलाया सुमत दिल बहुत मलराया ॥ वि॰
लिया तुम ध्यान का शरना मिटा दो जन्म और मरना।
आठ निज दास की पूरो फिर तुम्ह कह २वृथा कूरो ॥ वि॰
ततुज श्यामा तणा स्वामी राय कृतवर्म सुत नामी।
कर्म रिपु दूर सब कीना अचल शिव महेल तुम लीना ॥ वि॰
दया कर दर्श मोय देना शरम दुःखियों की रख लेना।
अमीरिख नाथ गुण गावे, महेर जिनराज की चहावे ॥ वि॰

---

१ कृपा, २ समूह।

१४. श्री अनंतनाथजी का स्तवन ।

सुनो चन्दाजी, श्री मधिर परमातम पासे जायजो ॥ यह देशी ॥

प्रभु अनत जिनन्द, अनंत आतमगुण धारक तारक आप हो । टेक
तुम वाह्य अभ्यंतर गुण भरिया प्रभु आतम अनुभव रस दरिया ।
सब कर्म रिपु दूरे करिया ॥ प्रभु० ॥१॥
प्रभु कामधेनु अरु चिन्तामणी, जिन महिमा जग मांही घणी ।
कौन समरथ गुण कथवा भणी ॥प्र०॥२॥
यह सेवक माहरो इम जाणी, प्रभु दया भाव मुझ पर आणी ।
भव सागर पार करो ज्ञानी ॥ प्र० ॥३॥
प्रभु अखूट खजानो तुम घरे, तिणथी मुझ मन आशा करे ।
तुम दान थकी भव भय हरे ॥ प्र० ॥४॥
प्रभु निज गुण संपद मुझ दीजे, अब सेवक अपनो कर लीजे ।
मुझ पतीत को पावन कीजे ॥ प्र० ॥५॥
तुम सेवा मुझ को प्यारी है, यह भव परभव सुखकारी है ।
तुम नाम तणी बलिहारी है ॥ प्र० ॥६॥
नृपसिंह सेन सुजसा नंदा, सब टालो कर्म भर्म फन्दा ।
'अमी ऋषि' तुम्हारा है बन्दा ॥ प्र० ॥७॥

---
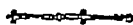
१५. श्री धर्मनाथजी का स्तवन ।

सुरत चरना में ॥ यह देशी ॥

श्री धर्म जिनन्द दयाला, जग तारक परम कृपाला ।
नित्य जपूं तुम्हारी माला हो, जिनन्द गुणधारी ।
जिनन्द गुणधारी, परम उपकारी, चरन बलिहारी हो ॥जि०॥

पुतली देख मुऊ सोमामा, विषय लहर उपजाया ।
अवसर देख कर हक उचार्यो, दुर्गंध से घबराया ॥ मा० ॥
मोह निवारण आतम तारण, श्रीमुख यों फरमाया ।
अति दुःखदायक अशुचि अपावन, यह उदारिक काया ॥
नाथ ऐसे भूपति को समझाया, तुम अपना दूख बचाया ।मा ं
फल किंपाक विषय रस मांही, मूरख भ्रम ललचाया ।
निज गुण हार करम संचय कर दुर्गत वास बसाया ।मा ये
काम आदि उपदेश मंत्र से श्री जिन जहर मिटाया ।
कहत अमीरिख सयम साधी शिवपुर मांही सिधाया ।मा ये

---

२० श्री मुनिसुव्रतजी का स्तवन ।

मन्मथ बोल माने हो ॥ यह दशी ॥

श्री मुनि सुव्रतदेवजी साचा उपकारीजी ।
सेवक कर जोड़ी कहे सुणो अरज हमारी हो के ॥
साहिब पार उतारो हो ॥१॥
नरक निगोद में मैं भम्या, पायो दुःख भारी हो ।
तारण समरथ जाण के आयो शरण तुम्हारी हो के ॥सा०॥२
तुम बिन दाता को नहीं तो कहो कहां जाऊं हो ।
सगम निरंतर आपसुं मन वच तन ध्याऊं हो के ॥सा०॥३
जब तक आवागमन की भ्रमणा न मिटावो हो ।
तब तक पद छोड़ूं नहीं तुमसे यही दावो हो के ॥सा०॥४
पुद्गलीक सुख संपदा तुमसे नहीं चाहूं हो ।
कर्मरिपु वश मातरी सिद्धि संपद पाऊं हो के ॥सा०॥५

सुमति नृपति तुम तातजी, पद्मावती माता हो।
अविनाशी मुक्ति पति, पाया अविचल शाता हो के ॥सा०॥६
महेर करी मुझे आपका, दीजे महेल बताई हो।
कहत 'अमीरिख' नाथजी, तो मैं सब भरपाई हो ॥सा०॥७

२१. श्री नमिनाथजी का स्तवन।

रे जीवा जैन धर्म कीजिये ॥ यह देशी ॥

श्री नेमिनाथ जिनन्द को, नित ध्यान धरीजे।
अजपा जाप प्रकाश के, मन निर्मल कीजे ॥ श्री नेमि० ॥१॥
श्री कर्म हणी शिवपुर धणी, लिया सुख अनन्ता।
अष्ट गुणात्म प्रकटिया, किया सब दुःख अन्ता॥ श्री नेमि०॥२॥
श्री मुख शारद वर्णवे, गुण कीर्ति तुम्हारी।
सागर कोटी अनंत में, नहीं पावत पारी ॥ श्री नेमि० ॥३॥
अल्पमति अति माहरी, तुम गुण किम कहिये।
तो भी अरज विना किये, प्रभुजी किम रहिये ॥श्री नेमि०॥४॥
समरथ जाणी आपसे, निज वितक बोलूँ।
पहवो कोई दूजो नहीं, जिन से मन खोलूँ ॥ श्री नेमि० ॥५॥
इह जग मांही देखता, तुम सम नहीं दाता।
दीन नहीं मुझ सारिखो, सुनजो जगत्राता॥ श्री नेमि० ॥६॥
विजयसेन नृपनन्द के, विप्रा सुत प्यारा।
वन्दे 'अमीरिख' भाव से, करिये भव पारा ॥ श्री नेमि० ॥७॥

१७ श्री कुंथुनाथजी का स्तवन ।

भवि जिन बाल ब्रह्मचारी ॥ यह देशी ॥

कुंथु जिन बहु सुखदाई, २

दीन दयाल कृपाल जगत में महिमा अधिकाई ॥ टेक ॥
विषय कषाय मोह मम ग्रसियो भमियो भव मांई ।
मूढी मिथ्या धरम करम से विपदा बहु पाई ॥कुं०॥१॥
कुगुरु कुदेव सेव अति कीनी हिंसा मन लाई ।
शुद्ध मार्ग को छोड़ जीव, बसियो दुर्गति जाई ॥कुं०॥२॥
पुन्य पसाये आय नरभव में भेट्या गुरुराई ।
कृपा करी जगदीश सेव अब दीनी सुख दाई ॥कुं०॥३॥
अक्षय सुखधारी उपकारी दोष रति नांई ।
धन्य धन्य महिमा धन्य धन्य, प्रतिपालक जग सांई ॥कुं०॥४॥
प्रभु तुम त्यागी समकित दाभी शोभा अधिकाई ।
इन्द्र देव नर सेव करत है तन मन हरखाई ॥कुं०॥५॥
नहीं कोई तारक तुम जैसो इम निश्चय आई ।
चरण शरण जिनराज आपको लीनो हरषाई ॥कुं०॥६॥
सूर नृपति श्री देवी अंगज, सेवा मम मांई ।
कहत 'अमीरिख' नाथ निरंजन बसिया चित मांई ॥कुं०॥७॥

---

१८. श्री अरहनाथजी का स्तवन ।

मानव भवय २ रतन अब पायो रे ॥ यह देशी ॥

मारे मंद् २ अरह जिनन्दार भेटो भव दुःख फंदा ॥ टेक ॥
अलि नलिनी जिम चन्द्र चकोरा जिम चातक है मोरा रे ।
तिम तुम संग ध्यान लगी तन मन माय प्रभु परम सुजान ॥मा०

पुन्य उदय तुमसे लय लागी, भली भाग्य दिशा मुझ जागीरे ।
तुम नाम न छोड़ूँ, इत उत किम दोड़ूँ, तुम पद चित्त जोड़ूँ ।भा०
तुमसे देव निरतर आशा, प्रभु विसरूँ नहीं एक श्वासा रे ।
तुमसुं अनुरागा, जब से मुझ लागा, तब से भय भागा ।भा०
मैं रागी तुम निपट निरागी, और देव दिया सब त्यागी रे ।
हित नजर निहारो, मुझको प्रतिपालो, दुर्गति भय टालो ।भा०
छेह न दीजे सार करीजे, प्रभु आश निराश न कीजे रे ।
प्रभु समरथ जाणी, मुझ प्रीत बंधाणी तारो हित आणी ।भा०
जनम मरण विपदा सब चूरो, मुझे राखो चरण हजूरो रे ।
यही अरज हमारी सुणजो उपकारी, ग्रही शरन तुम्हारी ।भा०
पिता सुदर्शन देवी माता, प्रभु भविजन चित्त सुहाता रे ।
नहीं कोई तुम तोले, अमीरिख इम बोले, प्रभु मै तुम खोले रे ।भा०

---

१६. श्री मल्लिनाथजी का स्तवन ।

नाथ कैसे गज को बन्ध छुडायो ॥ यह देशी ॥

नाथ कैसे भूपति को समझाया,
प्रभु यही अचरज मुझ आया ॥ नाथ० ॥ टेर ॥
मिथिला नगरी कुम्भ नरेशर, प्रभावती उर आया ।
पूर्व भवे तप कपट प्रभावे, प्रथम वेद तुम पाया ॥ ना० ॥१॥
पूरब मोह विचार छऊ नृप, व्याहन अर्थ उमाया ।
नृप समझावन कारण स्वामी, मोहन गेह रचाया ॥ ना० ॥२॥
पुतली एक ठवी निज रूपे, ऊपर ढंक रखाया ।
भोजन सरस भरी दिन अन्तर, छऊ राजा बुलवाया ॥ना०॥ ॥

प्रभु मुझ मन मांहि वसिया सब पाप तिमिर दल नसिया ।
मुझ पूरब पुन्य उलसिया ॥ जि० ॥२॥
इस दुःखमी पंचम आरे शुभ धर्म तणो आधारे ।
करणी कर आतम तारे हो ॥ जि० ॥३॥
प्रभु तन मन मांय हमारो तुम नाम लगे मुझ प्यारो ।
मैं भव भव दास तुम्हारो हो ॥जि०॥४॥
अब लागी मुझ मन आशा प्रभु दीजे मुझे दिलासा ।
कर महेर हरो भव पाशा हो ॥जि०॥५॥
तुम चरन कमल चित लाग्यो मुझ कर्म रिपु भय भाग्यो ।
प्रभु भाग्य भलो अब जाग्यो हो ॥जि०॥६॥
भानु कुल कनक नगीनो सुव्रता नन्द गुण मीनो ।
तुम शरण अमीरिख लीनो हो ॥जि०॥७॥

——×——

१६ श्री शान्तिनाथजी का स्तवन ।

सुन चेतन रे तू गुणवंत मुनि को सेवो । यह देशी ।

सुन चेतन रे तू शांति जिनन्द सुमर ले,
प्रभु करुणा सागर देव सेव चित धर ले ॥टेक॥
प्रभु पूरब भव में शरण कबूतर राखयो,
अति उलट भाव से जीव दया रस चाखयो ।
वहां बंधा तीर्थंकर गोत्र सार्थ सिद्ध जावे
वहां से चवि साहिब शांति प्रभु पद पावे ॥ सुन० ॥१॥
नृप विश्वसेन अचिरा माता घर आया
प्रभु गर्भवास रही मृगी रोग मिटाया ।

निज देश प्रदेश शांति सकल वरताई,
तिण कारण शांति नाम दियो हरखाई ॥ सुन० ॥२॥
प्रभु छह खंड संपद छोड़ मुनिपद धार्यो,
ले केवल लोकालोक स्वरूप निहार्यो ।
कयी तारे भवियण वृन्द मुक्ति पहुँचाया,
वसु ८ कर्म तोड़कर सिद्ध भये महाराया ॥ सुन० ॥३॥
प्रभु नाम थकी सब संकट दूर पलावे,
भय रोग शोक ठग चोर निकट नहीं आवे ।
वली डाकिन शाकिन व्यंतर जोर न लागे,
नित जो ध्यावे शुद्ध भाव विपद सब भागे ॥ सुन० ॥४॥
रिद्धि सिद्धि सम्पद भरपूर सदा आनन्दा,
मन वांछित आशा पूरण करे जिनन्दा ।
अरि दुर्जन वैरी आय नमें नित्य पाया,
यश महिमा जग में योग मिले मन चाया ॥ सुन० ॥५॥
प्रभु तुम सम दूजो देव नहीं जग मांई,
मन मोहन दीन दयाल मिल्या प्रभु तांई ।
प्रभु अधमोद्धारक विरुद तुम्हारो स्वामी,
तुम तारण तरण जहाज नमूँ शिरनामी ॥ सुन० ॥६॥
प्रभु ध्यान तुम्हारो प्राण थकी मुझ प्यारो,
क्षण भर नहीं भूलूँ नाम जिनन्द तुम्हारो ।
कहे 'अमी ऋषि' मुझ शीघ्र सहाय करीजे,
निज सेवक समझी चरन सेव मुझ दीजे ॥ सुन० ॥७॥

२२. श्री अरिष्टनेम प्रभुजी का स्तवन।

तर्जे मैं तम कुगुरु का जो फलक क्याती परी है । यह देशी ॥

साथ सहित समरो जिनवर को नेमनाथ उपकारी है। टेर॥
समुद्र विजय शिवादेवीजी के अङ्गज यादव कुल अवतारी है।
उग्रसेन घर ब्याहन चाले, कीनी जान तैयारी है ॥ सा०॥१
पशुओं पै करुणा तुम कीनी तज दी राज दुलारी है।
सहस्र पुरुष संग संयम लीधो चढ़िया गिरनारी है॥सा०॥२
धन्य २ राजुल नेम प्रभुजी दोनों बाल ब्रह्मचारी है।
अष्ट कर्मदल दूर हटाई पहुँचे मोक्ष मोझारी है ॥ सा० ॥३
तुम जग नायक शिव सुख दायक महिमा जग में भारी है।
तुम मनरंजन भय भंय भंजन, कीजे सार हमारी है ॥ सा ॥४
अपने सेवक को तब चाहैं तुम क्यों रहे बिसारी है।
खमो भूल हमारी साहिब अपना बिरद विचारी है ॥ सा०॥५
तुम प्रतिपाल दयाल हमारे हम में अवगुण भारी है।
मुझको पतित जान के तारो इसमें शोभा तुम्हारी है॥सा ॥६
आनंद कन्द जिनन्द आपको वरया शरण उरधारी है।
छिकर जोड़ 'अमीरिख' बंदत पल पल वार हजारी है॥सा०॥७

---

२३ श्री पार्श्वनाथजी का स्तवन।

सीताजी का महीना की देशी (पधारो पीयर म्हारी)

अश्वसेन वामादेवी मात के घर अवतारिया प्रभुवास
पूरे मन आश। जिनेश्वर वंदिये ॥ टेक ॥
नाग नागिन जलता बचालिया
करी मंत्र परमेष्ठी प्रकाश दियो सुखवास ॥जिने०॥

लइ संयम ध्यान धर्यो भलो,
प्रभु निश्चल मन वच काय, उभा वन माँय ॥जिने०॥
तिहाँ तापस कमठ असुर हुओ,
तिणे देख्यो है अवधि लगाय, जाण्या जिनराय ॥जिने०॥२॥
आयो वैर विचारी प्रभु पासे,
रची काली घटा घनघोर, छाई चहुँ ओर ॥जिने०॥
गाजे मेघ ने चमकन दामिनी,
अति शीतल पवन सजोर, चाले तिण ठोर ॥जिने०॥३॥
कुहके सारंग और दादुर घणा,
वर्षे मेह अति तिणवार, अखंडित धार ॥जिने०॥
जल थल सरवर नीर मावे नहीं,
वहे सरिता पूर अपार, आयी तटवार ॥जिने०॥४॥
ढकी देह प्रभुजी की जल थकी,
रहे तो भी अविचल ध्यान, सुमेरु समान ॥जिने०॥
चल्यो आसन तव धरणेन्द्र को,
दे उपयोग अवधि सुज्ञान, देखे भगवान ॥जिने०॥५॥
आयो इन्द्र पद्मावती संग लेई,
लिया शीघ्र ही शीश उठाय, कीनी छत्र छांय ॥जिने०॥
कीनो नाटक अति मन रंग से,
महा मधुर स्वरे गुण गाय, वंदे चित्त चहाय ॥जिने०॥६॥
त्रासी असुर चरण शर्ण आवियो,
कहे धन धन दीन दयाल, खमाऊँ कृपाल ॥जिने०॥
प्रभु कर्म हणी शीव पद लियो,
तिहुँ काल हरो भवजाल, 'अमीरिख' दयाल ॥जिने०॥७॥

२४ श्री वर्धमानजिन का स्तवन।

यह घर आवो गजुल नार के सुगणा रणमतारे लो। यह देशी।

शासन नायक श्री वर्धमान, प्रभु त्रिभुवन धणीरे लो।
सुर नर इन्द्र करे कर जोड़ सेव जिनजी तणीरे लो।
तिरिया कथी भवसागर पार, वचन प्रभु के सुनीरे लो।
मिथ्या तिमिर विनाशक देव, तूही जग दिन मणीरे लो ॥१॥

सेवक अरज करे एक ध्यान सुनो मुझ विनतीरे लो।
तुम हो साहिब परम सुजान, सदा चढ़ती रतीरे लो।
भटक्यो भव में काल अनन्त, सही विपदा अतीरे लो।
अब तो तारो दीन दयाल, नाथ त्रिजगपतिरे लो ॥२॥

आया इन्द्र भूति तुम पास मान मन में धरीरे लो।
इनको दिया है निर्मल ज्ञान प्रभु करुणा करीरे लो।
गौशालक को सुरपद दीध, सिद्धगामी कियोरे लो।
दीनों डंक अहि चण्ड कोष, तो भी उद्धारियोरे लो ॥३॥

सेठ सुदर्शन कीनी सहाय चन्दन बाला सतीरे लो।
अर्जुन अरु गजभरादिक वरी पंचम गतीरे लो।
कपटी कोपी लंपट जुप शरण जिसने लियारे लो।
उन्हें दीना समकित ज्ञान मुगत पहुँचावियारे लो ॥४॥

प्रभु है तारन तिरन जहाज भरोसा ताजरोरे लो।
सोहे बिरुद अधमोद्धार गरीब निवाजयोरे लो।
जग में नहीं कोई तुम सम देव सेव किस की करूँरे लो।
निशदिन मन वच काय ध्यान सदा तुमरो धरूँरे लो ॥५॥

साहिब महिमावंत महन्त सन्त सुगुणा तुम्हेरे लो।
तुमसु लगा अविचल नेह और चित नहीं गमेरे लो।

मिल्यो चिन्तामणी मुझ हाथ, काच को कौन ग्रहेरे लो।
छोड़ी कल्पतरु सुखकार, आक को कौन चहेरे लो ॥६॥
सिद्धारथ कुलनंद जिनन्द, चन्द सम जनप्रियारे लो।
धन धन त्रिशलामात उछंग, ले हुलरावियारे लो।
प्रभु हैं गुणमणी रत्न भंडार, अरज अवधारियेरे लो।
निशदिन वंदे 'अमीरिख' नाथ, मया कर तारियेरे लो ॥७॥
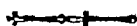
श्री जिन महिमा।

जय पारस देवा, प्रभु जय पारस देवा ॥ आरती की देशी ॥

जय जय जिनराया, प्रभुजी दीन दयाल कृपाल;
प्रभुजी सुरनर मन भाया ॥जय०॥ टेर ॥
धन धन मात पिता कुल नगरी, जहां जिनवर जाया। प्रभु जहां।
छप्पन दिशा कुमारी मिल के, तुमको हुलराया ॥ जय० ॥१॥
चौसठ इन्द्र कियो मिल महोछव, मेरु गिरि लाया। प्रभु मेरु०
स्नान करा माँ समीप मेल्या, शची मंगल गाया ॥जय०॥२॥
भुक्त भोग जग अथिर जानकर, संजम पद ठाया ॥प्रभु सं०॥
परम पवित्र शुकल मन ध्याई, केवल पद पाया ॥जय०॥३॥
तीरथ स्थापी कुमत उथापी, शिवमार्ग दरशाया ॥प्रभु शि०॥
श्री जिन आणधरी शिरप्राणी, निज पद प्रकटाया ॥जय०॥४॥
द्वादश गुणधारी उपकारी, त्रिभुवन सुख दीया ॥ प्रभु त्रि० ॥
दोष विवर्जित शुद्ध निजातम, कर्मदल घीया ॥ जय० ॥५॥
भये अयोगी मुक्त विराज्या, अविचल सुख पाया ॥प्रभु अ०॥
अविनाशी अविकार निरंजन, सिधपुरी राया ॥ जय० ॥६॥
श्री सुखारिखजी यशधारी, उपशम रस पाया ॥ प्रभु उ० ॥
तस पसाये अमीरिख भावे, श्री जिन गुणगाया। जय०॥७॥

कलश ।

हरिगीत छन्द ।

जगदेव श्री चौबीस जिनवर, भजो शुद्ध भावे सुखी ।
सब दुरित भागे कुमति भागे, तिमिर दल जिम दिन मणी ॥१॥

जो भवे भावे सुणे गावे सकल दुःख विपदा टले ।
नित रहे मंगल सुख सम्पद, आश मन वंछित फले ॥२॥

उगणीस बेपन मास आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया भली ।
गुरुवार हर्ष उल्लास धरी सुखी महिमा निरमली ॥३॥

चवनायरे चउमास रहिया रच्या पद चित्त हित से ।
न्यूनाधिक पद वर्ण आवो, सुधारो तस मीन से ॥४॥

महाराज श्री श्री सुखाऋषिजी, तास पद पंकज वरी ।
कहे 'अमीरिख' माय मुझ को, दीजिये मंगल सिरी ॥५॥

• इति चतुर्विंशति जिन स्तवन सम्पूर्ण •

वीस विहरमान गुण कीर्ति स्तवन।

१. श्री सीमंधर स्वामी स्तवन।

श्री आदीश्वर स्वामी हो प्रणमू शिरनामी तुम भणी। यह देशी।

श्री सीमंधर स्वामी हो, समरूँ शिरनामी भाव से,
काँइ भव जल तारक देव।
क्षेत्र विदेह सुखदाई हो, पुंडरीकणी नगरी राजता कांइ,
सारे सुरनर सेव ॥श्री०॥१
दूर देशावर वसिया हो, प्रभु पर्वत वन आड़ा घणा,
काइ धसमी वाट करूर।
विद्या सुर वल नांही हो, वली लब्धि नहीं नभ गामिनी,
प्रभु आऊँ किम हजूर ॥श्री०॥२
साहिव मुझ मन भायो हो, उमायो दर्शन देखवां कांइ,
जैसे चन्द्र चकोर।
मुझ पर महेर करीजो हो, प्रभु दीजो दर्शन दासने काइ,
मांगूँ नहीं कछु और ॥श्री०॥३
अर्ज हमारी मानो हो, अपनो कर जानो दास को कांइ,
करुणा वन्त कृपाल।
जन्म मरण दुख वारो हो, प्रभु तारो भव सागर थकी,
तुम छो दीन दयाल ॥श्री०॥४
पूर्व पाप कमायो हो, जब आयो दक्षिण भरत में कांइ,
जानो तुम जिनराज।
कांइक पुन्ये पायो हो, प्रभु नाम तुम्हारो नाथजी कांइ,
सुनो गरीब निवाज ॥श्री०॥५

पिता श्रीयांस कहाया हो, कांइ आया माता सत्य की
प्रभु लक्ष्मण के मरतार ।
वृषभ लंछन सुखकारी हो बलिहारी थारी साथजी,
कांइ संवत थारे हजार ॥श्री०॥१

चिंतामणी समजाऊं हो, नहीं नाम तुम्हारो बिसरूं कांइ,
समरूं श्वासोश्वास ।
'अमीरिख' मैं दीजो हो, प्रभु चरण कमल की चाकरी कांइ
सफल करो मुझ आश ॥श्री०॥७

---

९. श्री युगमंधर स्वामी स्तवन ।

मन्वय चात मानो हो ॥ यह देशी ॥

युगमंधर जिन बिनवूं, सुणजो महाराया हो ।
साहिब अनन्त गुण धर्मा मैंने पुन्ये पाया हो ॥
जिनेश्वर महेर करीजे हो ॥ १ ॥

चार अनन्ती ऊपज्यो नरकावासे जाई हो ।
परमाधामी देवता अतित्रास पताई हो ॥ जिने० ॥ २ ॥

जन्म मरण निगोद में किया काल अनादि हो ।
छेदन भेदन तर्जना यति तिर्यंच साधी हो ॥ जिने० ॥ ३ ॥

मनुष्य जात कुल हीण में मिथ्यामत धार्यो हो ।
पाप प्रसंग करी तिहाँ नरभव गुण हार्यो हो ॥ जिने० ॥ ४ ॥

देव अयोगी मैं हुयो देवी सुखि कुरियो हो ।
गरज सरी नहीं माहरी चतुर्गति इम फिरियो हो ॥ जिने० ॥ ५ ॥

सुदृढ़ नृप कुल शेहरा, जननी सुतारा हो।
प्रिय मंगला राणी पति, मन मोहन प्यारा हो ॥ जिने० ॥६॥
गज लंछन धारी प्रभु, अरजी चित्त दीजे हो।
कहत 'अमीरिख' दास को, पावन कर लीजे हो ॥जिने०॥७॥

३. श्री वाहुस्वामो स्तवन।

पियु पखिया राणी गुणावली नार जो ॥ यह देशी ॥

सुन जिनराया, मन भाया महाराज जो।
वाहु जिनेश्वर ध्यान धरूँ नित ताहरोरे लो ॥सुण०॥
गुण गाया किम जाय जो,
अमित अनंत गुणागर साहिव माहरोरे लो ॥सु०॥१॥
कौन गिने घन वूंद जो,
वन तरु पत्र तरग पयोधी कुण गिणेरे लो ॥सु०॥
तोले कुण गिरि इन्दजो,
कर पल्लव कुण पृथिवी माप करी भणेरे लो ॥सु०॥२॥
भुज वल सायर अन्त जो,
चरन हीन अवगाहे किम गिरिवर शिरेरे लो ॥सु०॥
अनंत गुणी भगवंत जो,
अल्पमति किम सेवक गुण मुख उच्चरेरे लो ॥सु०॥३॥
गुणमणी रयण भंडार जो,
दूर देशावर क्षेत्र विदेह प्रभुजी वसोरे लो ॥सु०॥
हुं इस भरत मझार जो,
मिलवो मुशकिल नाथ कहो कीजे किसोरे लो ॥सु०॥४॥
अविचल तुम से नेह जो,
कैसे आऊँ देव नहीं मुझ पांखडी रे लो ॥सु०॥

दर्शन बिन गुण गहे जो,
 दूर थका भी तरस रही मुझ आंखड़ीरे लो ॥सु०॥३॥
विसरूं नहीं एक श्वास जो,
 चरण समीपे राखो माय कृपा करीरे लो ॥सु०॥
पूरो वंछित आश जो
 तब मन मोहन सफल होवे मुझ चाकरीरे लो ॥सु०॥६॥
सुग्रीव विजयानन्द जो
 मोहला कथ महत प्रभु त्रिजगपतिरे लो ॥सु०॥
मृग लंछन सुख कन्द जो,
 कहत अमीरिख' देव सदा चढ़ती रतीरे लो ॥सु०॥७॥

---

४ श्री सुबाहु स्वामी स्तवन ।

आठ टूंका नव वावडी पनिहारी जी ॥ यह देशी ॥

देव सुबाहु दीजिये उपकारीजी अविकारीजी ।
तुम पद पंकज सेव, जिनवरजी । शिवसुख दायक आप हो ।उ
ध्यान धरू नितमेव जिनवरजी० ॥१॥
काल अनन्त दुःख सहियो उप०। तुम बिन मैं महाराज ।जि०
पूरब पुन्ये पामियो, उप०। तारण तिरण जिहाज ॥जि० २॥
मन चाहे मिलवा भणी उप०। दर्शन चाहे नेम ॥जि०॥
श्रवण चाहे सुणवा भणी, उप०। अमृत सम जिनबेन ॥जि०३
महेर करो मुझ ऊपरे उप०। साहिब दीन दयाल ॥जि०॥
सेवक जाणी आपको, उप०। मेटो भव दुःख जाल ॥जि० ४॥
दूर थकी समरूं सदा उप०। हर्ष हुए मुझ मन ॥ जि० ॥
उगियो दिनकर अम्बरे, उप०। विकसे पंकज वन ॥जि० ५॥

निषढ नराधिप तुम पिता, उप०। भूनन्दा अङ्गजात ॥ जि० ॥
किंपुरिषा रानी पती, उप०। कपि लंछन सुविख्यात ॥जि० ६॥
इह भव परभव आपका, उप०। नाम तणो आधार ॥ जि० ॥
'अमीऋषि' कहे नाथजी, उप०। भवजल पार उतार ॥जि०७॥

---

५. श्री सुजातस्वामी स्तवन ।

आज म्हारा वीर जिनन्द ने चरण कमल चित्त धरस्या। यह देशी।

श्री अरिहन्त सुजात प्रभु के, भाव सहित गुण गास्यां ।
दीना नाथ दयाल प्रभु के, चरना शीष नमास्यां राज ॥श्री०१॥
अनंत गुणात्म आतम निर्मल, परमातम लव लास्या ।
शिव सुखदायक त्रिजग नायक, पायक हो रिसास्यां राज ॥श्री०
जिन मुख समवशरण की रचना, निरख हरख सुख पास्यां ।
महेर भयी प्रभुजी तुम आगल, मन की वात सुणास्यां राज ।श्री०
चउगत वारन निज पद धारन, मन तन ध्यान लगास्या ।
तुम पद विमल गुणपामी, फिर किण आगल जास्यां राज ।श्री०
ज्ञानादिक शिव पद हिये धर, निश्चल नेह निभास्यां ।
श्री जिन हुकुम धरी शिर ऊपर, जिम तिम करी मनास्यां राज।श्री०
देव सेन भूपत कुल मंडन, देव सेना सुत ध्यास्यां ।
जयसेना प्रीतम रवि लंछन, चरना शीष नमास्या राज ॥श्री०
एक वार प्रभु दर्शन निरखी, और सकल भरपास्यां ।
'अमीऋषि' नित सेव करीने, भव भय दुःख मिटास्यां राज ।श्री०

—×—

६ श्री स्वयंप्रभु स्वामी स्तवन ।

धूप होवे अति ऊजला रे ॥ यह देशी ॥

स्वयंप्रभु जिन ध्याइएरे साहिब दीन दयाल ।
समकित दायक तुम प्रभुजी नायक परम कृपाल ॥
सुखकारी सेवो श्री जिनराज ॥१॥ टेक ॥
प्रभु पद पंकज भेटवारे तरसे मुझ मन भृङ्ग ।
और देव सब परिहर्या रे, लाग्यो तुम से रंग ॥ सु० ॥ २ ॥
दोष विवर्जित आतमाजी क्षायक गुण सुप्रसिद्ध ।
दर्शन ज्ञान केवल धणीजी अमल अतुल रिद्ध ॥ सु० ॥ ३ ॥
चौतीस अतिशय शोभतारे वाणी गुण पैंतीस ।
चौसठ इन्द्र सेवे सदारे जग तारक जगदीश ॥ सु० ॥ ४ ॥
तुमही आर पंचमे रे तुम समरथ आधार ।
जो ध्यावे शुद्ध भाव से रे पावे भव जल पार ॥ सु० ॥ ५ ॥
मित्र राय सुत सुखकरा रे, सुमङ्गला तुम माँय ।
प्रिय सेना पटरानीजी गिरपति लांछन पाय ॥ सु० ॥ ६ ॥
सामर्थ्ये स्वामी आपको रे शरण लिया सुविचार ।
'अमीऋषि' हम विनवे रे वन्दन वार हजार ॥ सु० ॥ ७ ॥

७ श्री ऋषभानन स्वामी स्तवन ।

मन देख थारी मोहनी ॥ यह देशी ॥

श्री ऋषभानन जिन वन्दना जग नायक हो शिवदायक नाथ ।
सेवा किये शुद्ध भाव से प्रभु टाले हो सब संचित पाप ॥ श्री०
मङ्गल वत्सल मानिला मन मोहन हो करुणा रस पूर ।
सुर नायक सेवा करे कर जोडी हो रहे आप हजूर ॥ श्री०

साहिब नाम प्रभाव से, नित मंगल हो वर्तें सुखसार।
विघ्न रहे सब वेगला, लहे संपद हो नवनिधि भंडार ॥श्री०
धन धन जो श्रवणे सुने, तुम मुख से हो अमृत सम वयण।
गुण गाये चित्त च्हाव से, ले दर्शन हो करे पावन नयण॥श्री०
इस भव आय सकूं नहीं, रहो दूरे हो इस भरत मझार।
पंचम आरे तुम विना, नही दीसे हो प्रभु अन्य आधार ॥श्री०
कीरत नृप कुल तारना, वीर सेना हो अङ्गज सुखकन्द।
जयावती राणी हती, हरि लंछन हो प्रभु पद अरविंद ॥श्री०
महेर करो महाराजजी, मुझ राखो हो नित आप हजूर।
कहत 'अमीरिख' माहरा, प्रभु मेटो हो भव कर्म अंकुर ॥श्री०

८. श्री अनंतवीर्य स्वामी स्तवन।

तुम धन २ तुम धन २ शाति जिनेश्वर स्वामी ॥ यह देशी ॥

भाव धरी समरो भवि प्राणी, अनंत वीर्य सुखदाई।
मन वछित सुख सम्पद साता, नित नित देत सवाई ॥भा०१
सकल भरम भय विपद विनाशे, संकट देत मिटाई।
रोग शोक आरत दुख टाले, सो सुमरे चित्त लाई ॥भा०२
अष्ट महा भय दूर पलाये, विपम पंथ वन मांहि।
दुश्मन ठग तस्कर भय भाजे, जो ध्यावे जिन तांहि ॥भा०३
डाकिन शाकिन भूत पिशाचा, वध वंधन दुःखदाई।
ताव तिजारी निकट न आवे, जावे कष्ट पुलाई ॥भा०४
अष्ट सिद्धि नवनिधि रिद्धि पावे, जोग मिले मन चाई।
पृथवीपति सन्मान वधावे, कीरत जग अधिकाई ॥भा०५

मेघ नृपति मंगलावती माता, विजयावती त्रिया सोई ।
संभूत जग प्रभु त्रिजग नायक, नित नित हो जो सहाई ॥मा०६
तुम सम देव नहीं जग दूजो इम निश्चय मन ठाई ।
'अमीरिख' कहे बांह ग्रहे की दीजे टेक निभाई ॥मा०७

६. श्री सुरप्रभु स्वामी स्तवन ।

रे जीव जिनवर वंदिये ॥ यह देशी ॥

रे जीव सुरप्रभु जिन सेविये मिल भावे मन वच कायरे जीवा ।
भव जल तरवा कारणे भलो मिलियो यह उपायरे जीवा ॥सु०
घातिया कर्म चूरे करी भलो केवल दर्शन ज्ञानरे जीवा ।
लोकालोक विलोकता थया, सकल पदारथ जानरे जीवा ॥सु०
चौसठ इन्द्र सेवा करे सेवे सुरनर कोड़ा कोड़जी प्रभु ।
देव घणा इस जगत में, कहो कौन करे तुमथी होड़जी प्रभु॥सु०
चिंतामणी सम तुम मिल्या अब कांचन आवे दायजी प्रभु ।
कल्पतरु फलियो तजी कौन बाबुल सेवे आयजी प्रभु ॥प्रभु०
तिम प्रभुजी तुम मन बसे नहीं और तणी चित चाहजी प्रभु ।
जगम निरंतर लग रही कीजे चरण कमल को दासजी प्रभु ॥सु०
विजयसेन नृप तुम पिता, विजयावती उर अवतारजी प्रभु ।
मदनसेना पटराणी तजी लीनो संयम भारजी प्रभु ॥ सु०
इम सम्भव पद ओपतो सब देव तणा तुम देवजी प्रभु ।
कहत अमीरिख भावसूं दीजे भव भव ताहरी सेवजी प्रभु ॥सु०

१०. श्री विशालप्रभु स्वामी स्तवन ।

श्री गुरु चरनारे नामये ॥ यह देशी ॥

श्री जिन समरो रे भाई, लहे मन वंछित सुख सवाई ।
देव विशाल सेव मुझ प्यारी, प्रभु मैं आयो शरण तिहारी ।श्री०
विषय कषाय मोह वश पडियो, चउगत अटवी में रड़वड़ियो।
कर्म पसाय दुःख अति देखा, तुम विन कौन करे भव लेखा।श्री०
मिथ्या देव मेरे मन भाया, तारक देव हाथ नहीं आया ।
कुगुरु मन मेरो भरमायो, हिंसा करके धर्म बतायो ॥श्री०
मोह विकल मत खोटो खांच्यो, तारक धर्म हिये नहीं राच्यो।
पाप प्रमाद करी भव हार्यो, निज गुण तत्त्व विवेक न धार्यो।श्री०
श्री गुरुदेव दया अब कीनी, दीनानाथ सेव मुझ दीनी ।
सामर्थ्य जानी शरण लुभाया, तारो महेर करी महाराया ॥श्री०
नाग नरेश्वर सुत कुल चन्दा, भद्रानन्द हरो भव फन्दा ।
विमला कन्य महा गुणधामी, रवि लंछन प्रणमूं शिरनामी ।श्री०
महिर करी मेटो भव फेरा, भव भव तुम चरनन का चेरा ।
कहत अमीरिख अरज सुणीजे प्रभु निजगुण रिद्धि मुझने दीजे।श्री

---

११. श्री वज्रधर स्वामी स्तवन ।

कर पडिकमणो भाव सु ॥ यह देशी ॥

स्वामी वज्रधर वीनती, सुणजो श्री भगवन्त लाल रे ।
महेर करो मुझ ऊपरे, जिम होवे दुःख अन्त लाल रे ॥स्वा०
चौतीस अतिशय दीपता, पैंतीस वचन रसाल लाल रे।
सहस्र अष्ट लक्षण धणी, सखा दीन दयाल लाल रे ॥स्वा०

अनंत ज्ञान दर्शन धरा चारित्र तप सार लाल रे।
केवल ज्ञान करी लखे, लोकालोक विचार लाल रे ॥स्वा०
पाप पडल तम टालवा जग में प्रकट आदित्य लाल रे।
सागर सम गम्भीरता सौम्य शशी सम नित्य लाल रे ॥स्वा०
द्वादश गुण करी दीपतो दोष रहित जिनराय लाल रे।
जन्म मरण दुख मेटवा तुम सम नहीं जग मांय लाल रे ॥स्वा०
राय पद्मरथ नन्दना सरस्वती उर अवतार लाल रे।
शैल लक्षण पद शोहतो विजयावती भरतार लाल रे ॥स्वा०
अन्तर्यामी तुम प्रभु, वंछित फल दातार लाल रे।
कहे अमीरिख मायजी दीजे शिवसुख सार लाल रे ॥स्वा०

---

१८ श्री चन्द्रानन स्वामी स्तवन।

कुन्थु जिनराज तू ऐसा ॥ यह देशी ॥

समर जिन नाम को प्यारा मिटे भ्रम कर्म अंधियारा।
सदा आनन्द पद पावे, विपत सब दूर टल जावे ॥स०॥१॥
मनुष्य भव पुन्य से पाया तिरने का दाव अब आया।
अयोघी देव चित्त धरिये भरज शुभ भाव यों करिये ॥स०॥२
भाव भव मांय मैं फिरियो निजातम काज नहीं सरियो।
लगी अब आपसे आशा नाम बिसरूँ नहीं आसा ॥स०॥३॥
जो मांगू और की आगे भली यह बात नहीं लागे।
चरण पे ध्यान अब दीजे मन्दिर निज दास पे कीजे ॥स०॥४॥
अनुपम रूप जिन तेरा वर्शे नित्य चाहता मेरा।
कृपा कर तारिये देवा सफल मानूँ मैं सेवा ॥स०॥५॥

चन्द्रानन देव नू स्वामी, पिता वाल्मिक सुन नामी।
पद्मावती नंद यशधारी, तजी लीलावती नारी ॥स०॥६॥
करूँ तारीफ क्या तेरी, अल्प बुध नाथ है मेरी।
वृषभ लंछन चरन पावे, अमीरिख नाथ गुण गावे ॥स०॥७॥

१३. श्री चन्द्रबाहु स्वामी स्तवन।

वीरमती कहेनि सुण गुणावली ॥ यह देशी, रसिया की ॥

चन्द्रबाहु जिन समरूँ भावसुं, आनी मन उमंग, जिनेश्वर।
शिवसुख दानी वाणी आपकी, लहे औषध ज्यम गंग, जि०।चं०

हेम वरण तन हेमाचल गिरि, पद्म रहे मुख जोय, जि०।
वाणी जल धारा यहां से चली, सुरसरिता सम होय, जि०।च०

कीध पवित्र तिणे पूरव दिशा, मेट महानल ताप, जि०।
तिम भवि हृदय कीनो पावन इणे, टाल कषाय आताप, जि०।चं०

सरिता जाय पयोधी में मिली करती लहरे अभग, जि०।
यह भी ज्ञानधी मांहे मिली, नय गम भंग तरग, जि०।चं०

स्नान करे भवि भाव प्रवाह में, धूपे दुरित दुःख देन, जि०।
होवे निर्मल अन्तर आतमा, पाये अविचल चैन, जि०।चं०

अमृतवाणी श्री जिनराजनी, सुणवा तरसे मन्न, जि०।
महिर करी प्रभु वचन सुनावशो, गिणशु ते दिन धन्न, जि०।च०

देवा नंदन चन्दन नन्दजी, सुगया पतीदेव, जि०।
कहत अमीरिख लंछनकमल को, दीजे अविचल सेव, जि०।च०

१४ श्री भुयंगदेव स्वामी स्तवन ।

भरथाक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ यह देशी ॥

परम सौभागीरे साहिब माहरा, भुजंग प्रभु जग भाणजी ।
शिव सुख दायक नायक आप छो, लायक देव सुजाणजी ॥प०
काल अनादिरे भव भमतां थकां पामी नहीं शिव वाटोजी ।
जिम शुभ संपद सब परवश भई अक्रिया कर्म कपाटोजी ॥प०
कर्म नचायोजी बहु गत चौकमें विध विध भेष बनायजी ।
एक एक भेस न पायो नाथजी आसो को महाराजजी ॥प०
अति जबराखजी कर्म रिपु थकी, शरणे आयो तुम्हारेजी ।
तुम सम और नहीं उपकारिया, जो आपू तस तारेजी ॥प०
आपक शक्ति नहीं प्रभु माहरी किम आवू तुम पासोजी ।
दूर रह्या पण देव दया करी आलो मुज अरदासोजी ॥प०
महा बल पावनस्स महिमा तणा पम सुलक्षम पावनजी ।
रानी गंध सेवा मन मीलयो तीरथनाथ कहायजी ॥प०
तारण समरथ साहिब माहरो जीवन प्राण आधारोजी ।
कहत अमीरिख' देव करी भव जल पार उतारोजी ॥प०

---

१५ श्री ईश्वरस्वामी स्तवन ।

मनमो हरी रास रचो वासा ॥ यह राग ॥ गरबा की देशी ॥

जिनेश्वर समरो शिव दाता मीले मन वंछित सुख साता हो
॥ जिने० ॥ टेर ॥
अतीशय चौत्रीश महा भारी वचन पेंतीस धनी प्यारी ।
प्रभु तुम द्वादश गुण धारी हो ॥ जिने० ॥१॥

वृक्ष अशोक करे छांया, सिंहासन रत्न जड़ित ठाया।
छत्र शिर ऊपर दरशाया हो ॥ जिने० ॥२॥
दुंदुभी देव गगन वाजे, सुगत जिन मत देखी लाजे।
मान पाखड तजी भांजे हो ॥ जिने० ॥३॥
चौसठ जोड़ा चम्मर शिर ढोले, इन्द्र सुर विनय सहित बोले।
नहीं कोई-जग में तुम तोले हो ॥ जिने० ॥४॥
शके कुण तुम महिमा वरणी, अहो धन्य जाया जिन जननी।
यशोदाजी रतन कुख धरणी हो ॥जिने०॥५॥
भूप गजसेन आनंदकारी, तजी प्रभु भद्रावती नारी।
शशीलंछन पद सनुहारी हो ॥ जिने० ॥६॥
मुझे ईश्वर प्रभुजी प्यारो, 'अमीरिख' अरज हिये धारो।
महिर कर भव जल से तारो हो ॥जिने०॥७॥

---

१६. श्री नमिजिन स्वामी स्तवन।

श्री जिन मुझ ने पार उतारो ॥ यह देशी ॥

नमि जिन जगजीवन हितकारी, प्रभु चाहूं में शरन तिहारी ।टेर
जग वंदन चंदन सम शीतल, जग दुख ताप निवारी।
करम निकन्दन कुल ध्वज श्यन्दन, वन्दन वार हजारी ॥ न०
सोवन वान शरीर सकोमल, सुंदर छवि अति प्यारी।
लक्षण सहस आठ तन दमके, सूरत मोहन गारी ॥न०॥२॥
विन शिनगार विभूषित काया, दीप्त तेज महाभारी।
नहीं जगमें तुम सम कोई दूजो, त्रिभुवन आनंदकारी॥न०॥३॥
इन्द्र इन्द्रानी देवी देवता, अनमिख दृष्टि पसारी।
मन रंजन तन देखन हरखे, चन्द्रचकोर निहारी ॥न०॥४॥

अहो अहो रूप अनूप तुमारा, चरन कमल बलिहारी।
महिर करी दीजे प्रभु हमकुं भव भव सेव तुम्हारी ॥म०॥४॥
वीरसेन कुल भूषन स्वामी, सेना देवी महतारी।
मोहना राणी त्याग तपस्वी, रवि लंछन पद धारी ॥म०॥५॥
ब्रह्मा विश्वदेव जगत में शाप न आवे हमारी।
समरथ ज्ञान अमीरिख बोले, करिजे भव जल पारी ॥म०॥७॥

---

१७ श्री वीरसेन स्वामी स्तवन।

मन हरखी प्रेमदा परखी ॥ यह देशी ॥

सकल सुहंकर साहिब सांचा वीरसेण जिन धरिया,
त्रिजग नायक भक्त सहायक अनंत गुणे करी भरिया।
सुखजो स्वामि चरन करूं शिर नामी ॥ सु० ॥१॥
अष्ट महा प्रतिहार्य मनोहर शोभित जिन गुण वृन्द,
सुरपति नरपति मुनिवर ध्यावे, सेवित पद अरविंद ॥सु०२॥
वाणी तिहारी मोहनगारी प्राण थकी पण प्यारी,
सुण नर नारी लहे भव पारी धन्य साचा उपकारी ॥सु०३॥
तुम दर्शन को रसियो तसियो बसियो भरत मझारो,
आश लगी मन मांहि निरंतर, भव भव दास तिहारो ॥सु०४॥
चित्त अटक्यो तुम चरन कमल में, महिर नजर द्यो निहारो,
अरजी पत्र लिखी जो भेजुं सही पहुंचावन हारो ॥सु०५॥
भूमिपाल कुल कलश नगीना, भानुसेना उर आया,
राजसेना प्रीतम शिव गामी, लंछन वृषभ सुहाया ॥सु०६॥
मन ललचायो दास कहायो करुणा उर में आणो,
कहत अमीरिख प्रभु तुम नामें पामे पद निरवाणो ॥सु०७॥

इन्द्र इन्द्राणी हरख चित्त आणी, निरखत सुर नर नयन पसारी।
अहो अहो रूप तुमारो प्रभुजी, कही न शकें तुच्छ बुद्धि हमारी।अ०

राज पाल कुल मुकुट नगीनो, कनकावती जननी जसधारी।
रत्नमाला प्रीतम मनमोहन, स्वस्तिक लंछनकी वलिहारी।अ०

प्रथम संघयण संस्थान सुशोभित, महिमा तीन लोकतें न्यारी।
कहेत अमीरिख महिर करीने, भव भव दीजे सेव तिहारी।अ०

अथ समुच्चय जिनगुण स्तवन।

सुण चेतनरे तु गुणवन्त मुनि को सेवो ॥ यह देशी ॥

सुणो सुगणारे तुम वहिरमान गुण गावो,
जग देव सेव नित मेव करी सुख पावो ॥ सुणो० ॥टेर॥

सिमंधर स्वामी युग मंदिर यशधारी,
वाहु सुवाहु सेव सदा हितकारी।
ये चार जिनेश्वर जम्बू विदेह मजारी,
तिहा विचरे जगदाधार सदा उपकारी ॥सु०१

सुजात स्वयंप्रभ रिषभाननजी स्वामी,
प्रभु अनंतवीर्य जगनाथ मोक्ष के गामी।
पूर्वार्ध विदेह खंड धातकी मांइ,
यह वहिरमान जिन विचरे चार सदाई ॥सु०२

श्री सूर प्रभु विशाल वज्रधर जाणो,
प्रभु चन्द्रानन जिन नाम सदा चित्त आणो।

क्रोधमय् मानघ कुटिलता, आश्रय विषय मे पाप सबापठो।
सेविया हर्ष विमेषरी, तिणथकी भ्रमण कीमो भव संचपतो।दे०२
अष्ट कर्म रिपु महाबली काल अनादिसुं लागाके साथठो।
दुःख देख्या भवगत विषे दीन सहाय कीजे जगनाथतो।दे०३
पुद्गल सुख मांहि मोलवी, निज गुण संपद दीधी छिपायतो।
रंक समा मुझने कियो आवो छो हम करी महारायतो।दे०४
जगतका देव सब देखिया तारण समरथ नहीं अग औरतो।
शरणे आयो प्रभु आपके, मेटिये कर्म रिपु दल जोरतो।दे०५
सर्वभूति रूप मैवना भाव गगासपे दर अवधारतो।
चरण में सेवक निशपति पथापती पदी मान आधारतो।दे०६
दास अनन्त अवगुण भर्यो तुम बिन नहीं कोई तारण हारतो।
महिर करी भव भय हरो वंदे अमीरिख बार हजारतो।दे०७

---

२० श्री अजित वीर्य स्वामी स्तवन।

पेस हरो दिस आनन्द कारी ॥ यह देशी ॥

अजित वीर्य जिन आनन्द कारी भाव सहित सुमरो नरनारी।अ०
अमृत कंद अभेद चंदसम मुख अरविंद शोभ मनुहारी।
भविजन वृन्द चकोर सुमाने निरख आनन्द लहे चित्तभारी।अ०
भाल विशालज्यों अर्ध निशाकर भुंह भमर गण उपमाकारी।
नयन कमल दल निरमल दीपे करुणा रस पुरित अविकारी।अ०
श्रवण समाणोपेत बिराजे, दीर्घ सरल नासा शुकधारी।
विद्रुम रंग अधर अरुणाई कौन शके मुख शोभ उचारी।अ०
दंत श्रेणि उज्ज्वल शशी जेसे कैतकि श्वास सुगंध अपारी।
रसना सरस सुधा सम वाणी सुणत भविकमन आगत प्यारी।अ०

इन्द्र इन्द्राणी हरख चित्त आणी, निरखत सुर नर नयन पसारी।
अहो अहो रूप तुमारो प्रभुजी, कही न शकें तुच्छ बुद्धि हमारी।अ०

राज पाल कुल मुकुट नगीनो, कनकावती जननी जसधारी।
रत्नमाला प्रीतम मनमोहन, स्वस्तिक लंछनकी वलिहारी।अ०

प्रथम संघयण संस्थान सुशोभित, महिमा तीन लोकतें न्यारी।
कहेत अमीरिख महिर करीने, भव भव दीजे सेव तिहारी।अ०

अथ समुच्चय जिनगुण स्तवन।

सुण चेतनरे तु गुणवन्त मुनि को सेवो ॥ यह देशी ॥

सुणो सुगणारे तुम वहिरमान गुण गावो,
जग देव सेव नित मेव करी सुख पावो ॥ सुणो० ॥टेर॥

सिमंधर स्वामी युग मंदिर यशधारी,
वाहु सुवाहु सेव सदा हितकारी।
ये चार जिनेश्वर जम्बू विदेह मजारी,
तिहा विचरे जगदाधार सदा उपकारी ॥सु०१

सुजात स्वयंप्रभ रिषभाननजी स्वामी,
प्रभु अनंतवीर्य जगनाथ मोक्ष के गामी।
पूर्वार्ध विदेह खंड धातकी मांइ,
यह वहिरमान जिन विचरे चार सदाई ॥सु०२

श्री सूर प्रभु विशाल वज्रधर जाणो,
प्रभु चन्द्रानन जिन नाम सदा चित्त आणो।

यह पश्चिम धातकी खंड विचरते स्वामी,
प्रभु केवलज्ञान विमल नमुं शिवगामी ॥प्रभु०३

प्रभु चन्द्रबाहु मूरति मेरे मन भाया
ईश्वर परमेश्वर नेम प्रभु जिनराया।
पूर्वार्ध पुष्कर द्वीप तिण जिन चन्दा,
तिहां विचरे दीन दयाल सदा सुखकंदा ॥प्रभु०४

प्रभु वीरसेन महाभद्रनाथ गुणवन्ता,
श्री देवयश जिन अजीतवीर्य शिवकंता।
ये पश्चिम पुष्कर द्वीप विचरते थांई
नित मन वच काया साथ जपुं सुखदाई ॥प्रभु०५

गुण गावे तीरथ चार महा पदधारी
प्रभु अतिशय वन्त कृपाल तारे नरनारी।
तुम अधम उधारन नाथ जगत के त्राता,
सब लोकालोक स्वरूप तत्व के ज्ञाता ॥प्रभु०६

उगणीसें चेपन बदनावर में आया
आसोज मास तिथि बीज प्रभु गुणगाया।
कहेत अमीरिख जिनराज करो भव पारी
तुम दीठे मन मम होत सदा सुखकारी ॥प्रभु०७

अथ कलश ।

गीया छन्द ।

इम देव अरिहंत नाथ वीशे वहिरमान जपो सदा ।
इह समय क्षेत्र विदेह पांचू मांहि जिन विचरे सदा ॥१॥

वर परम केवल ज्ञान दर्शन, सेव सारे सुरपती ।
प्रतिहारी शोभित गुण अतिशय प्रभु सदा चढ़ती रती ॥२॥

शुद्ध भावटाणी, हरष आणी, थुणो कीरत जिन तणी ।
पामे सुमंगल सुख संपद निरजरा होवे घणी ॥३॥

सुपसाय श्री श्री सुखारिखजी, भावसुं स्तवना करी ।
इम कहे अमीरिख महिर आणी, दीजिये अविचल सिरी ॥
प्रभु दीजिये अविचल सिरी ॥४॥

श्री गौतम स्वामीजी महाराज का रास ।

चंपादेवांदी नगरीरे मेलो म्हारी बेनरो ॥ यह देशी ॥

श्री वर्धमान जिनेश्वरू सरे चौवीसमा जिनराय,
ज्ञान दान दाता गुणी सरे, सद्गुरु शीष नमाय ।
लब्ध निधि गौतम तणा सरे, गुण गाऊँ हरखाय हो,
गौतम गुणधारी, समरो नर नारी सदा भाव सु ॥ १ ॥

गोवर गाम मनोहरू सरे विप्र वसे सुखकार,
वसुभूति तसु नाम है सरे, प्रथवी तस घर नार ।
रूप अनूप सुलक्षणी सरे, सियलादिक गुणधार हो ॥गौ०॥२

सुख सेजे स्वपना लह्यो सरे इन्द्र भवन अभिराम,
नवा नव मासे समनिर्यासरे नन्दन महागुण धाम ।
इन्द्र भवन देख्या थकी सरे इन्द्रभूति दियो नाम हो ॥गौ०३

मोहन मूरत सोहती सरे सुरत निरुपति क्षेम,
सोवन वरन सकोमल काया दीठां उपजे प्रेम ।
परिजन देखी सारत करता सज्जन को सुख क्षेम हो ॥गौ०४

सीख्या च्यार वेद षट शास्त्र अर्थ तर्क निध सार,
चवदे विद्या निधान कहावे कला कुशल सुविचार ।
पंडित जन सिर सेहरा पाम्या जस विस्तार हो ॥गौ०५

सोमल ब्राह्मण तिण समें सरे मध्य पावापुर मांय,
यज्ञ करन के कारणे सरे, आदर देई बुलाय ।
अग्निभूति वायुभूति भेई आया ताम बताय हो ॥गौ०॥६

विद्यार्थी पाच पांचसे एक एकनी संग
पावापुरि नयरमें सरे आया धारि उमंग ।
यज्ञ रच्यो तिण अवसरे सरे मन में अति उछरंग हो ॥गौ०७

तिण अवसर स्वामी सुखकारी, भगवंत श्री महावीर,
दुर्धर तप जप धारता सरे, मेरुगिर सम धीर।
मध्य पावापुर वाहिरे सरे, पट कायाना पीर हो ॥गौ०॥८
ऋजुवालका नदी तीरे, स्वामी छठ तप धार,
वैसाख सुद दशमी दिन रुडो, गोदुज्ज आसन सार।
परम ध्यान शुक्ल मन ध्याया, कर्म खपाया चार हो ॥गौ०॥६
केवल ज्ञानने केवल दर्शन, पाया श्री जिनराज,
चौसठ इन्द्र पधारिया सरे, केवल महोछव काज।
मन में उमंग धरी सुर, स्वामी त्रिगड़ाकी विध साजे हो ॥गौ०१०
चार जातका देवता सरे, देवी को परिवार,
श्री जिनवन्दन आविया सरे, मन में हर्ष अपार।
देव विमानसें अम्बर छायो, हो रह्या जय जय कार हो ॥गौ०११
यज्ञ ऊपर होइ देवता जावे, इन्द्रभूति कहे एम,
यज्ञ पास सुर आयने सरे, पाछा जावे केम।
किण भरमाया देवता सरे, इम उपनो मन वेम हो ॥गौ०॥१२
तब इक नर वोले पुर वाहिर, आया दीन दयाल,
त्रिशलानन्द जिनन्दजी सरे, जगत प्रतिपाल।
दर्शन करवा तेहना सरे, जावे ये सुर चाल हो ॥गौ०॥१३
इन्द्रभूति यह वचन सुणिने, बोले आणी मान;
कुण मुझसें अधिको इण जगमें, विद्या बल गुणवान।
इन्द्रजालिये जाल फेलाई, वश किया देव अथान हो ॥गौ०॥१४
मुझ आगे सो कदी नहीं ठहिरे, सोची चित्त मझार,
बेठ पालखी संग पांचसे, छात्र तणो परिवार।
समवशरन की रचना देखी, मनमें कर विचार हो ॥गौ०॥१५
किम करि यह माहरे वश आवे, नहीं मुझ मे यह पौंच,
पाछो फिरतां निंदा होवे, पग २ अधिको सोच।

देखी श्री जिनराज मैं सरे मनमें देखा आलोच हो ॥गौ०॥१६
हरिहर इन्द्र रवि और ब्रह्मा, जिनेश्वर देव सवायो,
इणसे वाद कियां नहीं जीतुं माहक म्हें अस आयो ।
सौम्य करी ऊभा प्रभु आगे, श्री जिन यों फरमायो हो ॥गौ०॥१७
इन्द्रभूतिजी आया अठाई तब मन इम विचारे,
दिनकरको जाणे जग मांहि तिम मुझ नाम उचारे ।
देख दीदार मानुं पंकज ज्युं विकसित चित अपारे हो ॥गौ०॥१८
मुझ मनका संशय जो टाले तो सांचा किरतार,
श्री जिन तब भांखे तस संशा, वेद में तीन प्रकार ।
दया दान दम इन्द्रिय मनको सार तत्त्व यह धार हो ॥गौ०॥१९
जीव है निश्चय यह सिद्ध पदमें, वेद साख पहिचान,
धन धन दीन दयालजी सरे, सर्वज्ञानी भगवान ।
पंच शत परिवारसें सरे, संजम लियो सुजान हो ॥गौ०॥२०
अग्निभूति वायुभूति दोई आया श्री जिनपास,
साथ पांच पांचसे संगे संजम लियो उल्हास ।
त्रिपदी ज्ञान लब्धि थई परगट गणधर पदवी खास हो ॥गौ०॥२१
छठ २ तप निरंतर करती धरती सुध मन प्यार,
चार ज्ञान धारि सोहता सरे, चवदे पूरव सार ।
रात दिवस सेवा अति कीनी पूछे प्रश्न विचार हो ॥गौ०॥२२
चरण्या चारी शिरोमणी सरे उपकारी गुणवन्त,
सोवनमो शोभा सारिखो सरे सुंदर अङ्ग सोहन्त ।
सात हाथ मन मोहन काया, देखि भवि हरखंत हो ॥गौ०॥२३
एक दिन गौतम चिंते मनमें पदेसी संजम ठायो,
मुझ में केवल ज्ञान न उपनो पाया सोच सवायो,
श्री महावीर सुणावने सरे वचन इसो फरमायो हो ॥गौ०॥२४
सुण गौतमजी तुम हम दोनों, भेला रहिया आगे,

म्होट़ बड़ाई की रीत रही है, पूरन तुम अनुरागे।
ईहां पण जेष्ठ शिष्य गुणवंता, विनयवंत गुण सागे हो ।गौ०२५
अबके इण भव आंतरे सरे, सरिखा होस्यां दोय,
मोहकर्म को जीतलो सरे, कमी रहे नहीं कोय।
वचन सुणी जिनराज का सरे, कमी रही नहीं कोय हो ॥गौ०२६
दीन दयाल कृपाल प्रभुजी, घन घन अन्तरजामी,
पूरन प्रीत प्रेम मुझ संगे, दयावन्त गुणधामी।
बार २ महिमा करे सरे, धन हो म्होटा स्वामी हो ॥गौ०॥२७
वर्ष पचास रह्या घरमांहि, श्री गौतम गुणवन्त,
तीस वर्ष छद्मस्तपणामें, सेव्या प्रभु धरिखंत।
दुक्कर तप करनी करी सरे, सम दम उपशमवंत हो ॥गौ०२८
कार्तिक वदि अमावश्या सरे, मुक्त गया वर्धमान,
गौतम गणधर पामिया सरे, निरमल केवल ज्ञान।
इन्द्र मिली म्होछव कर्यो सरे, महिमा अधिक वखान हो ॥गौ०२९
बारे वर्ष केवल पद माहि, श्री जिन धर्म दिपाया,
अष्ट कर्म तज मोक्ष सिधाया, निराकार पद पाया।
बाणु वर्ष को आउखो सरे, जग में सुजस सवायो हो ॥गौ०३०
गौतम नामे हिरि सिरि सम्पद, रिध सिध भरपूर,
पुत्र परिवार सजन सुखसाता, निश दिन रहे हज़ूर।
डायण सायण व्यंतरा सरे, ताव तिजारी दूर हो ॥गौ०॥३१
गंगा गौ कामधेनु है सरे, तत्ता सुरतरु जाण,
मम्मे मणि चिंतामणी सरे, गौतम नाम वखान।
गणधर नाम जप्यां शुद्धभावे, पामे पंद निरवान हो ॥गौ०३२
उगणीसे एकावने सरे, चैत्र कृष्ण बुधवार,
दशमी तिथि पंचेंवा मांही गाया गुण सुविचार।
अमीरिख कहे गौतम नामे, घरते मंगल चार हो ॥गौ०॥३३॥

अथ चतुर्विंशति जिन मुनि परिवार संख्या कथ्य

सिद्ध चक्रजी ने पूजोरे भविका ॥ यह दशी ॥

श्री गुरुदेव दयाल कृपाल, भापसु शीस नमाई ।
चौबीस जिन मुनिवर की संख्या, सांभलजो चितलाई ।।भ
चौबीस जिन मुनि वंदू ।।१।।
पुण्डरिक आदि सहस्र चौरासी, ऋषभ जिनन्द का चेला ।
सिंहसेन एक लख अजित के, संत मर्यु अलपेसारे ।भ०।चौ
चारदत्त संभव सब दोई मुनिवर ज्ञान गुण दरिया ।
वज्र नाम आदि लख तीन अभिनन्दन गुण भरियारे ।भ०।चौ
चरम आदि लख तीन सुमती के अमर वीश हजार ।
तीस सहस्र तीन लाख पद्म के, जेह मपोतम धारोरे ।भ०।चौ
वीदर्भादिक तीन लाख दिन वंदू सुपार्श्व स्वामी ।
दिन दिपाली सहस्र अढार चन्द्र प्रभु शिरनामीरे ।भ०।चौ
वराहक आदि लख दोई सुविध जिनन्द के साथ ।
नन्द प्रमुख एक लख शीतल प्रणमूं ध्यान अगाधरे ।भ०।चौ
श्री श्रेयांस कर परिवार पहेला मुनी चौरासी हजार ।
बहोतर सहस्र सुभूम आदि है वासुपूज्य शिष्य धारोरे ।भ०।चौ०
मंदिर स्वामी विमल जिनन्द के अड़सठ सहस्र कहीजे ।
छासठ सहस्र अनन्तनाथ के जस मुनि वदीजेरे ।भ०।चौ
धर्मनाथ शिष्य चेह अरिष्ट चौसठ सहस्र कहावे ।
चक्रायुधादिक शांति प्रभु के बासठ सहस्र शिष्य पावेरे ।भ०।चौ०
सांब प्रमुख कुंथु जिनवर के साठ सहस्र मुनिराय ।
भरद कुंभादिक सहस पचासे वंदू मन वच कायरे ।भ ।चौ०
मल्लिनाथ अभिक्षक पहिला चालीस सहस्र वखानो ।
तीस सहस मुनि सुव्रत जिनको मल्ल मुनि गुरु मानोरे ।भ०।चौ

नमिनाथ मुनि शुभं पाटवी, वीस सहस्र सुगुणिये ।
वरदत्त आदि सहस अठारे, रिष्टनेम रिख थुणियेरे ।भ०।चौ०
पार्श्व प्रभु मुनि सोला सहस है, आर्यदिन्न धुर नाम।
चउदे सहस इन्द्रभूत्यादिक, वर्धमान गुण धामोरे ।भ०।चौ०
चौवीस जिनवर मुनिवर सघला, संख्या लाख अठवीश।
ऊपर सहस्र अड़तालीस जानो, नित्य नमावूं शीषरे ।भ०।चौ०
केइ तपकर स्वर्ग सिधाया, केइक केवल पाया ।
कर्म खपाइ मुक्ति विराज्या, अमीरिख गुण गायारे ।भ०।चौ०

दयामाता का स्तवन ।

चेतनजी वांटने मति जोवोरे ॥ यह देशी ॥

चेतनजी मातादया ने मनावो रे, मन वंछित संपद पावो ।टेर
ऐसी माता नहीं जग मांईरे, जण्या सेवक ने सुखदाईरे ।
सब संकट देवे मिटाई ॥ चेतनजी ॥१॥
समता रूप देवल भारीरे, ध्वजा ध्यान रूप मनुहारीरे ।
करे ज्ञान सिंह असवारी ॥ चेतनजी ॥२॥
दानादिक चउ हाथ विराजेरे, गलेहार सुमति को छाजेरे ।
बाजा संजम का नित बाजे ॥ चेतनजी॥३॥
भलो सियल को लंगो पिछानोरे, लज्जा को चीर वखानोरे ।
किरिया की कंचुकी जानो ॥ चेतनजी ॥४॥
तप तिलक भाल पर होवे, विनय मुकुट सीस पर सोवेरे ।
अति सुन्दर छवि मन मोहे ॥चेतनजी॥५॥
चारो तीरथ जातरी आवेरे, वृत नेम नैवेद्य चढ़ावेरे ।
माता निरख हरख गुण गावे ॥चेतनजी॥६॥

भूखा भोजन प्यासा पानीरे, उदधि मांहि दीप समानीरे।
भूलों साथ आधार ज्यूं आनी ॥ चेतनजी ॥७॥
रोगी कूं औषध उपकारीरे, भय पामतां शरण विचारीरे।
तिम माजी तणो आधारो ॥ चेतनजी ॥८॥
रिध सिध सुख सम्पद दातारे, सुरा देवे भव २ साताऱे।
भविजन नित मंगल गाता ॥ चेतनजी ॥१०॥
दशमे अङ्ग जिन फरमायोरे साड नाम दया का बतायोरे।
अप्या होय आनन्द सवाया ॥ चेतनजी ॥११॥
रोग शोक विपत नहीं आवेरे सिमर्यां सब सेवट भागेरे।
दुरिजन होवे अनुरागे ॥ चेतनजी ॥ १२ ॥
माता जीव अमरता लायेरे, दुख जनम मरन का मिटायेरे।
सिव मंदिर मांहि पधायाँ ॥ चेतनजी ॥१३॥
भवि जीव तज मन भावेरे माता गुण गावे हरखावेरे।
अमीरिख नित भाय' मनावे ॥ चेतनजी ॥१४॥

—x—

भाव पूजा शिक्षारो।

सुरिजन सम समो नहीं कोई ॥ यह देशी ॥

सतगुरु देव दया दिल आणी, इस विध वचन उचारे।
निरवद्य पूजा करो जिनवर की, जिन सब पाप निवारेरे।
सुगुणा भाव पूजा नित कीजे, ई काया का जीव जतन कर,
वंछित शिव सुख लीजेरे ॥ सुगुणा० ॥१॥
चार कषाय आठ मद तज के, मैला वस्त्र उतारी।
दया सरोवर संजम जल में, स्नान करो सुविचारीरे ॥सु ॥२

संवर वस्त्र नवा तनधारी, भाव कलशके माहिं।
समकित निरमल नीर धरी ने, श्री जिन न्हवन कराईरे ॥सु०
दृढ़ परिनाम अंगोछे पूंछी, निरभय पाट धरीजे।
पंच महाव्रत केसर घस के, समता कटोरी भरीजेरे ॥सु०।भ०
मन वच गुप्त कपूर अगर ले, मेलो श्री जिन पासे।
दश लक्षण का तंदुल उज्ज्वल, लीजे अखंड उल्हासेंरे ॥सु०।भ०
फूल सुगंधित सुभाव के, चुनिये जतन अपारो।
क्षमा नैवेद्य आणधरीजे, काउसग्ग थाल मझारोरे ॥सु०।भ०
ज्ञान दीपक परकाश करीजे, हिरदे मंदिर मांई।
भरम तिमिर सब दूर निवारे, तव मूरत दरसाईरे ॥सु०।भ०
झालर सियल सन्तोष की घंटा, गहिरे नाद वजावो।
सत्य वचन का झांज मनोहर, ध्यान की नोबत धरावोरे ॥सु०।भ०
तप अग्नि में अष्टकर्म की, धूप भली विध खेवो।
समता पुष्प जिन सीश चोडने, इण विध जिनवर सेवोरे ॥सु०।भ०
अष्ट द्रव्य विध पूजन करने, निरमल आतम कीजे।
निज गुण देव सदा समरीजे, तो मन वंछित लीजेरे ॥सु०।भ०
नाचन कूदन ख्याल तमासा, ताक मृदङ्ग वजावे।
छकाया का जीव ने हणता, प्रभु नहीं धर्म बतावेरे ॥सु०॥भ०
धर्म अहिंसा कह्यो जिनवरजी, ज्ञान नैत्र करि देखो।
जगत जीव सुख इच्छुक जानी, निज आतम सम लेखोरे ॥सु०।भ०
ज्ञान ध्यान तप संवर किरिया, निर्मल धर्म प्रकाशो।
हिंसा धर्म प्ररुपे अज्ञानी, साधे दुरगत वासोरे ॥सु०॥भ०
निरवद्य भाव पूजा जिनवर की, जे भवि प्राणी करशे।
अष्ट कर्मदल दूर हटाई, भव जल पार उतरशेरे ॥सु०॥भ०
उगनीसें साल इकावन रूडो, धार नगर के मांहि।
अमीरिख कहे भविजन काजे, भाव पूजा इम गाइरे ॥सु०॥भ०

भूखा भोजन प्यासा पानीरे, उदधि मांहि दीप समानीरे।
मूलो साथ आधार ज्यूं आनी ॥ चेतनजी ॥७॥
रोगी कूं औषध उपचारोरे, भय पामतो शरण सिधारोरे।
तिम मानी तणो आधारो ॥ चेतनजी ॥८॥
रिध सिध सुख सम्पद् दातारे, तूठा देवे मन २ साताारे।
भविजन नित मंगल माता ॥ चेतनजी ॥१०॥
दशम अङ्ग जिन फरमायोरे साठ नाम दया का बतायोरे।
अप्या दोय आनन्द सवाया ॥ चेतनजी ॥११॥
रोग शोक विपत नहीं आवेरे, तिमर्या सब संकट भागेरे।
दुरिजन होवे अनुरागी ॥ चेतनजी ॥ १२ ॥
माता जीव अनन्ता तार्यारे, दुख जनम मरन का निवार्यारे।
सिव मंदिर मांहि पधार्या ॥ चेतनजी ॥१३॥
भवि जीव दया मन भावेरे, माता गुण गावे हुलसावेरे।
अमीरिख नित मांय समावे ॥ चेतनजी ॥१४॥

——×——

भाव पूजा विसयसे।
दुरिजन सत समो नहीं कोई ॥ यह देशी ॥

सतगुरु देव दया दिल आणी इन विध वचन उचारे।
निरवध पूजा करो जिनवर की, जिम सब पाप निवारेरे।
सुगुणा भाव पूजा नित कीजे, ते काया का जीव जतन कर,
वंछित शिव सुख लीजेरे ॥ सुगुणा० ॥१॥
चार कषाय आठ मद तज के, मैला वस्त्र उतारी।
दया सरोवर संजम जल में स्नान करो सुविचारीरे ॥सु०॥२

संवर वस्त्र नवा तनधारी, भाव कलशके माहिं।
समकित निरमल नीर धरी ने, श्री जिन न्हवन कराईरे ॥सु०
दृढ़ परिनाम अंगोछे पुंछी, निरभय पाट धरीजे।
पंच महाव्रत केसर घस के, समता कटोरी भरीजेरे ॥सु०।भ०
मन वच गुप्त कपूर अगर ले, मेलो श्री जिन पासे।
दश लक्षण का तंदुल उज्ज्वल, लीजे अखंड उल्हासेंरे ॥सु०।भ०
फूल सुगंधित सुभाव के, चुनिये जतन अपारो।
क्षमा नैवेद्य आणधरीजे, काउसग्ग थाल मझारोरे ॥सु०।भ०
ज्ञान दीपक परकाश करीजे, हिरदे मंदिर मांई।
भरम तिमिर सब दूर निवारे, तब मूरत दरसाईरे ॥सु०।भ०
झालर सियल सन्तोष की घंटा, गहिरे नाद वजावो।
सत्य वचन का झांज मनोहर, ध्यान की नोवत धरावोरे ॥सु०।भ०
तप अग्नि में अष्टकर्म की, धूप भली विध खेवो।
समता पुष्प जिन सीश चोडने, इण विध जिनवर सेवोरे ॥सु०।भ०
अष्ट द्रव्य विध पूजन करने, निरमल आतम कीजे।
निज गुण देव सदा समरीजे, तो मन वंछित लीजेरे ॥सु०।भ०
नाचन कूदन ख्याल तमासा, ताक मृदङ्ग वजावे।
छकाया का जीव ने हणता, प्रभु नहीं धर्म बतावेरे ॥सु०॥भ०
धर्म अहिंसा कह्यो जिनवरजी, ज्ञान नैत्र करि देखो।
जग्त जीव सुख इच्छुक जानी, निज आतम सम लेखोरे ॥सु०।भ०
ज्ञान ध्यान तप संवर किरिया, निर्मल धर्म प्रकाशो।
हिंसा धर्म प्ररुपे अज्ञानी, साधे दुरगत वासोरे ॥सु०॥भ०
निरवद्य भाव पूजा जिनवर की, जे भवि प्राणी करशे।
अष्ट कर्मदल दूर हटाई, भव जल पार उतरशेरे ॥सु०॥भ०
उगनीसैं साल इक्कावन रूडो, धार नगर के मांहि।
अमीरिख कहे भविजन काजे, भाव पूजा इम गाइरे ॥सु०॥भ०

अष्टमद निवारक उपदेश।

गौतम गुणधारी ॥ यह देशी ॥ हीर रंजारी ॥

सुण सुगणो मद अठ मय मार्णी सुख दायक आगम वार्णी।
मद आठ तजो नरनारी, जार्णी दुगत के अधिकारी ॥१॥
जात मद किया दुःख लेशी, किया पूरव भव हरकेशी।
तिण अस्यज कुल में आया, करि तप जप कर्म खपाया ॥२॥
मरीची भव कुल मान कियो। शासनपति वर्धमान।
कोडाकोड सागर भव फिरिया, आई विप्र कुल अवतरिया ॥३॥
बलमान किया दुःखलीध श्रेणीक वसुभूति प्रसिद्ध।
उपने नर का माहि आई तिहां वेदन पाइ सवाई ॥४॥
बोध्यो चक्री इन्द्र पखाण्यो तिसै रूप तणो मद आएयो।
पल माहिं विणस गई काया तन हुए रोग अति छाया ॥५॥
नहीं कीजै तप अहंकार सब जाणे तप गुणहार।
करकुड नामे रिखराय तेह पाम्यो तप अन्तराय ॥६॥
आठमो चक्री मद लाभे खण्ड सातमो साधवा जावे।
डूब्यो जल में लाभ अभिमानी गति सातमी नरक वखानी ॥७॥
थूलभद्र मुनि गुण दरियो तिण सूत्र तणो मद करियो।
सूत्र अर्थ न पूरण आया यह मान तणा फल पाया ॥८॥
ठकुराई तणो मद धार्यो इन्द्र आय के मान उतार्यो।
रिध देख शरण मूए, लियो संजमधारी अनूप ॥९॥
रावण कंसादिक राजा, हय गय रथ पायक साजा।
मन माहिं अहंमद आया कई नरके नरक सिधाया ॥१०॥
मद आप जिसा जिणे कीना तिणे तिसा फल लीना।
इम जाणि मान परहरिये मार्दव गुण चित अनुसरिये ॥११॥

तन धन सब अथिर पिछानो, मन मान सुगुण मन आनो।
नहिं विणसत लागे वार, मानुं दामिनी को चमकार ॥१२॥
तप जप सुकृत चित्तधारो, करनी कर करम निवारो।
हित सीख अमीरिख बोले, जिनवेण सुधारस तोले ॥१३॥
उगनीसे त्रेपन के साले चदनावर का वरसाले।
इण विध उपदेश सुणायो, सुणि सुगण तणो मन भायो ॥१४॥
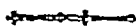
अरणक श्रावक की सज्झाय।

सुण सुणरे सयणा सयाणा ॥ यह देशी ॥

चम्पा नगरी में वसे सरे, अरणक श्रावक सार;
जहाज लेइ पर दीप कमावा, चाल्या समुद्र मझार।
द्रव्य तणा केई लालची सरे, साथे लोक अपार हो;
श्रावक सुखकारी समकित व्रत धारी निर्मल भावसु ॥१॥
इन्द्र प्रशंसे तिण समे सरे, अरणक समकित टेक;
लाख उपाय किया न डिगे मन, सुर नर मिले अनेक।
धर्म परीक्षा कारणे सरे, चाल्यो तव सुर एक हो ॥श्रा०॥२
अहि वृश्चिक काने लटकाया, श्याम वरन भयकार,
मार २ कर ऊचरे सरे, दीर्घ देह आकार।
गरज रह्यो आकास में सरे, वचन कहे अविचार हो ॥श्रा०॥३
खोटा लक्षण का धणी सरे, तव सम और न कोय,
छोड़ धरम तुज अरनका सरे, हुं छोड़ावुं तोय।
जो नहिं माने पापियां सरे, मैं देसुं जहाज डुवाय हो ॥श्रा०॥४
हरगिज हुं छोडुं नहीं सरे, करसूं सब की घात,
अरणक सुनि ये वचन ने सरे, कम्पे नहीं तिल मात।
सागारी अनसन कियो सरे, सोचे मन यह वात हो ॥श्रा०॥५

म्हारो धम म्हारे धमु मरे, यो छोड़ावै केम।
देव एक अरिहंतजी सरे, श्रीर तणो दे नेम।
सद धर्म को संचिया मरे, म्हारे धर्म से प्रेम हो ॥भा०॥
लोक सहु व्याकुल हुश्रा मरे, कहे वचन मधराय,
छोड़ श्रभागी धम मे सरे, नहितर हमसी श्राय।
तो पण मन से नहीं चल्या मरे, लीधी जहाज उठाय हो ॥भा०॥७
कोलाहल मचियो घणा मरे, लोक कहे बहुयार,
दुष्ट दुरातम पापिया मरे, सबमे ससी मार।
मन वचमें काया सरीरे, चलिया नहीं लगार हो ॥भा ॥८
निश्चल मन तस जाणिया सरे, देवे श्रवधी लगाय,
देव रूप परगट करी सरे लागो श्ररणक पाय।
कुंडल जोड़ी भेट करिने श्रायो जिण दिश जाय हो ॥भा०॥६
कुंभराय मे श्रायने सरे, कुंडल दीधा सार,
कर श्रणसण सुद भावसु सरे, पायो सुर श्रवतार।
चविने मुक्ति सिधावसी सरे कहे श्रव विस्तार हो ॥भा०॥१०
उगणीसे बावन भलो सरे, पूनम मृगशिर मास,
कहे श्रमीरिख भावीया सरे धारो धर्म उल्लास।
पकित सुख सपद मिले सरे, पामे श्रविचल वास हो ॥भा०॥११

करुणावंत श्री मेघरथ राजा की लावणी।

तुमे तो श्री महाराज चरन मेरे मन की ॥ यह देशी ॥

श्री मेघरथ राजा जीव दया अधिकारी,
जिणे राख्यो को परेवा शरण सुणो नरनारी।
सुधर्म सभा में शक्र इन्द्र सुखदाई
जिण देव देवी के मांहि बात फरमाई।

महा विदेह क्षेत्र से लीलावती विजय सवाई,
मेघरथ राजा त्रिलोकापुर के मांई ।
श्रावक वृत पाले दृढ़ समकित गुणधारी ॥जिने०॥१॥

शरनागत पालन राय नेम भल लीनो,
नहीं डिगे डिगायो जीव दया रस भीनो ।
सिंहासन से उठ इन्द्र नमन तव कीन्हो,
सब देव देवी कहे धन धन है तस जीनो ।
अति करे प्रशंसा जीव दया बलिहारी ॥जिने०॥२॥

तब दोय मिथ्यात्वी देव बात नहीं मानी,
जाय करूँ परीक्षा ऐसी चित्त में आनी ।
सींचानो पारेवो दोय रूप तब ठानी,
चल आयो भूप पुर मांहि देव अज्ञानी ।
कियो दुष्ट पारधी रूप महा भयकारी ॥जिने०॥३॥

घबरानो पारेवो बैठो गोद में आई,
बोले धूजतो पाल पाल मुझ तांई ।
कहे राय पक्षी क्यों डर आने मन मांई,
मत जाण दुख मुझ प्राण रहे जब तांई ।
तब आयो पारधी लेय सींचानो लारी ॥जिन०॥४॥

कहे पारधी राय सिकार आई इण वारो,
दीजे यह पक्षी क्षुधावन्त अपारो ।
कहे राजा फिटरे दुष्ट वदे अविचारो,
शरणागत नहीं दीजो क्षत्री आचारों ।
धिग तुं और धूग पक्षी को मांस अहारी ॥जिने०॥५॥

क्षुधा टालनकुं सरस आहार भले लीजे,
सुखड़ी मेवादिक ले तन पौषण कीजे ।

कहे पथिक मांस तिम मुक्त पक्षी तन कीजे,
जीवित जन्तु का मांस आव मुझ दीजे।
सुन वचन भूप मन सोच भया अतिभारी ॥जिने०॥६॥
यातो दो पक्षी महिलो तत्काल भ्रमो,
अथवा तुम तनको दीजे मांस राजा मो।
सुन वचन इसा भूपति को चित्त हरखांमो,
मगवाया शस्त्र बांधी भाजू तिण ठामो।
तन मांस देवन को राय भयो तइयारी ॥जिने०॥७॥
अन्तेउरादिक परिवार कहे कर जोड़ी
पक्षी कारन क्यों कोमल तन दो तोड़ी।
तुम पृथ्वीपाल भूपाल दीसे हठ छोड़ी
तब कहे राय कीजे नहीं बिरथा मोड़ी।
मुक्त से कदि बचसूं रीत नहीं राजारी ॥जिने०॥८॥
कहे मधुर वचन से राय सुनो मतवारो
कियां लाख उपाय फिरे नहीं बोल हमारो।
तन जाता मिपजे दया यही उपकारो
रत्नमयी पृथ्वी देत सुमेर सोनारो।
एक जीव दया के तुल्य न होय लगारी ॥जिने०॥६॥
धरे काट २ के मांस तराजू मांई,
नहीं पूरी हुई तब पैठे आप भूप आई।
तिम समे देवता देखे अवधि लगाई
माके सत मांई धन २ धीरज ताई।
तब प्रगट देव निजरूप कियो तिनवारी ॥जिने०॥१०॥
तब हाथ जोड़ राजा से देव इम बोले
धन २ करुणा भंडार नहीं तुम तोले।

मैं इन्द्र तणा नहीं मान्या वचन अमोले,
सब माफ करो अपराध कपट यों खोले।
यों कही देव निज ठाम गयो है सिधारी ॥जिने०॥११॥

इम दया सुधारस भूप भाव से पीनो,
सब राज रिद्धि को छोड़ के संजम तप लीनो।
पाली श्री जिनवर आन धर्म दश भीनो,
मुनि स्वार्थ सिद्ध वैमान देव सुख लीनो।
सागर तेतीस को आयु सिद्धांत उच्चारी ॥जिने०॥१२॥

तिहां थी चवी हथनापुर अचरा उर आया,
विश्वसेन रायसुत कुल में कलश चढ़ाया।
श्री शांतिनाथजी मिरगी रोग हटाया,
प्रभु कर्म तोड़ के शिवपुर का सुख पाया।
प्रभु निरंजन निराकार परम अविकारी ॥जिने०॥१३॥

प्रभु नाम जपे नसे सरव विघन को टाले,
सुखारिखजी गुरुदेव दयाल कृपाले।
एक धार शहेर उगनीस एकावन साले,
कहे अमीरिख सिमरुं जिन शांति त्रिकाले।
इम जाणी सुगण जीव दया लो धारी ॥जिने०॥१४॥

हितोपदेश ।

अथ अबी म्हारी अरजी सुण लीजे ॥ यह देशी ॥

सीख सुण मानो भव प्राणीरे प्राणीरे,
कूड़ कपट को त्याग धार श्री सतगुरु की वाणी ॥टेर॥
जीव नरका में दुख पायारे,
परमाधामी देव पकड़ पुद्गल स खिरधायो ।
छेदन भेदन अपीकी आसी रे २ ॥कूड़०॥१॥
गति तिर्यच तणी पाई रे २,
पाप उदय परवश में प्राणी मार अति खाई ।
मिस्यो नहिं पूरो घास पानी रे २ ॥कूड़०॥२॥
कष्ट करि देव हुवो आई चवन अवसरे,
तास फूल की माला कुमलाई ।
देख सुर भारत खिन्न प्राणी रे २ ॥कूड़०॥३॥
मटकतो मनुष्य देह पाई रे २,
मास्त सवा नव जीव गरभ का देख्या दुख भारी ।
जनमतां सुख दुख विसरानी रे २ ॥कूड़०॥४॥
अनुगत मांहि इम भमियो रे २,
धर्म बिना परवश में फोगट ।
काल गमियो चेत चित्त में नर अभिमानी रे ॥कूड़०॥५॥
कुमत पंथ मांहि मत राचो रे २
कुगुरु कुदेव कुधर्म तजी ।
जिनमत जाणो साचो मिथ्या मत जाणो दुखदानीरे २ ॥कूड़०॥६॥
मोक्ष दया जोग भला पाई रे २,
चोथो पंच पचमाद थाप समकित धारो भाई ।
तिरस की प्यास मिटी जासी रे २ ॥कूड़०॥७॥

साच यो मारग समजीजोरे २,

इण मारग कूं छोड़ं चित्त हिंसा में मत दीजो ।

शुध श्रद्धा चित्त में ठानी रे २ ॥कूड०॥८॥

वचन निरवद्य हे प्रभुजी को,

पुद्गल संग छोड़ के चेतन पावे सुख नीको ।

जाय सब वेदन विरलानी रे २ ॥कूड०॥९॥

चौमासो धार मांहि कीनो रे २,

एकावन के साल उपदेश एह दीनो ।

अमीरिख कहे समज ज्ञानीरे २ ॥कूड०॥१०॥

मुनि दर्शन से दश गुण की प्राप्ति ।

मेरी मरी करता जनम गयोरी ॥ यह देशी ॥

मुनीवर दर्शन जो करे,

भावे दश गुण होय प्रभु फरमावे ॥मु०॥टेर॥

भगवति सूत्र शतक दूजे जाणो,

पंचमा उद्देशामें श्री जिनवाणी ॥ मुनिवर० ॥१॥

पूछे प्रभु से गौतम स्वामी,

मुनि सेवन फल कहो गुणधामी ॥ मुनिवर० ॥२॥

प्रभु कहे प्रथम श्रवण गुणधारो,

सुणत सूत्र जिन वचन उचारो ॥ मुनिवर० ॥३॥

सूत्र सुणयां से ज्ञान गुण पावे,

ज्ञान होने से विवेक वधावे ॥ मुनिवर० ॥४॥

चित विवेक करे पचखान,

पचखाण से संजम गुण जान ॥ मुनिवर० ॥५॥

संजम थी नवा कर्म न बांधे,
समामधी होय तप गुण माधे ॥ मुनिवर० ॥६॥
तपस्या करी पूर्व कर्म खोवे,
कर्म गये अक्रियावन्त होवे ॥ मुनिवर० ॥७॥
अकिरियावन्त कर्म रिपु घावे
जनम मरण तज मोक्ष सिधावे ॥ मुनिवर० ॥८॥
तिम कारण सुखीये भव प्राणी
मुनि दरशन करो निज हित जाणी ॥ मुनिवर० ॥९॥
अमीरिख कहे मुनि गुण भारी
भाव सहित वन्दो नरनारी ॥ मुनिवर० ॥१०॥

—x—

श्री पुरसादाणी पार्श्व जिन स्तवन।

नाथ कैसे गज को फन्द छुड़ायो ॥ यह देशी ॥

नाथ कैसे नागनी नाग बचायो यों ही अचरज मोहु आयो। टेर
काशी देश बनारस नगरी, अश्वसेन नरराया।
माता वामादेवी उर अवतरिया सकल जीव सुखदायो ॥ना०
कमठ नाम तापस तिण अवसर करण मजाल बणायो।
धाम नगर मांहि फिरत सो नगर बनारसी आयो ॥ना०॥२
वन में पावक पूर्ण मचाई तापस ध्यान लगाया।
नगर लोक केइ करत प्रशंसा, अति सनमान बधायो ॥ना०॥३
सुनत प्रशंसा जिम जननी को वंदन चित्त उमायो।
मात साथ पूरन जग नायक, पट हस्ति सजवायो ॥ना०॥४
जैसा तट पे तापस आया साथे श्री जिनरायो।
अवधिज्ञान प्रयुंज प्रभुजी वचन इसो फरमायो ॥ना०॥५

रे अभिमानी तप अज्ञानी, क्यों पाखण्ड मचायो ।
नागनि नाग जलत अगनी में, पातिक तुझ चित्त छायो ॥ना०६
महा अभिमानी वचन न माने, पुरिजन अचरज पायो ।
लकड़ फाड़ जीव दिखलाये, तापस मान घटायो ॥ना०॥७
मरन समय तरन निकट जान के, मंत्र परमेष्टी सुनायो ।
सुद्ध भाव सरधी धरणीधर, पद्मावती पद पायो ॥ना०॥८
होय खिसानो कमठ अज्ञानो, मन में क्रोध भरायो ।
काल करी तप हार निदाने, कमठ असुर पद पायो ॥ना०॥६
श्री जिन जगत असार जान के, संजम चित्त वसायो ।
वन में जाय तरु तल ठाडे, निश्चल ध्यान लगायो ॥ना०॥१०
वैर विचार मेघ माली को, तुरत हि आशा लायो ।
घनघोर पवन विकुर्वी, पावस अति वरसायो ॥ना०॥११
दीन दयाल मेरु गिर जैसे, अविचल मन वच कायो ।
नाक बरोबर आयो पानी, देव आसन कम्पायो ॥ना०॥१२
अवधि प्रजुंज धरेन्द्र विचारे, जिनवर कष्ट सवायो ।
पद्मावतीजी को संग लेइने, तुरत प्रभु डिंग आयो ॥ना०॥१३
पद्मावतीजी उठाय सीस पर, फनाटोप सिर छायो ।
कमठासुर निज मान तजी ने, प्रभु को आप खमायो ॥ना०॥१४
जिन गुण गाय दिखाय नृत विध, इन्द्र भवन को सिधायो ।
कहत अमीरिख नाथ निरजन, निराकार पद पायो ॥ना०॥१५
उगनीसे एकावन साले, धार चौमासो ठायो ।
श्रावण शुद चौदस बुधवारे, श्री जिन के गुण गायो ॥ना०१६

दशविध मिश्र समाधि वर्णन ।

मतियामीरा गीत की ॥ देशी ॥

सांभलजो भवि प्राणी हो जिनवाणी निर्मल भावसु कांइ,
जिम उतरो भव पार दशविध समाधि हो ।
भाराधो साधा मिश्र सु कांइ, तासु करूं विस्तार ॥सां०॥१॥

जैन धर्मवर पाइ हो सुखदायक कल्पतरु समा कांइ,
कमी रहे नहीं कांय इह भव परभव मांइ हो ।
सुखदाता विलास सु कांइ पामे हर्ष सवाय ॥सां०॥२॥

आवी समरस ध्यान हो भव आवे पूर्व जन्म का कांइ,
नवसे सप्तो ज्ञान भाप भमे पर केव हो ।
तेह आवे आयु प्रमाण मे कांइ मतिज्ञान पहिचाना ॥सां०॥३॥

मृगा पुत्र महेला में हो बली पामें भव मुनिश्वर कांइ,
मल्लिनाथ पदमित्र मृगु मोहिता मन्मन हो ।
संजेती राजा आदि दे कांइ कीधो भव पुरण अस्त ॥सां०॥४॥

स्वपन अथा तथ्य देखे हो विराग आमन्द उपजे कांइ,
पामे रिध सहार, कोई मुक्त पद पावे हो ।
जिम श्री जिनमाता आदि दे कांइ, मगधपति अधिकार ॥सां० ५

देव तथा ऋद्धि दरशन हो तस मसत्व चित्त होवे अति कांइ,
समदृष्टि जिम सेम कुम्भकार सकडाल हो
समझावो सोमल जिम मे कांइ पाम्यो समकित पम ॥सां० ६

अवधि ज्ञान पहिचानो हो बखाण्यो मही सूत्र में कांइ,
आनन्द श्रेणी कुमार आर्य सिंह सुर जैसे हो ।
निज ठाम थकी पूछा करें कांइ पामे अर्थ विचार ॥सां०॥७

अवधि संग लेइ आवे हो, श्री जिनवर जननी कुंख में कांइ
जाने जगत स्वरुप, अवधि दर्शन देखे हो ।
इम दाख्यो छट्ठे वोल मे कांइ, आगम वचन अनूप ॥सां०॥८

मन पर्यवसुं जाणे हो, पिछाणे मनरी वारता काइ
अढी द्वीपरी मान, लब्धिवन्त मुनिराया हो ।
गुण गाया जेहना सूत्र में काइ, पामे पद निर्वाण ॥सां०॥९

केवल ज्ञान ने दर्शन हो, दोय भेद कह्या अरिहंतजी, कांइ,
लोकालोक विचार, सवही जाणे देखे हो ।
तीर्थङ्कर गणधर केवली कांइ, वंदू वारवार ॥सा०॥१०॥

कर्म रिपु ने हटावे हो, तव पावे चित्त समाधि ने कांइ;
करे सकल दुःख अन्त, आठमे अंगे भाख्यो हो ।
तिहां नेउ जणा शिव पामिया, काइ पाम्या सुख अनंत ॥सा०११

समवायांगमे दाख्या हो, हे नाम दशाश्रुत खन्दे में काइ;
आगम सास्त्र प्रमान, अमीरिख इम वोले हो ।
ये वोल अवोल प्रभु कह्या काइ, धारो विवुध सुजान ॥सा०॥१२

श्री प्रथम सम्प्रदायाधीश श्री कान्हजीऋषिजी महाराज के नाम की महिमा ।

नाम जपो श्री नव कोडो ॥ यह देशी ॥

पूज्य कान्हजीरिखजी गुणधारी, जारा नाम तणी महिमा भारी ।
नित प्रात समय उठ याद करो, पुज्य कान्हजीरिखजी सुमरो॥१॥

पूज्य नाम थकी मंगल माला, भय अष्ट तणा होवे टालो ।
मनकामी जोग मिले सगरो ॥पूज्य०॥२॥

डायण सायण कोई नहीं आवे, भय भूत प्रेत दूरा भागे।
पूज्य रोग शोग दुख कष्ट हरो ॥ पू० ॥३॥
पूज्य नामे सघला काम सरे देखी दुश्मन नहीं दखल करे।
ठग चोर पिशुन से नाहिं डरो ॥ पू० ॥४॥
पुत्रादिक बहु परिवार घरे तसु समाकमा सपदि उवारे।
पूज्य नामे नित्य आनन्द करो ॥ पू० ॥५॥
धनीराम पद सत्कार करे, वस बिगड्यो काज तुरत सुधारे।
पूज्य नाम तणो आधार धरो ॥ पू० ॥६॥
वैपार माहिं बहु लाभ मिले मन वांछित आशा सफल फले।
रिद्ध सिद्ध लक्ष्मी भंडार भरो ॥ पू० ॥७॥
दुख दोहग पातिक दूर कपे नरनारी जो शुद्ध भावे जपे।
मनको सब संशय दूर धरो ॥ पू० ॥८॥
मिश्र सम्प्रदाय प्रतिपाल करे, अमीरिख सदा शुभ ध्यान धरे।
एक माला को नित्य नैम करो,॥ पू० ॥९॥

नित्य कृत्य लोकोत्तर व्यापार वर्णन।

मानवरी जिन वंदिये ॥ यह देशी ॥

पूर्वे पुन्ये प्रगटियो मनुष्य जनम परमातोरे।
मोह नींद में परिहरो जागि जपो जगनाथोरे ॥
चेतन चित्त विचारियो ॥१॥
लहि अवसर अति सारोरे धर्म क्रिया विध सांचवो।
जिम होवे भव पारो रे ॥ चेतन० ॥२॥
जिनवाणी पूर्व दिशा ज्ञान भानु प्रगटाणोजी।
भविक हृदय पकज खुल्या मिथ्या तिमिर मिटाणोजी ॥चे०३

धर्म मारग मालूम हुवो, नवकार दातन लीजेजी ।
ध्यान रूप जल लेइ करी, इम मुख निर्मल कीजेजी ॥चे०॥४॥
सियल सरोवर सोहतो, स्नान करो हरखाईजी ।
पातिक मेल परवालीये, पवित्र करो तन नांइजी ॥चे०॥५॥
समकित वस्त्र पहेरिये, संजम भूषण अंगेजी ।
समता दुकान पै बैठके, कर उद्यम मन रंगेजी ॥चे०॥६॥
धर्म कमाई कीजिए, संचो तप जप नाणोजी ।
करज चूकावो करम को, जिम लहिये निरवानोजी ॥चे०॥७॥
अजर अमर सुख पामिये, जनम मरण मिट जावेजी ।
कहत अमीरिख सिद्ध की, अविचल पदवी पावेजी ॥चे०॥८॥

उपदेशी पद ।

नरभव विरफल जायरे तेरो संजम विनारे ॥ यह देशी ॥

अवसर वीत्यो जायरे, नर चेत सयाना ॥ टेर ॥
जोवन रंग पतंग सरीखो, जाय खिण खिण में पलटायरे ॥न०
धन रामा कछु काम न आवे, तामें क्यों विरथा ललचायरे ॥न०
स्वार्थ से सब सयण कहावे, येतो गरज सरे फिर जायरे ॥न०
राग द्वेष दोइ ठग दुखदाई, निज सम्पद धन क्यों लुटायरे ॥न०
पाप कमाय गमाय धरम कूं, फिरे चौगत गोता खायरे ॥न०
निज मारग बिन इण जग माहि, नहिं अवर तिरन को उपायरे ॥न०
कहेत अमीरिख अवसर चूकां जासी भवजल माहि तणायरे ॥न०

सातवार का उपदेशी ।

चन्द्रायणा ।

दीतवार कहे देव श्री अरिहन्त रे।
गुरु पच व्रतधारी निग्रन्थरे॥
जीव दया में धर्म कह्यो भगवन्तरे
यही रत्नत्रय आप मुगत को पधारे।
मन वच तन करि धार लहे सुख सन्तरे॥ परदांजी॥
इस बिन भमियो चेतन काल अनन्तरे,
चेतो भव प्राणी वाणी चित्त धरो श्री गुरु देव की॥१॥

सोम कहे क्यों सुतो मूढ़ अचेतरे
निश दिन सिर पर काल नगारा देतरे।
पर उपकारी सज्जन दया करि लेतरे,
परभव जातां पुन्य पाप संग लेतरे ।
इम जाणी नित करो धर्म सु हेतरे॥ परदांजी॥
दोही अज्ञानी जीव भेद नहीं लेतरे॥ चे०॥२॥

मगल कहे मत राच विषय सुख मा सहे
जीरम पम जिम संध्या माव प्रकाश है।
कनक कामनी जगमें मोटी पास है
इस में बध्यो मन मामे सुख विलास है॥ परदांजी॥
अल्पसुख परभव में दुख की रास है॥ चे०॥३॥

बुधवार कहे बुरी संगत तज दीजिये
जूवा खेल तज मांस भक्षण नहीं कीजिये।
सुरा व्यसन है मद्य पान नहीं पीजिए,
वैश्या कपट की खान दूर टल दीजिए।

जीव घात पर धन पे चित्त नहीं दीजिये ॥ परहांजी ॥
पर नारी की सङ्ग नरक दुख लीजिये ॥ चे० ॥४॥
वृस्पत इन्द्रि के वश नहीं पडिये कोयरे,
श्रोतेंद्रिय वश हिरन प्रान दिया खोयरे।
दीपक ज्योति पतंग नयन वश जोयरे,
भ्रमर पुष्प के मांहि गंध वश होयरे।
रसना मीन विनाश करी तन खोयरे ॥ परहांजी ॥
पञ्चा पांच वश जीव कौन गति होयरे ॥ चे० ॥५॥
शुक्रवार कहे सुकृत करणी साधरे,
अभय सत्य दत्त ब्रह्म वृत आराधरे।
तज समता निश भोजन मत अस्वादरे,
कठिन पुन्य से मानव नो भव लाधरे।
करो धर्म अरु ध्यान छोड़ परमादरे ॥ परहाजी ॥
इण करणी से पांमे जीव समाधरे ॥ चे० ॥६॥
थावर कहे मन चंचल थिर करि राखरे,
परकूं होवे दुख वचन मत भाखरे।
श्रवणों श्री जिन वचन सुधारस चाखरे,
राखो ज्ञान विवेक मिथ्या अघनाखरे ॥ परहाजी ॥
मोक्ष जाने की राखो चित्त अभिलाखरे ॥ चे० ॥७॥
सातवार कहे वारवार चेतावरे,
नहीं फिर ऐसो देख धर्म चित्त लायरे।
पर उपकारी सन्त कहे समझायरे,
जो माने हित केन सदा सुख पायरे।
पाप प्रसंगे रूले चौरासी मायरे ॥ परहाजी ॥
कहत अमीरिख धर्म मोक्ष सिधायरे ॥ चेतो भव प्राणी ॥८॥

श्री पांच पांडव की सज्झाय ।

भरी बाल चमकती क्यो म्होलारि नीचे कूण हे ॥ यह देशी ॥

पांडव सुखकारी, समता रस धारी आतमा ॥ टेर ॥

बीचर श्री जिन नेम का सरे हस्त नागपुर आया
पांडव सुन वन्दन गया सरे मुनि उपदेश सुनाया ।
लगा बाण वैराग का सरे संजम चित में भाया ॥ पां० ॥१॥

कर जोड़ी अरजी करे सरे देइ पुत्र ने राज,
पांचू संजम आदर्यो सरे लेवा शिव सुख साज ।
जिम सुख होवे तिम करो सरे नहीं ढील मो काजरे ॥पां०॥२॥

मुनि वदी घर आविया सरे राज काज मंझार
दीधो निज नन्दन भणी सरे आया मंदिर मझार ।
सती द्रौपदी से कहे हमे, लेस्यां संजम भार हो ॥पां० ॥३॥

वचन सुणी कहे महासती सरे सुख पिय इच्छा एह
पे आण एवमा कारमी सरे राखो धर्म से नेह ।
तप संजम प्रभाव से सरे होवे भव दुख छेह हो ॥पां०॥४॥

महोत्सव कर बीचर वन्दे सरे आया अधिक उमंग,
पंच परमेष्ठी लोचन करी सरे संजम लियो मन रंग ।
तप जप किरिया आदरी सरे भण्ये इग्यारे अङ्ग ॥ पां० ॥५॥

मास २ तप पारणो सरे कियो अभिग्रह सार,
जिहां लग नेम प्रभु तणा सर देखां नहीं दीदार ।
आज्ञा ल बीचर तपी सरे पांडव कीय बिहार हो ॥पां०॥६॥

वास्या प्रभु ने वन्दवा सरे हस्ति कल्प पहिचान
नगर मांहि तप पारणे सरे, गोचरी गया सुजान ।
सुणियो तिहां जन मुख थकी सरे प्रभु होता निर्वाण ॥पां०॥७॥

बैंगण को भड़तो कियो सरे, लूण मिरच्च छिमकार,
तिणने पचावे अगन में सरे ऊपर सींचे खार।
बांध तांतो सोहिला सरे, उदय भया दुखकार हो ॥तु०॥१०॥

ऊंचा चढ़ने डाकता सरे, नदी नीचाणे जाय,
सिला बांध तेहणे गले सरे, नाखे वैतरणी मांय।
पकड़ झकोले नीर में सरे, अङ्ग सभी गल जाय हो ॥तु०॥११

बाग बगीचा देखतो सरे, करतो आरम्भ पाप,
कुट सामली हेटे जाइ, बेसाडे तेह आप।
पांन पडांता अङ्ग कम्पावे, करतो घणा विलाप हो ॥तु०॥१२

परनारी ने सेवता सरे, माठी दृष्टि लगाय,
अगन वरन कर पुतली, तिणसुं दे चिपकाय।
ख्याल तमासा देखतो सरे, नेत्र शूल चलाय हो ॥तु०॥१३॥

राग तणो रसियो हुंतो सरे, सुण २ तोड़े ताण,
परमाधामी तेहना सरे, कापे दोनूं कान।
फूल बगेरा सूंघतो सरे, छेदे नासिका ताण हो ॥तु०॥१४॥

छेदन भेदन हरी काय ने, करता मन धर होंस,
रसना छेदे जड़ा मूल से, पण नहीं चाले जोस।
आप किया फल भोगवे सरे, नहीं किसी का दोष हो ॥तु०१५

कुंड अठारे जात का सरे, कीटक मांहि अगाध,
तिण में नाखे पकड़ने सरे, सिला छाती बांध।
वेदन परवश भोगवे सरे, करमां तणी उपाध हो ॥तु०॥१६॥

पांच कोड़ रोग तन छाया, अड़सठ लाख विचार,
सहस्र चोरानूं पांच से सरे, वली चोरासी धार।
राग वशे व्याकुल अति सरे, साता नहीं लगार हो ॥तु०॥१७

वैंगण को भड़तो कियो सरे, लूण मिरच छिमकार,
तिणने पचावे अगन में सरे ऊपर सींचे खार।
वांध तांतो सोहिला सरे, उदय भया दुखकार हो ॥तु०॥१०॥

ऊचा चढ़ने डाकता सरे, नदी नीवाणे जाय,
सिला वांध तेहणे गले सरे, नाखे वैतरणी मांय।
पकड़ झकोले नीर में सरे, अङ्ग सभी गल जाय हो ॥तु०॥११

बाग बगीचा देखतो सरे, करतो आरंभ पाप,
कुन्ट सामली हेटे जाइ, बेसाडे तेह आप।
पान पडांता अङ्ग कम्पावे, करतो घणा विलाप हो ॥तु०॥१२

परनारी ने सेवता सरे, माठी दृष्टि लगाय,
अगन वरन कर पुतली, तिणसुं दे चिपकाय।
ख्याल तमासा देखतो सरे, नेत्र शूल चलाय हो ॥तु०॥१३॥

राग तणो रसियो हुंतो सरे, सुण २ तोड़े ताण,
परमाधामी तेहना सरे, कापे दोनूं कान।
फूल घणेरा सूंघतो सरे, छेदे नासिका ताण हो ॥तु०॥१४॥

छेदन भेदन हरी काय ने, करता मन धर हौंस,
रसना छेदे जड़ा मूल से, पण नहीं चाले जोस।
आप किया फल भोगवे सरे, नहीं किसी का दोष हो ॥तु०१५

कुंड अठारे जात का सरे, कीटक मांहि अगाध,
तिण में नाखे पकड़ने सरे, सिला छाती वांध।
वेदन परवश भोगवे सरे, करमां तणी उपाध हो ॥तु०॥१६॥

पांच क्रोड़ रोग तन छाया, अड़सठ लाख विचार,
सहस्र चोरानूं पांच से सरे, वली चोरासी धार।
राग वशे व्याकुल अति सरे, साता नहीं लगार हो ॥तु०॥१७

मरूभूमा की मारूस सरे जैसो उछसे पाम
तैसे पापिया निरिया सरे उछले से तिण स्थान।
पांच से जोजन केपरिमाणे, पाणी दुख असाल हो ॥सु०॥१८
महा नगर के दाहसु सरे, कोलाहल जिम होय,
तैसे नारकी नरक में सरे शब्द पुकारे रोय।
मारया ने मारा नहीं सरे, पाप तणा फल जोय हो ॥सु०॥१९
दुख अमन्ता पाविया सरे, कहेता पार न पाय
के आले तस आतमा सरे के आपे जिनराय।
तिण कारण भव प्राणिया सरे धर्म किया सुख थाय हो ॥सु०२०
उगणीसे पावन मलो सरे पिपलोदा के मांय
कुवार शुद एकम गुरुवारे सुखारिख महाराय।
अमीरिख इण विध कहे सरे भावे भविजण हाय हो ॥सु ॥२१॥

देव गुरु चिपे सावणी।

साय मेरी रसिये मगारी ॥ यह देशी।

ऐसे मारग है मुगती का कठिन है साधन मुगती का ॥टेर
म ो मित देव अरिहन्ता नाम दर्शन केवलमन्ता।
किया घनघाति कर्म अन्ता सहस अठ लक्षण सोभन्ता॥
दोहा–चौतीस अतिशय दीपतो पैंतीस वचन विचार।
तारे भव प्राणी सदा करत महा उपकार॥
बतावे मारग मुगति का रे॥ ऐसे०॥१॥
गुरु निर्ग्रंथ है सुखकारी पांच शुद्ध महाव्रत के धारी।
सुमति गुपति तप आधारी, चले जिन आज्ञा अनुसारी॥

दोहा-बावीस परिसह जीतता, जीत्या विषय विकार।
दर्शन ज्ञान चारित्र है, मोह ममत परिहार॥
तजा सब कारन कुगति का॥ जैन०॥२॥
धर्म जिन भाषित आदरिये, जीव की करुणा नित करिये।
सर्व अनुव्रत चित्त में धरिये, करम तज भवसागर तिरिये॥
दोहा-दानादिक चौभेद को, धारो निज चित्त मांय।
इण समान तिहु लोक में, धर्म दूसरो नाय॥
भावधर मन सुमती का॥ जैन०॥३॥
मान निरवद्य प्रभु का कहना, हृदय को खोल देख लेना।
जैन बिन और सकल फेना, मिथ्यामत दूरा तज देना॥
दोहा-ये जग सर्व असार है, चेतन मत ललचाय।
ओस बिन्दु अरु दामिनी, स्वपना सम दरशाय॥
विषय सुख जान जहर फीका॥ जैन०॥४॥
कनक कामनका जग फन्दा, चतुर क्यों होय रहा अन्धा।
तजो सब पातिक का धन्धा, भजो श्री जिनवर जग चन्दा॥
दोहा-तारक धर्म प्रधान है, कहे सतगुरु समझाय।
जो धारे सुध भाव से, तो भव जल तिरजाय॥
अमीरिख धार पंथ नीका॥ जैन०॥५॥
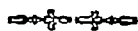
विंशति दल कमल बंद लावणी।

देशी पूर्ववत्।

सदा गुरुदेव जपो ज्ञानी, बतावे मारग सुखदानी॥ टेर॥
सर्व सुख संपद की खानी, दायक आनन्द भर्म भानी,
गुरु सम नहीं कौ सुखदानी, रूप निज गुन का ले जानी।
देत सुध सीख हर्ष आनी॥ बतावे०॥१॥

बरयो क्यों पातिक अगयानी, आपे नहीं भी जिनवर स्यामी।
पोषतो परग्रुम कु मामी, काम नहीं आरे अभिमानी ॥
मीठ ये मिली तिरन ढाबी ॥ बतावे० ॥२॥
बसे जो चित्त सुमति रानी, ताप त्रय आवे विरलानी।
वेग होवे भव दुख हानी मान शुभ तत्त्व हिये आनी ॥
रत्न चिन्तामण सम जानी ॥ बतावे० ॥३॥
गहो गुरु चरण शरण मानी, सुगति की यही निसयानी।
धारो जिनपंथ चित्त ठानी सामायिक धारो हित आनी ॥
नित्य कहे अमीरिख बानी ॥ बतावे० ॥४॥

उपदेश पचीसी।

गजल मत रहरे ॥ यह देशी ॥

धर्म चित्त धरो मेरी जान, धर्म चित्त धरले नादान।
धर्म चित्त धरले धर्म बिन भव वन में भमियो ॥
विषय वश अनन्त काल भमियो, धर्म चित्त धरले ॥ टेक ॥

रुलियो चारु गति मांहि शुभ अशुभ कर्म भुगतांई।
किये जनम मरण अधिकाई राग और द्वेष हिये व्यापो ॥
छिनक कहुं चैन नहीं पायो ॥ ध० ॥१॥
कबहु जीव नरक सिधावे छेदन भेदन को दुख पावे।
अति व्याकुल हो पछतावे सही परवश में मार भारी ॥
वेदन वेदन विपता भारी ॥ ध० ॥२॥
कबहु पशु पराधीन, स्थावर जंगम अधिकारी।
बध बन्धन दुख सब भारी जनम और मरण घणी सहियो ॥
निगोदे अनन्त काल रहियो ॥ ध० ॥३॥

शुभ उदय लहि सुरगतको, तिहां देखी पर संपत को।
आरत लायो निज चित्त को, फूल की माला कुमलानी॥
देख मन में झुरना आनी॥ घ० ॥४॥

पूरव सुकृत बल जोई, भव मनुष्य तणो जो होई।
तिहां सर्व सुखी नहीं कोई, कमाया कर्म उदय आवे॥
जीव सुख दुख जग में पावे॥ घ० ॥५॥

जिया आर्य क्षेत्र में आना, दुर्लभ उत्तम कुल पाना।
शुभ आयु दीर्घ शीर थाना, पंचेंद्रिय रोग रहित देही॥
सुगुरु का जोग भला लेही॥ घ० ॥६॥

शुद्ध शास्त्र धर्म निज भाख्यो, मिलवो मुश्किल अति दाख्यो।
शुद्ध सरधा समकित राख्यो, प्ररुपन पालन समभावे॥
अति दुर्लभ जिन फरमावे॥ घ० ॥७॥

ऐसे अवसर को पाई, जिणे करी न धर्म कमाई।
रहे फिर मन में पछताई, चिंतामण सम अवसर हारी॥
लहे भव भव में दुख भारी॥ घ० ॥८॥

नर अथिर सुखो में भूल्या, जोवन धन देखी फूल्या।
निज गुण सम्पद को भूल्या, हुआ मद मोह मांहि अन्धा॥
करत है पाप तणा धन्धा॥ घ० ॥९॥

मात तात है स्वार्थ केरा, सुत नार भाई नहीं तेरा।
क्यों करता मेरा मेरा, दिशो दिश जिन कारन ध्यावे॥
कोई नहीं संग तेरे आवे॥ घ० ॥१०॥

है जग आंतम सुख हरना, एक दिन सब छोड़ बिछरना।
जिन धर्म विना नहीं शरणा, कर्म फल उदय होय भाई॥
कोई नहीं साज देत आई॥ घ० ॥११॥

दिन दिन छिन होवे काया मृत्यु का भय शिर छाया ।
जब काल थपेड़ लगाया, छोड़ तन धन को सिधावे ॥
कोई नहीं संग तेरे आवे ॥ ध० ॥१२॥

रिपु काल लगा संग तेरे क्यों गाफिल इत उत है रे ।
पल मांहि पकड़ के गेरे सिंह ज्यों पकड़ लेत हिरना ॥
आय तब कौन रखे शरना ॥ ध० ॥१३॥

ज्यों मूसा पकड़े मंजारी तीतर को बाज शिकारी ।
मक्खी को पकड़ी ज्यारी इसी विधि काल आय गटके ॥
कर्म की दुर्गत में पटके ॥ ध० ॥१४॥

धन जोड़ भया भंडारा है अरब खरब नहीं पारा ।
जब चलती वखत निहारा पसारी हाथ चला जावे ॥
संग में कौड़ी न आवे ॥ ध० ॥१५॥

यह तन से ममता कैसी, छिन मांहि बना है देसी ।
इनकी गति जानो ऐसी करो तप जप संजम भाई ॥
सार है इतना इस मांहि ॥ ध० ॥१६॥

ज्यों पानी बीच पतासा ढलि सन्ध्या मान बताशा ।
तैसा इस तन का तमाशा अथिर ज्यों इन्द्र धनुष जानो ॥
शंका कछु इसमें मत आणो ॥ ध० ॥१७॥

ज्यों बाजीगर का खेला अथवा होय महोत्सव मेला ।
तस लोक होय यह मेला आप सब भिन्न २ परताई ॥
कैसे परिवार मिल्यों भाई ॥ ध० ॥१८॥

घोड़ा रथ पायक हाथी बहु देश गाम और न्याती ।
नहीं तरा संगी साथी रावण सरीखा केर राया ॥
जिसका कहीं पता न पाया ॥ ध० ॥१९॥

जग सुख सव अथिर कहावे, नर मूरख मोह वढ़ावे।
ज्ञाता जन नाहिं ठगावे, लखे जड़ चेतन को ज्ञानी ॥
सदा चित्त धारे जिनवाणी ॥ घ० ॥२०॥

जव लग तन वृद्ध न थावे, वली रोग निकट नहीं आवे।
इन्द्रिय वल नाहिं घटावे, धर्म किरिया तव लग कीजे ॥
जेम परभव में सुख लीजे ॥ घ० ॥२१॥

जिन धर्म हिया मे धारो, पंचाश्रव पाप निवारो।
ज्यों होवे भव निस्तारो, करो श्री सतगुरु का कहना ॥
कर्म वन्धन से डरते रहना ॥ घ०॥२२॥

जिनराय यही फरमावे, करनी जैसा फल पावे।
विन भुगत्यां नाहिं छुड़ावे, समझ यों सुकृत सङ्ग लीजे ॥
जोग नरभव को सफल कीजे ॥घ०॥२३

चार कोस गामांतर जावे, खरची सङ्ग वांध सिधावे।
सुकृत को क्यों न कमावे, विना खरची परभव मांई ॥
झुरेगा मन में पछताई ॥ घ० ॥२४॥

ज्ञानी गुरु का ये कहना, करना सो धर्म कर लेना।
फिर हमको दोष नहीं देना, अमीरिख कहने का गरजी ॥
आगे भव्य जीवन की मरजी ॥घ०॥२५॥

यह कही उपदेश पचीसी, है सीख सार मधुसी।
मिथ्या भर्म रोग जरी सी, धर्म से कटे काल फासी ॥
होयगा शिवपुर का वासी ॥ घ० ॥२६॥

मनुष्य भवादि की दुर्लभता ।

मोक्ष मग पाना कठिन है रे ॥ यह देशी ॥

मनुष्य भव पाना कठिन है रे ॥ टेर ॥
काल अनन्त चारगत भटकायो, बहुत दुख देखा ।
करेवी दुख लेखा, गिणत का बताना कठिन है रे ॥ म० ॥१॥
पंच प्रमाद कर्म वश होके, आतम गुण खोया ।
विषय संग मोया धर्म चित लाना कठिन है रे ॥ म० ॥२॥
आरज देश उत्तम कुल लीनो सुकृत करि पायो ।
सुगुरु समझायो, धर्म चित लाना कठिन है रे ॥ म० ॥३॥
धन जोबन में राची रह्यो है, पातिक अति कीनो ।
ममता मांहि भीनो, प्रभुगुण गाना कठिन है रे ॥ म० ॥४॥
सुकृत काम रती नहीं कीनो जनम यूं ही बीतो ।
धर्म बिन रीतो सुगत पंथ आना कठिन है रे ॥ म० ॥५॥
कहत अमीरिख समझ सयाना भरम सब त्यागो ।
सुमत पंथ लागो, जोग फिर आना कठिन है रे ॥ म० ॥६॥

मुनि गुण वर्णन ।

देशी पूर्ववत् ।

ऐसे मुनिवर धन धन है रे ॥ टेर ॥
तन धन कुटुम्ब अथिर सब जानी सुमत चित आनी ।
जगत सुख त्यागी करत पंचेंद्रिय दमन है रे ॥ ऐसे० ॥१॥
कंचन कांच एक सम लेखे, राग नहीं रीसा ।
विषय बस पीसा, करत पद आप जतन है रे ॥ ऐसे० ॥२॥

दुक्कर परिसह सहत निरंतर, महा तपधारी ।
परम उपकारी, अचल मन काय वचन है रे ॥ ऐसे० ॥३॥
पञ्च महाव्रत सुमत गुपत चित सुध मन पाले ।
आरति सब टाले, सदा अरिहन्त शरण है रे ॥ ऐसे० ॥४॥
धर्म शुक्ल शुभ ध्यान आराधे, संजम धर चित्ते ।
कर्म रिपु जीते, हरत सब जनम मरण है रे ॥ ऐसे० ॥५॥
कहत अमीरिख शिव सुखदाता, ऐसे गुरु ज्ञानी ।
सेवोजी भव प्राणि, सकल दुख विपत हरन है रे ॥ऐसे०॥६॥

अज्ञान कष्ट से मोक्ष चाहने वालेको हित शिक्षा ।

मुझे छोड चला बनजारा ॥ यह देशी ॥

क्यों नाहक कष्ट उठावे, बिन दया मोक्ष नहीं पावे ॥ टेर ॥
कोई रहे ऊन्धे सिर लटके, घर छोड़ तीर्थ को भटकेजी ।
कोई गंगा जल में न्हावे ॥ बिन० ॥१॥
कोई जोगी तपी सन्यासी, फिर बन में बनके उदासीजी ।
कन्द मूल फूल फल खावे ॥ बिन० ॥२॥
कोई गोकुल मथुरा काशी, जगन्नाथ रामेश्वर वासीजी ।
कोई द्वारका छाप लगावे ॥ बिन० ॥३॥
केई तापे पंच अगन को, कोई साधे दृढ़ आसनकोजी ।
कोई टाढे हाथ सुकावे ॥ बिन० ॥४॥
धरे मुद्रा कान फड़ावे, शिर मूंढे जटा बढ़ावेजी ।
तज बिस्तर खाक रमावे ॥ बिन० ॥५॥
वजु शिजदा निमाज को धारे, रहे रोजा बाग पुकारेजी ।
ले तसबी हाथ फिरावे ॥ बिन० ॥६॥

पूजे मूरति संध्या ध्यावे, बड़ पीपल तुलसी पुजावेजी।
साखी पद कथा सुनावे ॥ जिन० ॥७॥
कोई ताल मृदंग बजावे पग घूघर पहन रिझावेजी।
अमीरिख कहे वे भ्रमम गमावे ॥जिन०॥८॥

सत्य क्रिया से मोक्ष निरुपण।

देशी पूर्ववत्।

दया दान काया वश लावे, जीव सहेज मुगत पद पावे ॥टेर॥
देव गुरु धर्म सुध जाणी रहे सत्य धर्म में रत्नी जी।
सुध समकित चित्त बसावे ॥ जीव० ॥१॥
सबजीव आतम समजाने सुख दुःख तुल कर आमेजी।
नहीं किंचित हने हनावे ॥ जीव० ॥२॥
देव झूठा वचन को त्यागी रहे सत्य पथ अनुरागी।
नहीं सावद्य वचन सुहावे ॥ जीव० ॥३॥
पर वस्तु धूल सम देखे, सब नारी मात सम लेखेजी।
चित्त सिपल धरे शुभ भावे ॥ जीव० ॥४॥
सब परिग्रह ममता छोड़े सब आश्रव से मन मोड़ेजी।
शुद्ध संयम में चित्त लावे ॥ जीव० ॥५॥
तप दुःकर द्वादश साधे जिन आज्ञा शुद्ध अराधेजी।
राग द्वेष कषाय हटावे ॥ जीव० ॥६॥
शुक्ल ध्यान धर्म मन ध्यावे रिपु आठ कर्म को घावेजी।
अमीरिख कहे मोक्ष सिधावे ॥जीव०॥७॥

तेने फोगट जनम गमायो ।

देशी पूर्ववत् ।

महा दुर्लभ नरभव पायो, तेने फोगट जन्म गमायो ॥ टेर ॥
शुद्ध समकित चित्त नहीं दीनो, रह्यो पाखण्ड मतमें भीनोजी ।
मिथ्यामत घट में छायो ॥ ते० ॥१॥
अरिहन्त देव नहीं ध्याया, तेने भेरु भवानी मनायाजी ।
कुदेव से चित्त रमायो ॥ ते० ॥२॥
सतगुरु संगत नहीं भावे, पर पाखण्डी गुण गावेजी ।
तुं कुमति में भरमायो ॥ ते० ॥३॥
धर्म को मरम नहीं जान्यो, नहीं शुद्धाशुद्ध पिछान्योजी ।
रहा भरम तेरे घट छायो ॥ ते० ॥४॥
नहीं आतम कारन साध्या, अति कठिन कर्म तेने बांध्याजी ।
जीव मरन सम पछतायो ॥ ते० ॥५॥
तिन कारण सुन भव प्राणी, धारो जिन धर्म सुखदानी ।
अमीरिख कहे सुख सवायो ॥ते०॥६॥

मदछके जन को चेतावनी ॥ लावणी ॥

क्यों खफा हुए बेवफा जबरदस्ती से ॥ यह देशी ॥

क्यों रहा जगत में भूल मगर मस्ती से ।
एक रोज चला जावेगा मनुष्य बस्ती से ॥ टेर ॥
तेने लक्ष चौरासी भटक २ दुख पाया,
करि सुकृत करणी मनुष्य भव में आया ।
खाना पीना जग ऐश क्रिया मन चाया,
करि कपट झूठ परपंच माल ठग खाया ॥
भवसागर में डूबेगा पाप किस्ती से ॥ एक० ॥१॥

ये मोह जाल का पड़ा तेरे पर फन्दा
धन कुटुम्ब काय पर रहा करे मग धंधा।
नहीं चले संग कोई होई रहा क्यों अन्धा?
क्यों जोर जुलम करता है और पै बंदा।
सुख ऐश मिलेगा तुझे राह रस्ती से ॥ एक० ॥२॥
ये क्रोध मान मद लोभ तेरे घट छाया,
जब पाप उदय आने से जीव घबराया।
क्षण एक नहीं तूने जिनवर गुण को गाया,
सब दौलत दुनिया छोड़ मौत में आया।
तुझे काल पकड़ ले जागा जबरदस्ती से ॥एक ॥३॥
जो भवसागर से पार उतरना चाहो,
शुद्ध धर्म करायो जगत मीत सिखलाओ।
एक चोरी झूठ कामन मन को तज जाओ
यों कहत अमीरिख जीव दया चित लाओ।
मत किसी के दिल को सता जोर दस्ती से ॥एक०॥४॥

श्री देवाधिदेव विज्ञप्ति
पद तिल्लाना।

स्वामी तुम बिन हमारी सुने कौन अरज ॥ टेर ॥
हरि हर ब्रह्मा मिथ्यामति देव धर्मे मानेजी अज्ञान पने।
बीतो है अनन्त काल सारी ना गरज ॥ स्वा० ॥१॥
विषय कषाय मादमद धारे चित्त इन्द्रियन से करी मीत।
करम रिपु को सिर चढ़यो है करज ॥ स्वा० ॥२॥

जनम मरण जरा, व्याधि रोग शोक अति भमायो चतुर्गति ।
जिन वचन सुन अब जान्यो है मरज ॥ स्वा० ॥३॥
ज्ञान दर्शन शुद्ध संजम आतम गुण, चाहत सुमत मन ।
कर्म रिपु को भय दीजिये वरज ॥ स्वा० ॥४॥
अजर अमर अविकार निराकार अज सकल सुधार करत ।
तुम गुण सुन मन आवे अचरज ॥ स्वा० ॥५॥
धन धन दीनानाथ दीन के उद्धार कीन्हें, अविचल सुख दीन्हें ।
अमीरिख चाहे तुम चरणों की रज ॥ स्वा० ॥६॥

प्रभु तुम विन कोई नहीं ।

राग पूर्ववत् ।

प्रभु तुम विन कोई नहीं तारन तिरन ॥ टेर ॥
जनम मरन रोग भयो है जगत वीच, फस्यो राग द्वेष कीच ।
परगुन राच भयो भव में फिरत ॥ प्र० ॥१॥
अथिर जगत धन जोवन स्वप्न स्मम, रह्यो तिण मांहिं रत ।
दुरगत जात नहीं राखत शरन ॥ प्र० ॥२॥
काल विकराल व्याल फौज सज आय, घेरे कोई न सहाय ।
तेरे सज्जन सनेही सव होय विछुरन ॥ प्र० ॥३
तुम हो दयालनाथ सेवक को गहो हाथ, अव क्यों छोड़ूं साथ ।
आरति विपत भव भ्रमन हरन ॥ प्र० ॥४॥
और मिथ्या मति देव जान्या है, असार सव पाय जिनदेव अव ।
और गैर ममै कौन कुगति परन ॥ प्र० ॥५॥
तुमसे अदोषी देव, पुन्य के उदय से पाय जाचुं अवकित जाय ।
अमीरिख भाव धरि गहा है चरन ॥ प्र० ॥६॥

ये मोह जाल का पड़ा तेरे पर फन्दा,
धन कुटुम्ब काज एष रहा करे जग धंधा।
नहीं चले संग कोई होई रहा क्यों अन्धा?
क्यों जोर जुलम करता है और पै बंदा।
सुख ऐश मिलेगा तुझे राह दस्ती से ॥ एक० ॥२॥
ये क्रोध मान मद लोभ तेरे घट छाया,
अब पाप उदय आने से जीव घबराया।
क्षण एक नहीं तूने जिनवर गुण को गाया,
सब दौलत दुनिया छोड़ मौत ने आया।
तुझे काल पकड़ ले जाता जबरदस्ती से ॥एक०॥३
जो भवसागर से पार उतरना चाहो,
शुद्ध धर्म धरायो जगत मीत हितकाओ।
तज चोरी, झूठ कामन धन को तज जाओ
यों कहत अमीरिख जीव दया चित लाओ।
मत किसी के दिल को सता जोर दस्ती से ॥एक०॥४

श्री देवाधिदेव विज्ञप्ति

पद दिल्लाना।

स्वामी तुम बिन हमारी सुने कौन अरज ॥ टेर ॥
हरि हर ब्रह्मा मिथ्यामति देव भये, मानेजी अज्ञान पने।
बीतो है अनन्त काल सारी ना गरज ॥ स्वा० ॥१॥
विषय कषाय मादमद् धारे किस इन्द्रियन से करी प्रीत।
करम रिपु को सिर चढ्यो है करज ॥ स्वा० ॥२॥

जनम मरणं जरा, व्याधि रोग शोक अति भमायो चतुर्गति।
जिन वचन सुन अब जान्यो है मरज ॥ स्वा० ॥३॥
ज्ञान दर्शन शुद्ध संजम आतम गुण, चाहत सुमत मन।
कर्म रिपु को भय दीजिये वरज ॥ स्वा० ॥४॥
अजर अमर अविकार निराकार अज सकल सुधार करत।
तुम गुण सुन मन आवे अचरज ॥ स्वा० ॥५॥
धन धन दीनानाथ दीन के उद्धार कीन्हें, अविचल सुख दीन्हें।
अमीरिख चाहे तुम चरणों की रज ॥ स्वा० ॥६॥

प्रभु तुम विन कोई नहीं।

राग पूर्ववत्।

प्रभु तुम विन कोई नहीं तारन तिरन ॥ टेर ॥
जनम मरन रोग भयो है जगत वीच, फस्यो राग द्वेष कीच।
परगुन राच भयो भव में फिरत ॥ प्र० ॥१॥
अथिर जगत धन जोवन स्वप्न सम, रह्यो तिण माहिं रत।
दुरगत जात नहीं राखत शरन ॥ प्र० ॥२॥
काल विकराल व्याल फौज सज आय, घेरे कोई न सहाय।
तेरे सज्जन सनेही सव होय विछुरन ॥ प्र० ॥३
तुम हो दयालनाथ सेवक को गहो हाथ, अब क्यों छोड़ूं साथ।
आरति विपत भव भ्रमन हरन ॥ प्र० ॥४॥
और मिथ्या मति देव जान्या है, असार सव पाय जिनदेव अव।
और गैर भमै कौन कुगति परन ॥ प्र० ॥५॥
तुमसे अदोषी देव, पुन्य के उदय से पाय जाचुं अवकित जाय।
अमीरिख भाव धरि गहा है चरन ॥ प्र० ॥६॥

श्री गजसुकुमालजी की सज्झाय ।

उत्तम क्षमा पै अचम्भो म्हांमे आवे हो,
किस विध धारी मुनि गजसुकुमाल ॥ टेर ॥
वाणी सुनि श्री नेम प्रभु की छांड दियो सब मोह जंजाल ।
संजम धारी मुनि ममत निवारी भेटे नेम जिनन्द दयाल ॥उ०
आज्ञा लेई महाकाल मसाने, मुनि पड़मा धारी इपाल ।
ध्यानारूढ़ गुरु निज आतम परमातम ध्यावे शुभ माल ॥उ०
सोमल सुसरो आयो चलाई दूरां से मुनि नजर निहार ।
वैर विचार क्रोध भभकाई बांधी सिर माटी की पाल ॥उ०
धकधकता खैराकाठीया मुनि मस्तक पै धर दिया असराल ।
दुष्कर वेदन सही मुनिवरजी ध्याया शुक्ल ध्यान रसाल ॥उ०
करम खपाई केवल पाया, मोक्षपुरी पहोंचे तत्काल ।
कहे अमीरिख धन र गुरुधारी, बलिहारी प्रभु त्रिकाल ॥उ०

काल विषे चेतावनी ।

सखी पनियां भरन कैसे जाय ॥ यह देशी ॥ बनजारा की ॥

मन मान सुगुरु का कहना जिया गफलत में मत रहना ॥टेर॥
है काल महा दुखदाई, चेतन चौथ चौसाईयो ।
पल मांहि करत चेचेना ॥ जिया० ॥१॥
जिमि तीतर पकड़े बाजा हिरना को ज्यों मृगराजाजी ।
त्यों गहे काल की सेना ॥ जिया० ॥२॥
ये सज्जन कुटुम्ब सारा उस रोज होय सब न्याराजी ।
कोई तेरे संग चले ना ॥ जिया० ॥३॥

मन काहे को पाप कमावे, फिर उदय भया पछतावेजी।
देखो खोल हृदय के नैना ॥ जिया० ॥४॥
है सत्य धर्म एक जैना, और झूठ सकल मत केनाजी।
नहीं पाखण्ड में चित्त देना ॥जिया०॥५॥
जिन आज्ञा चित्त में धारो, सब पाप प्रमाद निवारोजी।
लहे अमीरिख सुख चैना ॥ जिया० ॥६॥

उपदेश।

तेरी फूल सी देह पलक में पलटे ॥ यह देशी ॥

संपत देख गरब मत कीजे, एक दिवस तज जाना रे ॥ टेर ॥
इण जग माहि थिर नहीं कोई, कुण राजा-कुण राणा रे ॥सं०
माता पिता नारी सुत बंधव, तिन में नहीं मुरझाना रे।
स्वारथ बिन कोई बात न पूछे, क्यों अपना करि माना रे ॥सं०
देह असार अनित्य अपावन, ज्यों पीपल तरु पाना रे।
विनशत वार लागे नहीं छिन भर, रंग पतंग समाना रे ॥सं०
चक्री चौथो गर्व कियो थो, देह रग विनशानो रे।
रावण राय त्रिखण्ड को नायक, परभव कीन पयाना रे ॥सं०
धर्म पदारथ सार जगत में, मूरख क्यों विसराना रे।
राग द्वेष मांहे राच रह्यो है, बांधत कर्म अपाना रे ॥सं०
विन भुगत्या छूटे नहीं कबहु, कर्म शत्रु दुख हानारे।
बांधत खबर पड़े नहीं प्राणी, उदय भया पछताना रे ॥सं०
पाप करी जोड़े रिध संपत, संग चले नहीं दाना रे।
अमीरिख जिन धर्म अराध्या, पामे पद निरवाना रे ॥सं०

धर्म करन विषे उपदेश ।

कहो सखी श्याम कब घर आसी रे ॥ यह देशी ॥

सदा धर्म कीजिये भव प्राणी रे, जिम होवे भव दुःख हानी टेर
ऐसो धर्म नहीं जग माँहि रे, इहभव परभव सुखदाई रे ।
जिससे जनम मरन मिटजाई ॥ सदा ॥१॥
सब कामो तन धन जाणो रे उपमा सम सुख बखानो रे ।
जिम बाय बादल पहिचानो ॥ सदा० ॥२॥
यह देह अथिर दरसाई रे, यांको गरब करे मत भाई रे ।
ऐसे पल में देह बिलाई ॥ सदा० ॥३॥
सब सज्जन सनेही हुआ मेला रे, जिम हटवाड़ा सम मेला रे ।
जावे निज निज ठाम अकेला ॥ सदा० ॥४॥
जीव हँस हँस कर्म कमावे रे, जब उदय भया पछतावे रे ।
भवउदध माँहि गोता खावे रे । सदा० ॥५॥
मिथ्यामत में मत राचो रे, देव गुरु धर्म शुद्ध जाचो रे ।
येही शिवपुर मारग साचो ॥ सदा० ॥६॥
सब विषय कषाय निवारो रे शुद्ध श्री जिनवाणी धारो रे ।
जिम होवे भव निस्तारो ॥ सदा० ॥७॥
यह धर्म परम सुख दाता रे, अमीरिख कहे भ्राता भ्राता रे ।
जिम पामो अक्षय सुख साता ॥ सदा० ॥८॥

—:o:—

गुरु उपदेश को जलधर की उपमा ।

राग-मल्हार ।

पजी ! हो सुगुरु हिम मेरे क्षुक रही ज्ञान घटा ॥ टेर ॥
समकित पावस प्रकट भये से मिथ्या ग्रीषम हटावे ॥प०
अनुभव बिजुरी चमक रही है, मोह अज्ञान फटावे ॥प०

दादुर मोर पपैया श्रावक, जिन गुण शब्द रटारे ॥ ए०
शीतल भावसुं पवन झकोरे, गुरु मुख गरज घटारे ॥ ए०
परम वैराग मेह वरसत है, संजम फल प्रगटारे ॥ ए०
दया अंकुरा चिहु दिश प्रकटे, धूल प्रमाद दटारे ॥ ए०
सुमति भूमि हरित के आई, कुमत जवाश मिटारे ॥ ए०
कहेन अमीरिख निज घर पाया, भ्रमना दुख कटारे ॥ ए०

आध्यात्मिक पद ।

राग महार ।

चैतन पुद्गल के संग मत राच, तोकुं सतगुरु कह समझाय ।टेर
ज्ञानादिक निज संपदा रे, अखय भरी तुज मांय,
भाव नयन मुद्रित भयारे, जांसुं सुजत नाय ॥ चैतन० ॥१॥
चन्द रवी सम जानिये रे, तेरा तेज अनूप ।
करम रूप बादल करी, ढकी चन्द्रिका धूप । चैतन० ॥२॥
अष्ट कर्म पुद्गल कह्यारे, चैतन इण वश होय ।
चउगत में भमतो फिरेरे, निज गुण संपत खोय ॥ चै० ॥३॥
रमत अजा सङ्ग केशरीरे, निज पराक्रम कुं भूल ।
तिम मद ममता मोह में रे, राचि कियो भव धूल ॥ चै० ॥४॥
आज स्वरूप विचार ले रे, सिद्ध समान प्रताप ।
परकूं निज करि मानतां रे, सुख दुख भुगते आप ॥ चै० ॥५॥
निज प्रतिविम्ब निहार के रे, सिंह पड्यो जिमि कूप ।
भर्म विशे तिम प्रानियो रे, भूलि रह्यो निज रूप ॥ चै० ॥६॥
आपा आप विचार ले रे, परगुण सङ्ग निवार ।
कहेत अमीरिख आतमा रे, तब उतरे भव पार ॥ चै० ॥७॥

श्री नेमनाथजी को हालरियो।

पेतन पेतोरे ॥ यह देशी ॥

गावे हालरियो मां शिवादेवीजी नेमकुंवर मेरे ॥ टेर ॥
समुद्र विजयजी का नन्दलालजी, शिवादेवीरा जायाजी।
अपराजित वैमान से सोरीपुर में आया जी ॥ गा० ॥१॥
आओ मेरे लाल सब अंग पाला माता इण पर बोले रे।
कण्ठ लगावे हरख २, पेसावे बोले रे ॥ गा० ॥२॥
शिर पर तिलक तम्बोल बिराजे माता पुत्र रमावेरे।
हाथे कड़ियां पांव घूंघरिया सब मन भावेरे ॥ गा० ॥३॥
माथे मुकुट काने दोय कुण्डल बांहे पहिरखा सोवेरे।
रतन जड़त का पालना में सब मन मोवेरे ॥ गा० ॥४॥
थोक आंजतो नेमकुंवरजी, परहा २ खिस जावेरे।
माता लावे हाथ पकड़ पुर्यां पड़ जावेरे ॥ गा० ॥५॥
आओ कुंवरजी हार पहिराऊं टोपी रतन जड़ाऊंजी।
रतन जड़त का पालना में, बैठ झुलाऊंजी ॥ गा० ॥६॥
हरख धरी मे शिवादेवीजी प्रभु मुख चन्द्रम निरखेरे।
रमझम २ फिरे महल में हियड़ो हरखेरे ॥ गा० ॥७॥
नवी झुंलावी शिवादेवी जी प्रभुजी के जीमन काजे रे।
खाजा खाड़ सरस जलेबी घेवर ताजेरे ॥ गा० ॥८॥
रतन जड़त का थाल कचोला प्रभुजी ने पुरसावेरे।
मखमल रेशम गादी ऊपर, बैठ जीमावेरे ॥ गा० ॥९॥
सोना का तो चकरी भमरा रेशम डोर फरावेरे।
हरख धरी मे शिवादेवीजी पुत्र खेलावेरे ॥ गा० ॥१०॥
हाथ जोड़ यों कहत अमीरिख जो हालरियो गावेरे।
रोग शोक सब दूरा न्हासे, नवनिध पावेरे ॥ गा० ॥११॥

हितोपदेशी पद ।

मानव जनम २ रतन धन पायोरे सतगुरु समझायो ॥ यह देशी ॥

मत राचे जगत मांहि प्रानी रे, कहे सतगुरु ज्ञानी ॥ टेर ॥
काया माया थिर नहीं रहे भाई, जिन आगम में दरसाई रे ।
तेरे संग न आवे मन क्यूं ललचावे ॥ मत० ॥१॥
न्हाय धोय श्रृङ्गार बनावे, पंचइन्द्रिय विषय सुख चावेरे ।
काया संग राच्यो नहीं, सुकृत जाच्यो ॥ मत० ॥२॥
खाय हसे कौतुक मद आणे, भोला धर्म को नाम न जाणेरे ।
मुनि सङ्ग न करतो, पातिक मन धरतो ॥ मत० ॥३॥
धन २ करता सब कोई ध्यावे, पिण पुन्य विना नहीं पावेरे ।
तृष्णा क्यो बंधावे, यूंही मन भटकावे ॥ मत० ॥४॥
पाप करी रिध संग्रह कीधी, पण संग किणे नहीं लीधीरे ।
गए हाथ पसारी, दुर्गति दुख त्यारी ॥ मत० ॥५॥
रग पतंग बादल की छाया, तन धन का स्वभाव बतायारे ।
छिन में विरलावे, मन थिर मत माने ॥ मत० ॥६॥
तिण कारण समता मन कीजे, संग तप जप सुकृत लीजेरे ।
अमीरिख इम बोले, धारो धर्म अमोल ॥ मत० ॥७॥

सदा करिये धर्म सुखदाई ।

देशी पूर्ववत् ।

सदा करिये धर्म सुखदाई रे, नीको अवसर पाई ॥ टेर ॥
काल अनन्तो भटकत आयो, पुन्य जोगे मनुष्य भव पायोरे ।
दश बोल सवाइ, मिलिया तुझ तांई ॥ सदा० ॥१॥
इण अवसर शिव पन्थ न जांचे, मोह विषयारस में राचेरे ।
जड़ मूरख प्राणी को निज सुख हानी ॥ सदा० ॥२॥

काग उड़ावन विप्र गमारी, दियो रतन चिन्तामणी डारीरे।
मूरख पछितायो, फिर हाथ न आयो ॥ सदा० ॥३॥
च्यार गति में दुंढत पायो, भला मोक्ष द्वार नर आया रे।
सुरपति पिण चावे तू क्यों व्यर्थ गमावे ॥ सदा० ॥४॥
रतन काल समये भव मांई चेते जा इण अवसर मांईरे।
शिवपुर सुख पावे सब दुःख मिट जावे ॥ सदा० ॥५॥
कल्पवृक्ष सम वंछित दाता, गुरां देवे भव भव साताारे।
मन में इम जाणो करो जतन सुजाणी ॥ सदा० ॥६॥
अवसर पाय न चुक सयाणा समझावे गुरु गुणखाणारे।
चमीरिख उपगारी करिये हुसियारी जिम होवे भवपारी ॥स०

अहंपद धारक को हितोपदेश।

बिछ पालरे पगे ॥ यह देशी ॥

मन मानरे कहो फोगट अभिमान में तू भूल क्यों रह्यो ठेर
अपनो निगोद् नरक दुःख में सह्यो
सही सूख मार तिहां मान क्यों रह्यो ॥ मन० ॥१॥
बिकायो बजार कन्द मूल में गयो।
कौड़ी के अनन्त भाग मोल को भयोरे ॥ मन० ॥२॥
सूरी कूपी कुख में अवतार में लियो।
महा अशुचि आहार में लुभाय तू रह्यो रे ॥ मन० ॥३॥
गोबर मल मांहि जावे कीड़ा हुवो।
गर्भावास माय तिहां आहार क्या कियोरे ॥मन० ॥४॥
भूठा तन मांहि राच कर्म संचियो।
धर्म कुं अरेक्ष चित पाप में दियोरे ॥ मन० ॥५॥

धरमी पर द्वेष हेत दृष्टि से कियो।
तिरने को दाव सो प्रमाद में गियो रे ॥ मन० ॥६॥
धारो जिन धर्म वण रस पियो।
अमीरिख कहे होय सफल यों हियो ॥ मन० ॥७॥

मन मान क्यों करे।

राग पूर्ववत्।

मन मान क्यों करे, धरम विना जीव तेरी गरज ना सरे ॥टेर
लक्ष चौरासी मांहि जनम,
जनम करम वशे ऊँच नीच देह तूं धरे रे ॥म०॥१॥
टेढ़ी चाले चाल, वांकी पाग है शिरे,
ताके परनार सदा माल नित चरे रे ॥ म० ॥२॥
कड़ा कंठी पौंची हाथ मूछ पै धरे,
वाके मुख वचन कहे, गरव के भरे रे ॥ म० ॥३॥
हिंसा मुख झूठ माल पारका हरे,
नारी धन, मांहि राच दुर्गति वरेरे ॥ म० ॥४॥
चक्री हरिराय सोही कर्म वश परे,
सही भूख प्यास सो उजाड़ में फिरे रे ॥ म० ॥५॥
संपद रिध छोड़ जाय एकलो अरे,
कंचन सम देह सोहि आग में जरे रे ॥ म० ॥६॥
धारे प्रभु वेण सदा पाप से डरे,
अमीरिख कहत सो संसारसे तिरे रे ॥ म० ॥७॥

जिनवाणी महिमा वर्णन

अरा मान वचन मुझ प्यारी ॥ यह देशी ॥

(नाटक का राग)

तुम सुनजो २ सब नरनारी, ये जिनवाणी हितकारी ॥ टेर ॥
ये अवसर नीको लहि के, गुरुदेव समीप आवे ।
प्रथम सुखदाय सुनो चितलाय, उलट मन धारी ॥ ये जिन० ॥१॥
है नानाविध अधिकार, अरिहन्त प्ररूपित सार ।
देवसुर राय धरे चित चाव, भाव उर धारी ॥ ये० ॥२॥
संशय सबही मिट जाय, कोमामल शीतल थाय ।
हरे भव भीत, करे जग जीत विपति निवारी ॥ ये० ॥३॥
अनुयोग चार विस्तार, नवतत्त्व द्रव्य षट धार ।
शुद्ध श्रद्धा न क्रिया में काम, मधिक सुविचारी ॥ ये० ॥४॥
इस दुखमी पंचम आरे जिन वचन एक आधारे ।
तजे जग फन्द धरी आनन्द, होय अणगारी ॥ ये० ॥५॥
जो नहीं धारे जिनवाणी सो भमे चउगत प्राणी ।
आराधे जेह करे दुख छेह होय भव पारी ॥ ये० ॥६॥
जिन वचन सुणो इम जाणी यों कहत अमीरिख वाणी ।
जिनागम सार, सुगत दातार जोड़ बलिहारी ॥ ये० ॥७॥

उपदेशी ।

म्हारे नेता आओजी मला ॥ राग महाडा ।

चित्त चेतोरे सुजाण तोकुं सद्गुरु देत पीछान ॥ टेर ॥
आयु अथिर चलाचियेरे ज्यूं अंजली जल जाण ।
राजरिद्ध अरु सम्पदारे, दामिनी झलक समान ॥चित०॥१॥

यौवन रग पतगसोरे, काया संध्या वान ।
ओस विन्दु चंचल दल समीरे, चंचल कुंजर कान ॥चि०॥२॥
स्वप्न समान संसार है रे, सरिता पुर उफान ।
थिर मानी लुब्धी रह्यो, मूरख जन अनजान ॥ चि० ॥३॥
जिन पद लाग जाग गफलत से, ज्यूं होवे भव हान ।
कहत अमीरिख धर्मसेरे, पामे पद निरवान ॥ चि० ॥४॥

झूठा संसार ।

राग पूर्ववत् ।

जैसे रग पतंग कोरे, तैसे यह संसार ।
देखत ही नीको लगे, पण जातन लागे वार ॥
चतुर नर झूठो रे ससार जिया करले चित्त विचार ॥ १ ॥
चउगत भटकत पामियो रे, नरभव उत्तम जोय ।
रतन चिन्तामणि पाय केरे, विषीयन संग मत खोय ॥च०॥२
काम भोग को जानियेरे, फल किंपाक समान ।
चाखत ही मधुरा लागेरे, फिर हरत निज प्रान ॥ च० ॥३॥
छिन छिन छीजे आउखोरे, अंजुली नीर समान ।
जावे सो आवे नहीं रे, चेतन चेत अजान ॥ च० ॥४॥
विषय कषाय प्रमाद में रे, राचि रह्यो हरखाय ।
विष की क्यारी वोय के रे, फिर पीछे पछताय ॥ च० ॥५॥
पाप प्रसंग निवारियेरे, जैन धर्म चित्त धार ।
कहत अमीरिख प्राणियोरे, तब उतरे भव पार ॥ च० ॥६॥

जिनवाणी महिमा वर्णन

करा मान बचन मुझ प्यारी ॥ यह देशी ॥

(नाटक का राग)

तुम सुणज्यो २ सहु नरनारी ये जिनवाणी हितकारी ॥ टेर ॥
ये अवसर नीको लहि ने, गुरुदेव समीप जाइने ।
वचन सुणवाय सुणो चित्तलाय, हरख मन धारी ॥ये जिन०॥१
है नानाविध अधिकार अरिहन्त प्ररुपित सार ।
देवसुर राय, धरे चित्त चाव, भाव उर भारी ॥ ये० ॥२॥
संशय सबही मिट जाय कोधानल शीतल थाय ।
हरे भव भीत, करे जग जीत, विपत्ति निवारी ॥ ये० ॥३॥
अनुयोग चार विस्तार नयतत्त्व द्रव्य षट धार ।
ग्रंथ भरया न हिया में माम, भविक सुखिकारी ॥ ये० ॥४॥
इण दुखमी पंचम आरे जिन वचन एक आधारे ।
सभी जग फन्द भरी आनन्द, होय अणगारी ॥ ये० ॥५॥
जो नहीं धारे जिनवाणी, सो भमे चतुगत प्राणी ।
अराधे जेह करे दुख छेह होय भव पारी ॥ ये० ॥६॥
जिन वचन सुणो इम जानी यों कहत अमीरिख वाणी ।
जिनागम सार सुगत दातार, जोऊं बलिहारी ॥ ये० ॥७॥

उपदेशी ।

म्हारे नेता आवोजी भजा ॥ राग महाड़ ।

चित्त चेतोरे सुजान तोकुं सद्गुरु देत नीदान ॥ टेर ॥
आयु अथिर चलामियेरे ज्यूं अञ्जली जल जान ।
राजरिद्ध सब सम्पदारे, दामिनी झलक समान ॥चित०॥१॥

कुँवर जम्बु हरख धर के, आये हैं बाग के मांयजी ।
करी वन्दन भाव सूं, बैठे हैं सनमुख आयजी ॥
देख अवसर सेत सबको, दिया धर्म सुनायजी ।
कुंवर सुन वैरागीया ससार त्यागन चायजी ॥भेला॥

सुनो सुनो हो स्वामी जान्या में, जग जान्यो काचो ।
सुनो २ हो स्वामी आज धरम शुद्ध जाच्यो ॥
सुनो सुनो हो स्वामी ल्यूं संजम पद साचो ॥ दौड़ ॥

आये कुंवरजी मुनि को वन्दन चलाई ।
कर विनय अपनी मात से सब बात सुनाई ॥
संसार है असार गुरु ज्ञान बनाई ।
मुनिराय पास जाय संजम धारुं सवाई ॥खड़ी॥

जब नन्दन मुख से सुनी मात ये बानी ।
मुरछा वश होके सुध सभी भुलानी ॥
हुशियार होय कर कहे नैन भर पानी ।
बहुविध समझाया कुंवर एक नही मानी ॥मिलत॥

त्रिया परन के संजम लीजे सुन के ।
कुंवरजी मौन किया ॥ जम्बुकुंवरजी ॥ १ ॥

मात कहेन से आठ नार को वरी कुंवरजी बिन भावे ।
बहुत धूम से परन के, जम्बुकुंवर निज घर आवे ॥
क्रोड़ निन्यानव आया सोनैया, और वस्तु अधिकी लावें ।
रात महिल में त्रिया से, जम्बु बतायो फरमावे ॥शेर॥

सुनो वनिता ये सकल संसार असार जी ।
कनक कामिनी त्याग हमकूं लेना संजम भारजी ॥
सुनके स्वामी वचन चित्त में भयो सोच अपार जी ।
कहे पति से बात यों नहीं बोलिये अविचारजी ॥ भेला ॥

उपदेशी ।

गजल ।

यक्त तिरने का मिला हमको न खोना चाहिये ॥ टेर ॥
भर्म मिथ्या रात बीती, सुन के श्रीगुरु ज्ञान को।
मोह गफलत में किसी को, अब न सोना चाहिये ॥ व० ॥१॥
मोक्ष फल तुमको जो चाहिये, साफ करले दिल को।
बीज समकित ज्ञान का हिरदे में बोना चाहिये ॥ व० ॥२॥
जिनराज शब्द ज्ञान का दरिया भरा है मौज में।
मार गोता मर्म का दाग मिथ्या धोना चाहिये ॥ व० ॥३॥
करम जो सुख हो कमाया सो सही भाता उदय।
दिल में घबरा के किसी को अब न रोना चाहिये ॥व०॥४॥
रहम दिल रख पर ममा । धारो सदा जिन धर्म को।
अमीरिख अवसर मिला गफलत में खोना चाहिये ॥व०॥५

श्री जम्बु स्वामीजी महाराज की लावणी ।

(पचरंगत में)

चाल—लंगडी ।

स्वामी सुधर्मा सन्त महा गुणवन्त धर्म उपदेश दिया।
जम्बुकुँवरजी त्याग संसार मोक्ष का पंथ लिया ॥ टेर ॥
राजग्रही नगरी के अन्दर, धनवन्त व्यवहारी है।
नाम ऋषभदत्त जिन्हों के जम्बुकुँवर गुणधारी हैं ॥
स्वामी सुधर्मा आय बिचरते उतरे बाग मझारी है।
वन्दन कारण नगर के गये बहुत नरनारी हैं ॥ज़ोर॥

कुँवर जम्बु हरख धर के, आये हैं बाग के मांयजी ।
करी वन्दन भाव सूं, वैठे हैं सनमुख आयजी ॥
देख अवसर सेत सबको, दिया धर्म सुनायजी ।
कुवर सुन वैरागीया ससार त्यागन चायजी ॥झेला॥

सुनो सुनो हो स्वामी जान्या में, जग जान्यो काचो ।
सुनो २ हो स्वामी आज धरम शुद्ध जाच्यो ॥
सुनो सुनो हो स्वामी ल्यूं संजम पद साचो ॥ दौड़ ॥

आये कुंवरजी मुनि को वन्दन चलाई ।
कर विनय अपनी मात से सब बात सुनाई ॥
संसार है असार गुरु ज्ञान बनाई ।
मुनिराय पास जाय संजम धारुं सवाई ॥खड़ी॥

जब नन्दन मुख से सुनी मात ये बानी ।
मुरछा वश होके सुध सभी भुलानी ॥
हुशियार होय कर कहे नैन भर पानी ।
बहुविध समझाया कुंवर एक नही मानी ॥मिहृत॥

त्रिया परन के संजम लीजे सुन के ।
कुंवरजी मौन किया ॥ जम्बुकुंवरजी ॥ १ ॥

मात कहेन से आठ नार को वरी कुंवरजी विन भावे ।
बहुत धूम से परन के, जम्बुकुंवर निज घर आवे ॥
क्रोड़ निन्यानव आया सोनैया, और वस्तु अधिकी लावें ।
रात महिल में त्रिया से, जम्बु वतायो फरमावे ॥शेर॥

सुनो वनिता ये सकल संसार असार जी ।
कनक कामिनी त्याग हमकूं लेना संजम भारजी ॥
सुनके स्वामी वचन चित्त में भयो सोच अपार जी ।
कहे पति से बात यों नहीं बोलिये अविचारजी ॥ झेला ॥

सुनो सुना हो मीतम दिल में बहोत अभिलाषा।
सुनो २ हे मीतम कहा तुम्हा किया मानो॥
सुनो २ हे मीतम बालक बुद्ध मत ठानो॥ शेर।

छोड़ कपट भाव हमसे कान्ध दिल में विचारो।
दीपक समान कुल में धर्पा होय उजियारो॥
सुख छते छोड़ कहलेकी, क्या क्यों धारो।
सुख भोग फिर संयम करी आतम को सुधारो॥ खड़ी॥

रामियाँ का बचन सुण जम्बुकुंवर फरमावे।
यह फल किंपाक समान कहो कुण खावे॥
सुख अल्प दुख बहु सेल बिन्दु दरसावे।
ये विषय विटंबन माँहि मूरख ललचावे॥ मिलत॥

नरक निगोद में बैतन भटक्यो।
काम भोग वश दुख सह्या॥ जम्बुकुंवरजी॥७॥

बचन सुनी मीतम का ऐसे फिर बोली मिलके सारी।
मन में धम धन है भिखारी को, हम सरखी आठों नारी॥
जो तुम हमको छोड़ सिधावो, छार कीत करसी म्हारी।
बालपने में विपु तुम हम सेस्यां संजम भारी॥ शेर॥

कुंवर जम्बु कहे वनिता अपर पलकी भामजी।
तन धन जोवन अथिर है ज्यों बिजली चमकायजी॥
काल है सिर पे खड़ा, पल में पकड़ ले जायजी।
मातु पितु नारी मिली होवे न कोई सहायजी॥ खेड़ा॥

सुणो सुणोरे भाई कौन परभव आयो।
सुनो सुनोरे भाई संग पाव सी लायो॥
सुनो सुनोरे भाई थोरी करम कमायो॥ शेर॥

विद्या से कुलप तोड़ के आयो है चलाई ।
सब चोर धन को बांध लिया सिर पै उठाई ॥
तब इन्द्र का आसन चला देखे ज्ञान लगाई ।
धन माल जाने से हुवे हांसी नगर मांई ॥ खड़ी ॥

संसार तजेगा जम्बु इन्द्र चित्त धारी,
तब सभी चोर पग स्तम्भ विद्या डारी ।
सब चोर थक्क गए बोझ शीश पै भारी,
तिहां सुनी त्रिया की बात परभव सारी ॥मिलन॥

सभी नार मिल अरज करत है,
बोलो पति मेरे तरसे जिया ॥ जम्बुकुंवरजी ॥२॥

निगाह कुंवर की पड़ी चोर पै कहो भाई कौन खड़ा ।
चोर कहे दो विद्या ले, देवो तुम्हारा मंत्र बड़ा ॥
जम्बु कहे विद्या नहीं चाहिये, मेरे मन वैराग चढ़ा ।
धन कुटुम्ब को त्याग के, चित्त गुरु चरणों में अड़ा ॥शेर॥

सुन के जम्बु को वचन मन में, अचम्भा आनजी ।
ऐसी सम्पद को तजे धन धन कुमर वुधमानजी ॥
कहे प्रभु वो क्यों तजो तुम ऐसी रिध सुजानजी ।
चोर कूं समझाइयो, जम्बुकुंवर दे ज्ञान जी ॥ झेला ॥

सुनो सुनोरे भाई उपदेश कुंवरजी दीनो ।
सुनो २ रे भाई चोर सुधारस पीनो ॥
सुनो सुनोरे भाई, संजम में चित्त भीनो ॥ दौड़ ॥

आयो चल के चोर पास कहे वचन उचारी ।
तुम मिल के सभी जाओ अपने घर को सिधारी ॥
प्रभाव से सभी हाथ जोड़ अरज गुजारी ।
हम भी तुम्हारे संग चले मन में विचारी ॥ खड़ी ॥

अब ओर पांच सौ सजम की जिसधारी।

भूल गए सभी के वच सुनो नरनारी॥

कहे कुंवर प्रिया से आज्ञा दो सुविचारी।

कहे प्रिया नाथ क्यों हमको तजो निरधारी॥मिझल॥

प्रीतम जो तुम चित्त रुचे सो कीजे

हुकम अब खोल दिया ॥ जम्बुकुंवरजी॥ ४॥

जम्बुकुंवर कहे ये ससार में काम भोग दुखदाई है।

सुर सुख पाया अनन्ता तोभी तृपत नहीं आई है॥

सभी नार वैराग आन के मन में धीरज लाई है।

मात समझावे कुंवरजी पिता मात समझाई है॥टार॥

पांचसें सत्तावीश मिल के गये श्री गुरु पास जी।

छोड़ सकल संसार को सजम लिया उल्लास जी॥

करी तप जप पालि सजम मेट के, भव पास जी।

सारे आतम काज जग मांहि सुजस परकाश जी। मेला॥

सुनो सुनो रे भाई पाट सुधरमा स्वामी।

सुनो सुनोरे भाई जम्बु मुनि हुये नामी॥

सुनो सुनोरे भाई कीर्ति जगकी पामी ॥ तीड़॥

मुनि छोड़ के करमों कुं केवल ज्ञान को धारे।

भव्यजीव को समझाय के संसार से तारें॥

निज गुन में होके लीन अनुभव को विचारे।

आतम का किया कल्याण मुनि मुक्ति पधारे।खड़ी॥

ये अजर अमर अविनाशी सुख अति पाया ।
सब कर्म तोड़ के हुवे सिद्ध महाराया ॥
श्री सुखारिखजी गुरु भेद बतलाया ।
मेरी अल्प बुद्धि प्रमान मुनि गुण गाया ॥मिल्लत॥
अमीरिख कर जोड़ कहे मुनी चरणों में ।
चित्त लाग रया ॥ जम्बुकुंवरजी ॥ ५ ॥

श्री वलभद्रजी महाराज की लावणी ॥

लगडी रगत ।

वलभद्र मुनिराज मोक्ष के काज करे तप भारी है ।
मास खमन के पारने, आये नगर मझारी है ॥ टेर ॥

नगर द्वारिका दग्ध भई तव हरि हलधर दोनू भाई ।
निकले वनको करम सें विपदा वहु उमे पाई ॥
आये कंशुम्बी वन में, कृष्ण को प्यास लगी है अधिकाई ।
वलभद्रजी नीर को गये बखत पहोंची आई ॥ खड़ी ॥
जब व्याकुल होके सोते वृक्ष की छाया ।
तिहां भटकत वनमें, जरतकुंवर चल आया ॥
पग पद्म देख मृग जान वान चलाया ।
भई आयु थिती परेपुरन प्रान गमाया ॥ तुटक कड़ी ॥
नीर वलभद्र लायाजी मोह अधिकार चायाजी ।
फिरे कन्धे उठायाजी, देव आके समझायाजी ॥ मिल्लत ॥
देह कार्य करे ज्ञान हिये धर तजा जग्त दुखकारी हो ॥मास०१
संजम ले वैराग भाव से, मास खमन करते करनी ।
पंच महाव्रत समित्यादिक करे क्रिया आतम तिरनी ॥

करुणा सागर सहे परिसह भाख गहे श्री जिनवरजी ।
रूप अनुपम इन्द्र सम महिमा कौन सके वरनी ॥ कही ॥

अब मास खमन का आया पारना माहीं मुनी आए अहार को।
हुँसियापुर के माँई, घरमी पर हरि गणधर गति दुखदाई ॥
तिहां होवे अचरज एक सुनो चित लाई ॥ तुरक कही ॥

एक जल काज नारीजी, चली कूवे पै सारीजी ।
कूवो तस मन्द सारीजी, रुदन करतो अपारीजी ॥ मिलत ॥
बालक को ले संग कूवे पै आई चल पनिहारी है ॥ मास०॥२

रूप अनुपम तेज मनोहर सूरत है मोहन गारी ।
आते मुनी को देख के भूल गई सुध बुध सारी ॥
मोह वश निरखे नर नयना चन्द चकोर प्रीत भारी ।
घड़ा भूल के डोर निज नन्दन के गल में डारी ॥ कही ॥

तब कहे सब सखियां करें क्यों बाई ।
होवी सिद्ध ऐसा धिग मुझ रूप सवाई ॥
करतो जो पारनो जोग मिले तब माँई ।
नहीं तो है त्यागन आज जीव मुझ ताँई ॥ तुरक कही ॥१॥

अभिग्रह चित ठावेजी मुनि वन में सिधावेजी ।
रहे समता समावेजी सदा तप जप कमावेजी ॥ मिलत ॥
रहे विचरत वन में फिरते निरमल तप आचारी है ॥मास०४

अल्प भ्रमी एक मृग तिम औसर श्री गुरु के दरशन पावे ।
जाती स्मरण पाय के, मुनिवर से भावन भावे ॥
घाती एक काठ के कारन पुण्य उदय तिण वन आवे ।
सेठ पताई मृग ले आय अहार गुरु बतलावे ॥ कही ॥

खाती खातन दे दान मृग मन तरसे ।
जो मैं होतो नर दान देतो निज कर से ॥
तिहां वायजोग तरु डाल पडी ऊपर से ।
कियो चारू जीव समकाल भाव शुभ सरसे ॥ त्रोटक कडी ॥
पांचमें स्वर्ग मांईजी लही रिधी सवाईजी ।
एक अवतार पाईजी, मोक्ष जाशे सिधाईजी ॥ मिल्लत ॥
अमीरिख कर जोड़ कहे, मुनि चरन शरन वलिहारी है ॥मा०

श्री ऋषभदेवजी का वरसी पारणा की लावणी ।

लगडी रगत ।

प्रथम ऋषभ जिनराज, राज तज वर्षि तप को धार लिया ।
असकुंवरजी अहार वहिराय, सफल अवतार किया ॥ टेर ॥
संजम ले प्रभु मौन धारके घर २ गोचरी जावे है ।
कोई घोड़ा हस्ती सिनगारी जिनवर पासे लावे है ॥
रथ पालखी प्रभु को भेंट करी सुख पावे है ॥ खड़ी ॥
कोई पाट पितांवर रतन आभूषण भारी,
कोई हीरा मोती कोई कन्या सिनगारी ।
इम २ भांत वस्तु लावे नरनारी,
प्रभु देख २ फिर जाय क्षमा चित्त धारी ॥ मिल्लत ॥
अहार नीर विन मिले विचरते, प्रभु बारे मास थया ॥अंस० १
अंसकुंवरजी सूते सेज पै, पिछली रात सुपना पाया,
कल्पवृक्ष को देखा आंगन में, ऊगा मन भाया ।
पान फूल फल छायरया है, अति सुंदर शीतल छाया,
अधिक मनोहर कल्प विना नीर सो कुमलाया ॥ खड़ी ॥

जब लग देख आगें कुंवर उमाई
आप बैठे गोख विचार करे मन मांई।
कछु हरख हिये कछु चिन्ता उर में आई,
बीती है रजनी दिवस प्रभा तब छाई ॥मिलत॥
आदिनाथ जिनराज पधारें, मति पूर्ण करि प्रभा ॥ प्रस० ॥ १

कल्पवृक्ष सम आते प्रभु को हसकुंवरजी देख लिया
दर्शन करते कुंवर को जाती समरण प्रगट भया।
पूरव भव को देखा ज्ञान से मुनि मारग को जान गया
तुरत महल से उतर के श्री जिनवर के चरण छिया ॥कड़ी॥
जब ईखू रस का घड़ा भेंट को आया
अति उलट भाव से हस कुंवर बहिराया।
रस दोनू हाथ में लिया ऋषभ जिनराय
प्रभु वर्षि पारना किया तृपत भई काया ॥मिलत॥
रत्न वृष्टि जय कीवी देव ने मे देव दुंदुभी शब्द भया ॥प्रस०॥२

जय जय वाणी भइ गगन में धन २ कहे सब नरनारी,
घर २ आनन्द भया घर २ वरते मंगलाचारी।
तिन दिन से तिविहार भया है आखातीज प्रगट भारी
कहे नरनारी नगर में दान तणी महि महिमा भारी ॥ कड़ी ॥
है भावी प्रथम जिनराज महा सुखदाई
भया पोता प्रथम दातार अचल गति पाई।
ये अजर अमर अधिकार कमी नहिं कांई
श्री सुखारिखजी गुरु चरण चित लाई। मिलत॥
आदिनाथ जिनवर गुण गाया अमीरिख धरी हर्ष हिया ॥प्रस०॥४

श्री अरिहन्त महाराज की लावणी ।

॥ *लगडी रंगत* ॥

श्री अरिहन्त महाराज गरीब निवाज आप गुनवन्त बड़े ।
इन्द्र देवता चरन की सेव करत हैं खड़े खड़े ॥ टेर ॥
जान सकल संसार अथिर वैराग भाव धारी मन में,
करम मिटावे लोचकर संजम ले विचरे वन में ।
दुक्कर तपस्या धार प्रभुजी लीन भये आतम गुन में,
नर सुर पशु के परिसह सहे धार समता तन में ॥ खड़ी ॥
प्रभु मेरु गिरि सम अचल महा गुण धीरा,
हस्ती सम धीरज केशरी इव बड़ वीरा ।
प्रभु करुणा आगर सागरवत गंभीरा,
अति करनी करके हरी सकल भव पीरा ॥ त्रोटक कड़ी ॥
करम चारुं हटायाजी, प्रभु केवल जो पायाजी ।
मिली सुर इन्द्र आयाजी, किया म्होछ्व सवायाजी ॥मिल्लत॥
केवल ज्ञान और दरसन से चर अचर पदारथ दृष्टि पड़े ।इन्द्र।१
मिथ्यामत वल होय अती तव देव करत त्रिगडो त्यारी,
चामर वींजे गगन में, धरम चक्र गरजे भारी ।
वृत्त अशोक दुंदुभी वाजत इन्द्र ध्वजा लहेके न्यारी,
छत्र सिंहासन जडित मणी रत्न सोहे अति मनुहारी ॥खड़ी॥
भामण्डल झलके तेज महा सुखदानी,
हरे रेणु वाय वरशत सुगंधित पानी ।
करे पुष्प वृष्टि अचेत जोयण परमानी,
सो कोस ईत टल जाय विराजत ज्ञानी ॥त्रोटक कड़ी॥
मनोहर शोभ झलकेजी, अनुपम रूप झलकेजी ।
शशी सम मुख झलकेजी, भानु इव तेज चलकेजी ॥मिल्लत॥

ऐसा अतिशय जिनवर के कोई पावजी नहीं माय भई ॥ऐसा॥

महिमावन्त जिनन्द अतिशय तीस च्यार पूरन धारी
पैंतीस वाणी सुधासम सुणत भये सुख नरनारी।
लोकालोक के माय प्रकाशे, सीख भविक लागे प्यारी
घन उपकारी कहे सच जिन चरनन की बलिहारी ॥ ऐसी ॥

कोई थविर आन संसार मुनी पद ठावे,
कोई श्रावक भावक व्रत धरे उमावे।
कोई समकित धारी समदृष्टि पद पावे
तज मिथ्या दुरमति धर्म सुलट मग आवे ॥ मोदक कही ॥

कोई तप जप कमावेजी धर्मी सुरलोक जावेजी।
कर्मरिपु को हटावेजी कोई शिवपुर सिधावेजी ॥ मिलत ॥

तदकाया के पीर मारमद सुर होय कर्मों से लड़े ॥ऐसा॥

प्रथम संघयण सठाण प्रभु के रोग रहित निर्मल काया,
लख चौरासी व पूर्व सम आयु जिन पूरन पाया।
जघन्य बहोत्तर धर बड़े गुन शास्त्र आगम में गाया
जनम मरन का भेद भये शिव सकल जग के राया ॥ ऐसी ॥

प्रभु करुणा सिन्धु गुन अनन्त बलधारी
मुझ अल्प मति कहूं रसना कैसे उचारी।
मैं शरन लियो है तारक बिरद विचारी
कर महिर श्री जिनराज करो भव पारी ॥ तारक कही ॥

प्रभु का गुण जो गावेजी विपत सब दूर जावेजी।
सकल पातिक पुलावेजी सुमत हिरदे में आवेजी ॥ मिलत ॥
धर्मीरिख अरिहंत भजन से कर्म विषम भय दूर भजे ॥ऐसा॥

कुमतिजन को हित शिक्षा की लावणी ।

॥ लगडी रंगत ॥

श्री जिन आगम वचन सुणी ने, शीख भूलना ना चैये ।
उलटे पंथ में चाल के दुख उठाना ना चैये ॥ टेर ॥

जिन मारग को छोड़ पाप से चित्त लगाना ना चैये,
कल्पवृक्ष को छोड़ बंबूल को बोना ना चैये ।
काल अनंत विषय वश भटक्यो तुझे लुभाना ना चैये,
श्री जिन वचन अनूप सार क्षण एक भूलाना ना चैये ॥उ०॥१

ज्ञानी गुरु गुणवन्त, जिन्हों के गुण हमेशा गाना चैये,
कुसंगत में भूल क्षण एक भी जाना ना चैये ।
रक्त दाग को रक्त से शुची बताना ना चैये,
पत्थर नाव बैठाय जीव भोले को डुबाना ना चैये ॥ उ० ॥२

दया धर्म अमोल रत्न है मुफ्त गमाना ना चैये,
सुख चाहे तो किसी का दिल दुखाना ना चैये ।
जान बूझकर गोते संसार में खाना नाचैये,
अपने हाथ से आप ठगा के जगत हंसाना ना चैये ॥ उ० ॥३

दुग्ध दुग्ध सब एक बरन है देख भुलाना ना चैये,
ज्ञानी होकर धर्म सब एक बताना ना चैये ।
कुगुरु की संगत में जाके कष्ट उठाना ना चैये,
मन थिर लाके शीख सुगुरु की भुलाना ना चैये ।
कहत अमीरिख धर्म ध्यान में आलस्य लाना ना चैये ॥उ०॥४

——×——

श्री धर्मरुची अणगार की लावणी।

गिरती है तेरी सरावीर मेरे नयनों में ॥ यह देशी ॥

तपसी गुणधारी परम पर उपकारी
धन्य धर्मरुची अणगार समा भंडारी ॥ टेर ॥

मुनि समता सागर, ज्ञान गुणों का दरिया।
आया चम्पा नगरी, करता सुन्दर फिरिया।
रिख मास पारणे गुरु चरणां शिर धरिया।
आज्ञा लेई गुरु की मुनि आवे गौचरिया।
धरती पर दृष्टि, गयवर गति संचरिया।
आया नागेश्री घर द्वार दया रस भरिया।
मुनि आता देखी, हरख नयों अतिभारी ॥ धन्य० ॥१॥
तिहां कड़वो तुम्बो शाक भूल से थावे।
तब नागेश्री मुनिवर को तब बहिरावे।
घर आई उकरड़ी कहो बाहिर कुण जावे?
मुनि परम ज्ञानी, श्री गुरु पासे आवे।
रिख मौन सिम्यो दातार गुरु फरमावे।
लिये पूरण भरियो पात्र, उत्कट घर आवे।
तब सत गुरु आगे बात सकल उचारी ॥ धन्य० ॥२॥
गुरु कीधो निर्णय शाक हलाहल जाणी।
तब धर्म घोष गुरु मधुर कहे मुख वाणी।
मैं कटुक शाक समझो खासी गुरु ज्ञानी।
अकाले तजशी प्राण कहे गुरु ज्ञानी।
यह असत्य जानकर, निरवद्य ठाम पिछाणी।
तिहां जा परठावो आज्ञा यह मुझ मानी।
मुनि कल्प परिठावण गुरु आज्ञा शिर धारी ॥ धन्य० ॥३॥

आइ निरवद्य ठामे, विन्दु एक परिठाई।
देखे तिण ऊपर, कीड़ियां अधिकी छाई।
तब करुणा सागर, चिन्ते ज्ञान लगाई।
सघलो परिठान्या अनर्थ अधिका थाई।
अति दया भाव से, मुनि सोचे चित्त मांई।
तन जातां निपजे, दया यही अधिकाई।
तव खीर खांड सम, जान पियो सुविचारी॥ धन्य० ॥४॥

अति प्रबल पीड़ा, तन मांहि हुई तिणवारो।
आवन की शक्ति घटी, कियो संथारो।
मुनि समता दृढ़ता धार्यो, हर्ष अपारो।
करी काल पहोंचे, स्वारथ सिद्ध मझारो।
गुरु खँवर करन को, आया जिहां अणगारो।
तव नाग शिरि पै, कियो कोप महाभारी।
विख दियो मुनि को, धिग् धिग् है हत्यारी॥ धन्य० ॥५॥

अति हुई फजीती फिट् फिट् कहे सब कोई।
मर गई नरक में कर्म उदय तस होई।
अति पाई दुःख यह, पाप तणा फल जोई।
धन धन मुनिवरजी, ज्ञान गुणाकर सोई।
चवी मोक्ष सिधाया, सकल कर्म दल खोई।
श्री सुखारिखजी, गुरु पाप रज धोई।
कहे अमीरिख मुनि, चरन शरन हितकारी॥ धन्य० ॥६॥

उपदेशी लावणी ।

देशी पूर्वक् ।

तुम सुनो सुगुरु की सीख सदा नरनारी ।
एक करो धर्म का काम सदा हितकारी ॥ टेर ॥
भवजल में भटक्यो जीव महा दुःख पायो ।
अब नरभव रत्न समान हाथ तेरे आयो ।
यह आर्य देश अरु उत्तम कुल में आयो ।
तन कुशल आवखो दीर्घ पुण्य से लायो ।
है पूरन इन्द्रिय पंच चतुर नर धारी ॥ एक० ॥१॥
निग्रन्थ गुरु को जोग मिल्यो है भाई ।
जिन आगम अमृत वचन सुनो चितलाई ।
इनिमें श्रद्धा परतीत चित्त के मांई ।
कर सुकृत उद्यम विपत सकल टल जाई ।
सुकृत उद्यम विपत सकल टलजाई ।
संसार सुख सपना सम जान असारी ॥ एक० ॥२॥
जब आन कुटुम्ब धन मांहि क्यों लपटावे ।
स्वारथ के सब ही सगे प्रभु फरमावे ।
क्यों पंचेन्द्रिय में नाहक कर्म कमावे ।
सब धरा रहे जग ठाठ अकेलो जावे ।
पापों का फल परभव में होयगा भारी ॥ एक० ॥३॥
घटे दिन दिन आयु ज्यों अंजुली को पानी ।
मत पूरन थिति रिपु काल ले जावे तानी ।
नरकों में पड़े गिरनार धार हित वानी ।
तोय कहे सतगुरु समझाय चेतरे मानी ।
[illegible] ॥ एक० ॥४॥

आप थापी पर निन्दक में १३ दोष ।

पासुरजी की देशी ।

सुणो भवियणजी, आगम वचन अनूप सदा चित्त धारजो ।
गुणवन्ताजी, ज्ञान हिये धर आतम दोष निवारजो ॥सुणो०॥
लेइ संजम निन्दा करे पर की, सब पूँजी खोवे निज घर की ।
महिमा नहीं होवे उण धर की ॥ सुणो० ॥१॥
जो आप थाप पर निन्दा करे, तिहां तेरे दोष जिन उचरे ।
कहो किण विध शिव रमणी वरे ॥ सुणो०॥२॥
दशमा अंग साख हिये लीजे, बुधवंत नहीं तिणने कीजे ।
वली धन्य कारो पण नहीं दीजे ॥ सुणो० ॥३॥
नहीं कहिये तिणने धर्म प्यारो, नहीं जाति कुल निर्मल धारो ।
न कहिये तिणने दातारो ॥ सुणो० ॥४॥
नहीं कहिये सत्यवन्तो शूरो, नहीं रूपवन्त जांको नूरो ।
नहीं शोभावन्त गणो पूरो ॥ सुणो० ॥५॥
नहीं कहिये तस पडित भणियो, बहुसूत्री तपसी नहीं गुणिये ।
तिणे मिथ्या भर्म नहीं हणियो ॥ सुणो० ॥६॥
रूडी मति नहीं आई कहिये, तस आराधिक पद नहीं गहिये ।
तस सेवा थी अवगुण लहिये ॥ सुणो० ॥७॥
तेह चउगति भव संसार भमे, बहु जनम मरन विपदा खमे ।
इम वचन कह्या जिन आगम में ॥ सुणो० ॥८॥
पर निंदा तज गुण को धारो, शुद्ध करणी कर निज आतम तारो ।
कहे अमीरिख होय भव पारो ॥ सुणो० ॥९॥

सप्त कुव्यसन का वर्णन ।

दोहरा ।

परम जिनन्द दयानिधि, श्री वर्धमान जिनेश ।
महिर करी भविजन प्रति देवे हित उपदेश ॥१॥
दश दृष्टांते दोहिलो मानव भव यह पाय ।
तिरन योग जिन धर्म लहि, तजो व्यसन दुखदाय ॥२॥

श्लोक—सप्त कुव्यसन के नाम ।

द्यूतं च मांसं च सुरा च वेश्या, पापर्द्धि चौर्य परदार सेवा ।
एतानि सप्त व्यसनानि लोके, पापाधिके पुंसि सदा भवन्ति ॥
इहैव निंद्यते शिष्टैः, व्यसनासक्त मानसः ।
मृतस्तु दुर्गतिं याति गत प्राणो नराधमे ॥२॥

समुच्चय व्यसन वर्णन ।

सखी पनियां भरन कैसे जाना, मारग में खड़ा है कान्हा । देशी ।

तजो सात व्यसन दुख दाना यही जिनवर का फरमाना ॥टेर॥
है जूआ खेल जगमांई दोनों भव में दुःखदायीजी ।
धन हानि लोक अपमाना ॥ यही० ॥१॥
पंचेन्द्रिय घात से होई ता सम अभक्ष्य नहीं कोईजी ।
त्यज अभक्ष मांस का खाना ॥ यही० ॥२॥
मद्यपान है बहुत अपावन कुलका न लाज सुध रावनजी ।
मर जावे नरक ठिकाना ॥ यही० ॥३॥
गणिका से करे कोई प्रीती, होय जग में कुजस फजीतीजी ।
नहीं करे प्रतीत सममाना ॥ यही० ॥४॥

महा दुष्ट व्यसन है शिकारी, मारत गरीब त्रण चारीजी ।
करे दुग्गत वधिक पयाना ॥ यही० ॥५॥
है बुरा चोरी का करना, इह भव परभव दुःख भरनाजी ।
वध बन्धन सहित अयाना ॥ यही० ॥६॥
पर त्रिया अधोगति दाता, यही सब भव ग्रन्थ सुनाताजी ।
भव खोय होय पिछताना ॥ यही० ॥७॥
एक एक व्यसन जिने धारे, गये नरक निगोद विचारेजी ।
सुख चैन कहां से पाना ॥ यही० ॥८॥
अमीरिख कहे व्यसन निवारो, करनी कर आतम तारोजी ।
धारो हित शीख सयाना ॥ यही० ॥९॥

——×——

जुआ खेल निषेध ।

सुणो चन्दाजी सीमधर परमातम पासे जायजो ॥ यह देशी ॥

सुनो प्राणीजी, जुवा खेल दुःख दायक दूर निवारजो ।
हित जाणीजी, श्री जिन शीख अनूप हिया मांहि धारजो।टेक
सब पातिक मूल यही गहिये, इण लंछन से आपद लहिये ।
दुःख कलह दारिद्र भवन कहिये ॥ सुनो० ॥१॥
अपजश जग में लहिये जेतू, भव भ्रमण विपत पातिक हेतू।
निज गुण रवि ढांकन जिम केतू ॥ सुनो० ॥२॥
घर हाट द्रव्य गहेना खोवे, इण व्यसन थकी निर्धन होवे ।
पत खोय नयन भर भर रोवे ॥ सुनो० ॥३॥
तस सयण कुटुम्ब नहीं नेह धरे, पुर में नहीं कोई परतीत करे।
घर तज मुख लेई विदेश टरे ॥ सुणो० ॥४॥

धरमी जन सगत नहीं भावे, गुरु आगम शीख नहीं चावे।
नहीं धर्म क्रिया सुकृत ठावे ॥ सुणो० ॥५॥
कौरव से पांडव खेल रम्या हारी नृप पद वन मांहि भम्या।
नल दमयंति दुःख खूब लम्या ॥ सुणो० ॥६॥
जुवा सम और अनीति नहीं दुरगति दायक व्यसन शीख यहीं।
कहत अमीरिख जिनराज कहीं ॥ सुणो० ॥७॥

मांस मद्य निषेध।

भविक जीव जिन आनन्दकारी ॥ यह देशी ॥

श्री जिन हित उपदेश उचारी निरवद्य वचन कहे सुखकारी।टेर
मांस कुव्यसन तुम त्यागो, जिन सग पाप बढ़े शिर भारी।
अभीख आहार करे जेह प्राणी, विपत सहे दुरगत दुखकारी।श्री०
जंगम जीव विनाश किये तैं, मांस तणी उत्पत्ति इम भारी।
आप निर्दय जीव अधर्मी वैर बधाय नरक दुःख त्यारी ॥श्री०
स्पर्श आकृति गंध अशुची मांखी वृन्द करे भिनकारी।
नाम लेत दुर्गंछा उपजावे किम रुचि लावत दुष्ट अहारी ॥श्री०
जप तप दान ध्यान शुभ क्रिरिया कष्ट अनेक करे अविचारी।
मांस मद्य से निष्फल होय सब शास्त्र पुराण वचन हितकारी।श्री०
अशुचि मूल बुरी मदरी से श्रमी कुल राशि कुवासित न्हारी।
उत्तम नर कुलवंत विवेकी करुणापर तजे सुविचारी ॥श्री०
मांस आहारी हिये नहीं करुणा, बाहे चित्त धर्म आचारी।
महाघातक नर धरमी रेवती वक राजा गयो नरक सिधारी।श्री
इम जाणी पातिक यह छोड़ो जिम भव भ्रमन विपत टल ज्यारी।
कहत अमीरिख जीव सधर्मी करुणा चित्त धारो नरनारी ॥श्री०

मद्यपान निषेध ।

मेरी मेरी करता जनम गयोरी ॥ यह देशी ॥

वीर जिनंद कहे सुनो, भाई मदिरा पान तजो दुःखदाई ।टेर।
दूषण अधिक सुरा जल मांई, कारण तजिये हरखाई ॥ वी०
कीटक राशि कुवासी दहाई, छीवत ही शुचेता सब जाई ॥वी०
पीवत शुध वुध सब विसराई, लखे त्रिया भगनी सम माई॥वी०
विह्वल विकल वचन शुधिनांई, लाल पड़े माखी मुख छाई॥वी०
धरनी पात शिथिल तन थाई, वसन विहीन ज्यूं लाज गंवाई।वी०
या सम और कहा निषिधाई, यों जानि जन ऊँच तजाई ॥वी०
धिक् २ है तस जीवित ताई, जिणे मद्यपान गहि निठुराई॥वी०
दीपायण चित्त कोप उपाई, जादव नाश कियो छिन मांई ॥वी०
मदिरा मांहि जो चित्त लुभाई, नरक निगोद में वास वसाई॥वी०
कहत अमीरिख निज हित चाई, तज कुव्यसन ज्यू सुरपद पाई।वी

वेश्या संग निषेध ।

चलो सखी कुछ जेज न करिये ।। यह देशी ॥

धार चतुर नर शीख प्रभु की, जिण से भव जल वेग तिरे ।
वेश्या व्यसन निवार मार मन, ज्यों तेरे सब काज सरे ॥धा०
कपटन कुटिला परधन ठगवा, वोले मुख मीठी वाणी ।
कामी मृग को मोहपाश में, वाधे विविध कला ठाणी ॥धा०
रग पतंग सम प्रीत जतावे, द्रव्य माल सब ठग लेवे ।
निर्धन जान नेह झट तोड़े, कुटिला छेह तुरत देवे ॥धा०॥

चाहत मीच तथा मुख की सब, छीजत ही सुचिता जावे।
मदिरा मांस करे नित भक्षण मूरख धिन क्यों नहीं लावे ॥५
जो गणिका संग लीन भया है, धिक् २ ही कहिये तिनको।
धर्म प्रेम नहीं आवे मन में परभव को डर नहीं जिनको ॥६
धम्मील कुमर चारुदत्त सेठी गणिका संग नेह जोड़ी।
द्रव्य साथ निरधन करि काढ़यो कारमी प्रीत तुरत तोड़ी॥७
यों जानी गणिका संग छोड़ो शियल व्रत चित्त में धारो।
कहत अमीरिख धर्म आराधी करनी कर आतम तारो ॥८

शिकार निषेध (लावणी)

क्यों होवे लफ्ज बेवफा भाल दिखलावे ॥ यह देशी ॥

सुण आगम वचन अनूप शिकार निवारो।
प्रभु भाखे छुद्रजा जीव कोई मत मारो ॥ टेर ॥
अटवी में रहे हैं जीव गरीब बिचारा
इत उत छिप अपना प्राण बचावत सारा।
है कायर दीन स्वभाव सभी निरधारा,
सब ही से डरे नहीं करे द्रोह रहे न्यारा ॥
तृण पोषण को नित खिचा रहे सुख चारो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
नहीं रोष करे कोई साथ कपट नहीं जाने,
नहीं द्वेष भाव कर दोष किसी पर ठाने।
नहीं करे द्रव्य का लोभ मिले सोही खावे
इम चरनी गरीबी सब कोई नर पहिचाने ॥
जीवित सम जग में और नहीं कछु प्यारो ॥ प्रभु० ॥ २॥

मृग शशा आदि वन में, रहे जीव अपारो,
तिहां जाय वधिक निरदय लेई हथियारो।
हा हा ! हिरदय के कठोर दया नहीं धारे,
नर एक स्वाद के काज अकाज विचारे ॥
अरे किम चालेरे हाथ गरीब पर थारो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
परप्राण लूट के निज सुख चाहे भाई,
पण बदला पीछा देना पड़े तुझ तांई ।
एक एक रोम दुःख सहस्र वर्ष भुगताई,
दाख्यो महा भारत मांहि डरो मन मांई ॥
एक दया धर्म सब ग्रन्थ पन्थ में उचारो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥
यह शिख कहिये धर भव प्राणी चित्त डरिया,
करणा चित्त धारी जीव अनन्त उधरिया।
महा दुष्ट अधरमी वधिक नरक संचरिया,
चौरासी लक्ष में मरन अनन्ता करिया ॥
कहे अमीरिख यह व्यसन तजो दुःखकारी ॥ प्रभु० ॥५॥
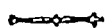
चोरी निषेध ।

किण मारी पिचकारी रे, मैं तो सारी भींज गयी ॥ यह देशी ॥

परधन हरन व्यसन है खोटो, करिये चित्त विचारो रे।
सब ने धन प्यारो ॥ परधन० ॥१॥
चमक रहे मन माहि सदाई, चिंता चित्त अपारो रे।
कारन विपतारो रे ॥ परधन० ॥२॥
माल धणी पकड़े कोई अवसर, देवे शास्त्र प्रहारो रे।
बांधे बंध करारो ॥ परधन० ॥३॥

प्रजापाल कर कोप लोप से करत जीव तज प्यारो रे।
पातिक दुःखकारो ॥ परधन० ॥४॥
दुःख दैवी मरी मर्क सिधावे, तिर्हा पश संकट सारो रे।
भव भव दुखे सुधारो ॥ परधन० ॥५॥
विपत मूल यह व्यसन जान के परधन भूल विचारो रे।
पुण्या न विदारो ॥ परधन० ॥६॥
सत्य घोष परधन के कारण मर गयो नरक मझारो रे।
नहीं अन्त दुःखारो ॥ परधन० ॥७॥
कहत अमीरिख व्यसन निवारो जिम कहे पद श्रेकारो रे।
निज आतम तारो ॥ परधन० ॥८॥

परनारी निषेध ।

भावो हरि राम रमा वाला ॥ यह देशी ॥

चतुर नर व्यसन तजो भाई अन्य पर वनिता दुखदाई हो।
चतुर जिन वचन हिया में धारो रे परनार की सग निवारोहरेरा
दोष जग में अपजस भारी कहे फिट फिट सब नरनारी।
दोष भव भव में अधिक खवारी हो ॥ चतुर० ॥१॥
आय तप जप संजम करनी किया पर दुख सम्पद हरनी।
मोक्षपुर द्वार बन्ध करनी हो ॥ चतुर० ॥२॥
नरक पहुंचावन अगवानी परम तज परसी सम ज्ञानी।
तेज बल पौरुष ज्यों पानी हो ॥ चतुर० ॥३॥
आय तन धन जोबन सारो हणे कुल माहिं कलंक कारो।
आय परतीत सुजस चारो हो ॥ चतुर० ॥४॥

भूप जाने लूटे घर को, विटंबन देवे तिण नरको ।
मरी सिधावे सो जाय नरक पुरको ॥ चतुर० ॥५॥
तप्त थंभे से चिपकावे, सब अङ्ग भस्म होय जावे ।
पड्यो परवश महा दुःख पावे हो ॥ चतुर० ॥६॥
रावण पद्मोत्तरादिक राया, जिन्हों का अपयश जग छाया ।
राज हारी दुरगत पाया हो ॥ चतुर० ॥७॥
अमीरिख कहे समझ ज्ञानी, तजो पर वनिता इम जानी ।
धार चित्त में आगम वानी हो ॥ चतुर० ॥८॥
संवत उगणीसे चोपन कहिये, चैत्र विद पड़वा बुध गहिये
धरम में वंछित फल लहिये हो ॥ चतुर० ॥९॥
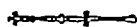
कलश

गीता छन्द ।

इह भांन सातो व्यसन दुरमग, जो मनुज पद ठावई ।
मरी लहे दुरगत सहे वेदन, जनम मरन वधाव ही ॥
चित्त धार श्री जिन शीख सुगना त्याग भाव जूं लाईये ॥
इम कहे अमीरिख करो सुकृत, जिम अचल सुख पाईये ।
भवि जिम अचल सुख पाईये ॥१॥

अध्यात्म व्यौपारी चेतन वनजाराको चेतावनी।
सखी पनियां भरन कैसे जाऊं, मारग में खड़ा है कान्ह। देशी।

गाफिल मत रहे वनजारा, मारग में बसे है ठगारा ॥ टेर ॥
भव अटवी में भटकत आया, बड़ा शहेर मनुष्य भव पायाजी।
अब करले यहाँ व्यौपारा ॥ मारग० १॥
शुभ सत्तावन संवर के, लेना पोठी माल संग भरकेजी।
समकित दयाल हुंशियारा ॥ मारग० २॥
क्षायिक चार किराना, क्षायिक वस्तु अपनानाजी।
होना शिवपुर को तइयारा ॥ मारग० ३॥
रस्ते में रखना हुशियारी, है क्रोध दावानल भारीजी।
अभिमान है विषम पहाड़ा ॥ मारग० ४॥
वंस जाल कपट की है झाड़ी, तृष्णा महा दुस्तर खाईजी।
तिहाँ मत ठहरे वणजारा ॥ मारग० ५॥
करे करम चोर हेरामा, सब लूटे माल खजानाजी।
राग द्वेष दोई बटमारा ॥ मारग० ६॥
पंच इन्द्रिय अपर ठगारी, मन पकड़ा करे अति ख्वारीजी।
रहना इन सबसे न्यारा ॥ मारग० ७॥
ऐसे बहुत विषम मारग में, रखना विचार पग पगमें जी।
संग माल अखूट तुम्हारा ॥ मारग० ८॥
क्षय उपशम भाव का सौदा, क्षायक कर्म बेच सब दीनाजी।
हुआ नफा अनन्त अपारा ॥ मारग० ९॥
आतम धन जिसने कमाया, हुआ सोही शिवपुर राया।
कहे अमीरिख सुविचारा ॥ मारग० १०॥

उपदेशी ।

फगुवा की तथा रसिया की देशी ।

गरवे मति देख संपद गहेरी, गरवे मति० ॥ टेक ॥

बादल छांय स्वपन कीरे माया ।
थिर नहीं जैसे समुद्र लहेरी ॥ ग० ॥१॥

पाप करी माया रिध जोड़ी ।
अन्त समे संग नहीं तेरी ॥ ग० ॥२॥

मोहकरी मूरख ललचावे ।
मानत धन सम्पद मेरी ॥ ग० ॥३॥

चक्री वासुदेव जग राजा ।
तिण घर पण नही थिर ठहेरी ॥ ग० ॥४॥

काम भोग जग में दुखदाई ।
जिनराज कहे ये तो फल जहेरी ॥ग०॥५॥

पुन्य विना पल भर नहीं ठहरे ।
तूं मति जान यह रिद्ध मेरी ॥ ग० ॥६॥

गफलत में बेठो किम मानी ।
शिर पर काल खड़ो वैरी ॥ ग० ॥७॥

कहत अमीरिख सुकृत करले ।
ज्यों मिल जाय मुगत शेरी ॥ ग० ॥८॥

सतगुरु महिमा ।

देशी पूर्ववत् ।

सतगुरु बिना कौन सुनावे वाणी सतगुरु बिना० ॥ टेक ॥
विषय कषाय दावानल ठारन उपशम रस सींचे पाणी ॥स०
मंदिर करी मर्म रोग मिटावे, करे पावन करुणा आणी ॥स०
ज्ञान मेघ समकित के दाता धर्म अधर्म पारख जाणी ॥स
परदेशी समकित शुद्ध पायो केशी गुरु मिलिया ज्ञानी ॥स०
जीव मारन वन आप संजोती तिहां भेट्या मुनिवर ध्यानी ॥स०
राजरिष तब संजम लीधो काम दशा चित्त मगआनी ॥स०
मुनि अनाथी श्रेणिक नृप ने शुद्ध मारग दियो सुखदानी ॥स
भव भव तारन निज पद धारन मुक्ति पहुंचावन अगेवानी ॥स०
कहे अमीरिख गुरु उपकारी, सेवकरो नित भवि प्राणी ॥स०

हितोपदेश ।

जिया मारी पिचकारी रे ॥ यह देशी ॥ (होरी)

श्री जिन धरम न जोया रे, निरर्थक भव खोया ॥ टेक ॥
काल अनन्त भम्यो जगत में निजगुण तत्त्व बिसारी रे ।
मोह नींद में सोया ॥ श्री जिन० ॥१॥
अशुभ करम संचय कर प्राणी पाम्या कष्ट अपारो रे ।
विषयन के संग मोया ॥श्री जिन०॥२॥
रतन चिंतामणि नर भव पाई मिथ्यामत वश होई रे ।
भव यूं ही विगोया ॥ श्री जिन० ॥३॥
काम क्रोध मद मान में राच्यो परभव को डर नाहिं रे ।
सुख बीज न बोया ॥ श्री जिन० ॥४॥

आगम वचन समुद्र भरा है, निज गुण समय विचारी रे।
मन मेल न धोया ॥ श्री जिन० ॥५॥
जैसे काग उड़ावन कारण, रतन चिंतामणी हारी रे।
मूरख फिर रोया ॥ श्री जिन० ॥६॥
अमीरिख अजहु कर सुकृत, जिम परभव सुख पावे रे।
निज ज्ञानउ जोया ॥ श्री जिन० ॥७॥

पुनः सुलट।

राग पूर्ववत्।

जैन धर्म जिणे कीना रे, नरभव फल लीना ॥ जैन० ॥टेक॥
आरभ परिग्रह खोटा जाणी, राचे नहीं तिण मांहि रे।
भव भ्रमण से बीना ॥ जैन० ॥१॥
देव गुरु और धरम ये तीनों, रतन अमोल पिछानी रे।
शुद्ध भाव से चीना ॥ जैन० ॥२॥
तन धन जोवन अथिर जाण के, निज गुण में रहे राची रे।
जिन वचन प्रवीना ॥ जैन० ॥३॥
समकित ज्ञान चारित्र आराधे, साधे तप जप सारा रे।
शिव मारग जीना ॥ जैन० ॥४॥
राग द्वेष मद मोह निहारे, काम क्रोधादिक मारे रे।
वैरागे रहे भीना ॥ जैन० ॥५॥
आप तिरे और भविजन तारे, जनम मरन दुःख टारे रे।
करे कर्म कुं छीना ॥ जैन० ॥६॥
कहत अमीरिख महागुण धारी, चरन शरन सुखकारी रे।
धन धन नस जीना ॥ जैन० ॥७॥

श्री महावीर जिन के ११ गणधरों का लेखा।

दुहा।

श्री सतगुरु चरणे नमूं, वंदू ग्यारह नाम ।
विघन विदारन सुख करन, सेवक ने सुखदाय ॥१॥
वर्धमान स्वामी तणा, एकादश गुणधार ।
नाम ठामादिक वरणवुं, सांभलजो नरनार ॥२॥

ढाल ।

वीर जिणंद समोसरण पधारी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ यह देशी ॥

(समुच्चय २० बोल)

प्रथम १नाम २जन्मनगर, ३जन्म क्षेत्र कहीजे ।
४पिता ५माता ६गुण गोत्र ७आठ वय ग्यारह लहीजे ॥
९गुरुदीक्षा १०परिवार ११मन मणिया पछी केता ।
१२संयमवय १३संलाग १४पूरी १५छद्मस्थ रहि केता ।
१६केवल पद सर्व १७आउखोय, १८संथारो १९सिद्ध ठाम ।
२०गति कमल तेह पामिया ते दाखूं सब नाम ॥
ते दाखूं सब नाम ॥१॥

१ गणधर नाम ।

इन्द्रभूति अग्निभूति वायुभूति आयो,
विगत सुधर्मा मंडीपुत्र छट्ठा पीछाणो ।
मौर्य पुत्र अकम्पीत आठमा जपिये भावे
अचल भ्रात मेतारज अपता सब गुणआणे ॥
श्री प्रभासजी ग्यारमा ये ग्यारे गणधार
मन वचन काया भावसूं जपिये वारंवार ॥१॥

२. जन्मनगर नाम ।

प्रथम तीन गणधार, गाम ऊचर पहिचानो ।
चौथा पांचमां दोय, कोलाग सन्निवेश वखानो ॥
छठा अरु सातमा दोई, आठमा मिथुला नगरे ।
नवमा कौशलपुर जोई, दशमा तुंगिया नगर में ॥
ग्यारमा राजग्रही मांय, ग्याराई गणधर तणा ।
जनम नगर सुखदाय ॥

३. जन्म नक्षत्र ।

ज्येष्ठ कृति का स्वांति, श्रवण नक्षत्र विचारो ।
पंचम पूर्वा फाल्गुनी, आर्द्रा सुखकारो ॥
सातमा गणधर जनम नक्षत्र रोहिणी कहिये ।
उत्तराषाढ़ा मृगशीर्ष, दसमो अश्विनी लहिये ॥
पुष्प नक्षत्र ग्यारमाए, जन्म लियो है कृपाल ।
मात पिता आनन्द भयो, वरती मंगल माल ॥

४-५. माता पिता के नाम ।

त्रिगणधर वसुभुति पिता, पृथ्वी ३महतारी ।
धनमित्र ४वारुणी मात धर्मिल ५भद्दिला गुणधारी ॥
धनदेव ६विजया देवी, मौरीज ७विजया दे माता ।
देव ८जयंति माता, ९वसुनन्दा सुत नाता ॥
दत्त नाम १०वरुण कहिये, सूत दशमा गणधार ।
बल तात ११भद्रावती, पिता मात सुखकार ॥५॥

९–६. गोत्र, जात, ज्ञान, गुरु. ये चार बोल

प्रथम तीन गणधार गोत्र गौतम तस कहिये ।
४भारद्वाज ५अग्निवेस विशिष्ठ छठा लहिये ॥
७काश्यप ८गौतम हार्य गोत्र नवमा को ।
गुणिये दशमा ग्यारमा चोय गोत्र कोडिन्यसु गुणिये ॥
जात कही ब्राह्मण सधीये चार वेद का ज्ञान ।
त्रिशलानंद जिनवरमी गुरु कहिये वर्धमान (२) ॥६॥

१०–१३ दीक्षा परिवार, छद्म मस्था, संघयण, संठाण ।

प्रथम पांच गणधार, सयम पांच सें सग लीधा ।
छट्ठ सातमा साढ़ी तीनसें संग मसिद्धो ॥
शेष चार गणधार तीनसें पुरुषना सगे ।
पांची सघसो ग्रन्थ लियो संजम अतिरंगे ॥
बारह ग्रन्थ मथिया सहुए वज्र रिषभ संघयेण ।
सम चौरस संस्थान तर्हं मसमूं जिनरयेण ॥७॥

१४ गृहवास ।

१इन्द्रभूति पचास वर्ष रहिया घर माँई ।
दूजा छयालीस वर्ष तीजा बंयालीस ताँई ॥
चौथा पंचमा पचास छठा त्रेपन गृहधारी ।
सातमा पैंसठ पण आठमा अड़तालीस अगारी ॥
६छीयालीस १०छत्तीस लगेए ११सोलह बरस गृहवास ।
तदनंतर संजम लियो चरम जिनेश्वर पास (२) ॥८॥

१५. छद्मस्थ ।

इन्द्रभूति वर्ष १तीश, २दश ३दश ४द्वादश वासा ।
५बेतालीश ६चउदे ७चउदे, अड नव चिमासा ॥
नवमा द्वादश वर्ष, वर्ष दशमा धारो ।
ग्यारमा श्री प्रभास वर्ष आठो सुविचारो ॥
रहिया छद्मस्थ ही पणेए, एता वर्ष प्रमाण ।
फिर शुभ ध्याने पामिया, निर्मल केवल ज्ञान (२) ॥६॥

१६. केवल पर्याय ।

इन्द्रभूति द्वादश वर्षा, लग केवल ज्ञानी ।
२सोले ३अटारे वर्ष, ४अटारे ५आठ प्रमानी ॥
छट्टा सोले वर्ष, वली सप्तम पण एता ।
अष्टम एक वीश वर्ष, चतुर्दश नवमा केता ॥
दशमा ग्यारमा ए दोइण, षोडश वर्ष विचार ।
रहिया गणधर देवजी, केवल पर्याय धार (२) ॥१०॥

१७. सर्वायु ।

पहिला बावन वर्ष, दूसरा चुम्मेत्तर ।
तीसरा सित्तर वर्ष, चौथा अस्सी लग गणधर ॥
पंचम एक शत वर्ष, ६त्रियासी वर्ष प्रमानो ।
७पंचावन ८अटोतर, ९बहोतर वर्ष पीछानो ॥
दशमा को बासठ तणो ए, ग्यारमा को चालीश ।
सर्व आउखो जानिये, फिर भये त्रिजग ईश (२) ॥११॥

१८-२०. सिद्धभूमि, संलेखना, गति ।

प्रथम पांचमा दोय नगर, राजग्रही जानो ।
अवर शेष गणधार, ज्ञातवन खण्ड वखानो ॥

मच भमराम एक मास मोक्षगति पाम्या सारा।
अजर अमर अधिकार हुआ कर्मों से न्यारा॥
जन्म मरण दुःख मेटाने ए कीधो मवमों अन्त।
कहत अमीरिख शाश्वता, हुआ सिद्ध भगवन्त (२)॥१२॥

कलश।

गीता छन्द।

इम कह्या गणधर नाम हितधर जपत सुख मगल करे।
मन वचन काया ध्यान धरतां विघन दुःख आगत हरे॥
इम कहे अमीरिख सुख मावे जो गुण गावशी।
तज जनम मरण अनंत शिवपुर वास अविचल पावशी॥१३॥

कृतांत काल पर दृष्टांत।

थारी अम्बूजी बैंगी दुम पर वारी। यह दशी॥

काल महा बलवन्त जगत में सतगुरु यों दरसावे।
ममता मोह मायावश प्राणी निर्विक जन्म गमावे॥
सुण भव प्राणी यह काल महा दुःखदायी॥ सुण०॥१॥
वरणुं एक दृष्टांत मनोहर सुणजो चित्त लगाई।
जग रचना सब अथिर जाण के धर्म करो सुखदाई॥सुण०
बसन्तपुर नगर में रहे तो शेठ सिरीधर एक।
द्रव्य अभूत भर्यो तस घर में पूर्व पुण्य विशेख॥ सुण०
गरवाशो देखी रिध सम्पद आरंभ अधिक बधावे।
नूतो महेल उचेल ललाई ऊंची नींव दिरावे॥ सुण०

सेड कारीगर शेठ प्रकाशे, बांधो महिल उत्तंग ।
जाली झरोखा गोख अटारी, कीजे अति मन रंग ॥ सुन०
शेठ हुकम में चाकर केई, लेवण गरजी दाम ।
पत्थर चुण चूना से टीपे, उमंग धरी करे काम ॥ सुन०
सेठ हरख ने नित नित चड़ने, निरखे मनोहर पेड़ी ।
शिल्पी ने कहे ढील न कीजे, आई दिवाली नेड़ी ॥ सुन०
शिल्लावट ने कहे शेठजी, करके अति चतुराई ।
चित्र सुरंग महेल करो नीको, देशुं द्रव्य सवाई ॥ सुन०
निरख महेल उतर्यो जब हेठे, भोजन की हुई त्यारी ।
जिमण काज रसोड़े पहोंतो मन में हरख अपारी ॥ सुन०
गादी बिछाय जुगत कर नीकी, मांडी सोवन थाल ।
बेटा पोता पास बिठाया जीमण ने उजमाल ॥ सुन०
सुंदर वनिता दूजी परणी यौवन रूप अपार ।
परोशन काजे हेत धरीने, बेठी रसोड़ा बार ॥ सुन०
नाना विध भोजन मन गमतां, व्यंजन अधिक रसाल ।
हरख धरी प्रीतम परोसे, ऊपर भम रह्यो काल ॥ सुन०
कारीगर कहे शेठ पधारो, गोखां काम बतावो ।
काम बतावन भोजन छोड़ी, ऊठ्यो आण उमावो ॥ सुन०
छूट्यो हथोड़ो तिण अवसर में, लागो आय कपाल ।
महिल झरोखा रेह गया झलता, शाहजी कर गया काल ॥सु०
थाल परोसी रह गई पूरी, खाय शक्यो नहीं अन्न ।
महिल मांही वश्यो नहीं पल भर, आश रही सब मन ॥ सुन०
ऐसो काल जोरावर जग में, सांभलजो नरनार ।
यह संसार स्वप्न सम जाणी, कीजे जिन धर्म सार ॥ सुन०
झूठा सुख में चेतन उलझयो, निज गुण याद न आवे ।
कहत अमीरिख धर्म पसाये, जनम मरण मिट जावे ॥ सुन०

मगर देखतां कोई सिधाया मुज मे यों ही आना रे।
तीन लोक में धाक काल की चेत सयाना रे ॥ चो॰
श्री जिन धर्म अराधो प्राणी पाप करम से डरिये रे।
अमीरिख कहे सुकृत साध्या भव जल तरिये रे ॥ चो॰

पांच इन्द्रियों की परवशता।

राग पूर्ववत्।

चेतो प्राणी रे २, गुरुदेव कृपा ज्ञान बतावेरे चेता प्राणी ॥टे॰
जो पंचेन्द्रिय मांहि मगन है विषय कषाय मे वारे रे।
तब ज्ञान जप तप संजम किरिया काम न सारे रे ॥ चे॰ ॥१
विषय स्पर्श इन्द्रिय वश कुंजर परवश होय बंधावे रे।
रसना वश जल जीव मिन मिन्न प्राण गमावेरे ॥ चे॰ ॥२
प्राण सुवास लुब्ध होय भमरा संपुट में लिपटावे रे।
सो पंकज गज तोड़ आप भक्षण कर जावे रे ॥ चे ॥३
रूप सुरंग मनोहर देखी नयन तब वश होवे रे।
दीपक मांहि पतंग पड़ी निर्थक भव खोवे रे ॥ चे॰ ॥४
मधुर आलाप श्रवण में सुन के लुब्ध हुआ वन हिरना रे।
वींधे वधिक बाण से पावे परवश मरना रे ॥ चे॰ ॥५
एक एक इन्द्रिय वश प्राणी इम विध प्राण गमावे रे।
जो पांचों में मगन भया कहो किम सुख पावे रे ॥ चे॰ ॥६
आश्रव विषय प्रमाद तणे वश जावे दुर्गत प्राणी रे।
जनम मरन विपता दुःख पावे कहे जिनवाणी रे ॥ चे॰ ॥७
सामायिक शुद्ध धर्म आराधो जिनगुण सम्यक् धारो रे।
कहत अमीरिख ज्ञान थकी होवे निस्तारो रे ॥ चे॰ ॥८

सुगुण जागोरे ।

राग पूर्ववत् ।

सुगुणा जागोरे २, यो काल बली छिन में लेजाशी रे ॥सुग०॥
काल अनन्तो भटकत चउगत, मोह नींद में सोयो रे ।
निजस्वभाव को छोड़ जीव, पुद्गल सङ्ग मोयो रे ॥ सु० ॥१॥
अशुभ करम वश पड़ियो प्राणी, मिथ्यामत में राच्यो रे ।
शुद्ध मारग को छोड़ और, दुर्गत पन्थ जाच्यो रे ॥ सु० ॥२॥
देव सदोषी गुरु लालची, हिंसा धर्म वधायो रे ।
अमृत जाणी जहिर पियो, कुगुरु भरमायो रे ॥ सु० ॥३॥
हिंसा धरम नांव पत्थर की, सेवे कुगुरु अन्धारे ।
तिरवा केरी आश करी, डूबे मति मन्दा रे ॥ सु० ॥४॥
करी करम दुरगति में पहुंचे, जीव घणो दुःख पावे रे ।
चार गति में जनम मरन को, अन्त न आवे रे ॥ सु० ॥५॥
अब सतगुरु को जोग मिल्यो है, साचा देव बताया रे ।
दया धर्म को धार अनन्ता, शिव सुख पायो रे ॥ सु० ॥६॥
रतन चिंतामणी समये अवसर, वार वार नहीं पाशी रे ।
अब के चुक पाम्यासुं फिर, पीछे पछताशी रे ॥ सु० ॥७॥
दया धर्म कुं मन में धारो, पाप प्रमाद निवारो रे ।
कहे अमीरिख करम तजी, होवे भव जल पारो रे ॥ सु० ॥८

जीव दया।

राग पूर्ववत्।

करुणा धारोरे २, भव जीवा जिससे शिव सुख पावोरे। टेक।
पुन्य उदय से नरभव पायो, श्रावक कुल अवतारो रे।
चिंतामणी सम जोग लेइ, फोगट मत हारो रे ॥ करुणा० ॥१॥
गुरु मुख आगम वाणी सुण मैं परमारथ सम्भालो रे।
छः काया का भेद लेइने, आरंभ टालो रे ॥ करुणा० ॥२॥
जीव जगत का जीतब चाहे, मरण न चाहे कोई रे।
जतन करो जीवां का मित्र, आतम सम जोइ रे। करुणा० ॥३॥
आगम वेद पुरान कुराने दया धर्म सब भाखे रे।
जानवंत मतिजीव सोही छःकाया राखे रे ॥ करुणा० ॥४॥
ज्ञान तणो जे सार दया है श्री जिन एम उचारे रे।
दया बिना तप संजम करनी काम न सारे रे ॥ करुणा० ॥५॥
समकित बिन गया भव के मांहि, करुणा चित्त में आई रे।
मेघकुंवर श्रेणिक सुत नन्दन सम्पद पाई रे ॥ करुणा० ॥६॥
पूरब भव श्री शांति जिनेश्वर शरण परेवो राख्यो रे।
परम ऋषि मेतारज स्वामी, शिवसुख चाख्यो रे ॥ करुणा० ॥७॥
जीव अनन्ता धर्म अराधी पाया भव जल पारो रे।
कहत अमीरिख दया थकी, वरते जय जय कारो रे ॥ क० ॥८॥

३४ अतिशय का स्तवन ।

मंगल की देशी ।

जय जय अरिहन्त दयाला, जग तारक परम कृपाला ।
दीपे अतिशय चौतीस भारी, करू वर्णन अति सुखकारी ॥त्रो०
सुखकारी अतिशय प्रथम जिनके, रोम नख वधे नहीं ।
वली रोग रहित पवित्र देही, है अनूपम गुण मही ॥
गौ दूध सरीखा मांस लोही, श्वास गध पकज सही ।
आकाश है धर्म चक्र, छुत्र त्रय सप्तम कही ॥१॥

दीपे चामर शोभा अपारी, सिंहासन रतना मही धारी ।
एक सहस्र धजा परिवारी, लहके इन्द्र ध्वजा मनुहारी ।।त्रो०
मनु हारि अतिशय कह्यो दसमो, देख पाखण्ड मद गले ।
सच्छाया वृक्ष अशोक रूडो, निरखता आरति टले ॥
सोहत भामंडल पीठ प्रभु के, तेज रवि सम जल हले ।
सम भूमि अति रमणी कचली, कंटक अणी होवे तले ।।२।।

सुखदाय ऋतु छहुं करता, संवर्त पवन रज हरता ।
शुभ गंध उदक वरपावे, रज जोयण एक जमावे ॥ त्रोटक ॥
जम जाय रज निरजीव रूडो, पुष्प धन वरपावणा ।
जाणु प्रमाणे बीट नीचा, पंच वरण सुहावणा ॥
अमनोज्ञ शब्दादिक टले सब, पुन्य ये प्रभुजी तणा ।
वीशमे अतिशय जाण सुगणा, सुभिक्ष जिहा वरते घणा ।।३।।

एकवीशमे देशना प्यारी, सुणे जोजन लग एक सारी ।
अर्ध मागधी भापा उचारी, सुण तृपत हुए नरनारी ।।त्रोटक
नरनारी सब सम अरथ समझे, अतिशय त्रेवीश में ।
जिन चरण शरण पसाये, जन्तु वैर सघला उपशमें ॥

चली अन्य लिंगी आप चमन में, देख जिन छवी मन में।
हारी पिपादे अन्य तीर्थ मान तज चरने मने ॥
रोग मिरगी सो कोप न आवे स्व-पर चक्री को भय नहीं होय।
अतिवृष्टि जिहां नहीं वरषे, थोड़ो पण नहीं ज्यूं जग तरसे ॥ओ
तरसे नहीं टल जाय दुरभिक्ष सात ये न हुवे जिहां।
टल जाय प्राचीन रोग, नूतन रोग नहीं व्यापे तिहां॥
इम तीस चार गिणो अतिशय प्रभु चौथे जिन कहा।
अनुसार तेहने ये प्रकाश्या जिम गुरु मुख में लहा ॥४॥
ऐसे अतिशय धारक स्वामी सुख पाय प्रभू शिरनामी।
प्रभु शिवपुर सुख के कामी, जिम प्रमत अमित गुणधारी ॥ओ
गुण धामी आश्चर्य कथा मोटा जपो मन निश्चय करी।
जिम लहे वंछित सुख सम्पत, विपत दुःख जावे टरी॥
चन्द अमीरिख भावसुं प्रभु महिर कीजे हितधरी।
निज दास जाणी नाथ, भव भव सेव दीजो आपरी ॥५॥

नरक दुःख वर्णन।

राग काफी होरी।

रे जिया जिन धम न पाया हसी हसी कर्म कमाया रे जिया टेर
कुगुरु कुदेव कुधर्म के मांहि निशिदिन चित्त रमाया।
सुगत पन्थ गुरु दूर तजी ने, मिथ्या मत घट छाया॥
वृथा नर जन्म गमाया ॥ रे जिया० ॥१॥
परजीवों का मांस सुकते नहीं करुणा दिल लाया।
कपट भृष्ट परपंच करी ने, जग जन को ठग खाया॥
पराया मास चुराया ॥ रे जिया० ॥२॥

विषय भोग में मगन भया है, पर त्रिया से ललचाया ।
लोभ मोह तृष्णा अति करके, पाप से द्रव्य कमाया ॥
धर्म मारग विसराया ॥ रे जिया० ॥३॥

अशुभ करम अति संचय करके, नरकां मांहि सिधाया ।
परमाधामी मिल पुद्गल से, मारूं मार मचाया ॥
त्रिशूलां अधर ऊठाया ॥ रे जिया० ॥४॥

पकड़ पाव सिल्लापर पटके, अम्बर मांहि भमाया ।
सरप श्वान सिंह काग रूप में, तोड़ तोड़ तन खाया ॥
जीव अधिका दुःख पाया ॥ रे जिया०॥५॥

कूट सामली हेट विठाया, वैतरणी में वहाया ।
पकड़ पांव कुम्भी मांहि घाल्यो, अग्नि मांहि पचाया ॥
जीव परवश विललाया ॥ रे जिया० ॥६॥

कान नाक जिव्हा छेदी ने, नयन में तीर चलाया ।
तातो थम्भ लोह मय करके, तिण से वाथ भराया ॥
अङ्ग सब भस्म कराया ॥ रे जिया० ॥७॥

मनुष्य जन्म महा उत्तम पाई, सुकृत नहीं कमाया ।
धर्म ध्यान गुरु ज्ञान न मान्यो, श्री जिन नाम न भाया ॥
तभी इतना दुःख पाया ॥ रे जिया० ॥८॥

कीधा कर्म छूटे नहीं प्राणी, शास्त्र मांहि फरमाया ।
दुष्कृत छोड़ सुकृत को आराधो, होवे शिवपुर राय ॥ ।
अमीरिख सत्य वताया ॥ रे जिया० ॥९॥

वली भव्य जिंगी श्राप वमन में, देख जिन सुखी मन में।
हाथी पियाद भव्य तीर्थ, मान तज वरनै नमें ॥
रोग मिरगी स्रो कोप न श्रावे, स्व-पर चक्री को भय नहीं होवे।
श्रतिवृष्टि जिहां नहीं बरषे, थोड़ो पण नहीं ज्यू जन तरसे ॥०
तरसे नहीं उक्त श्राप दुरभिक्ष सम ये न हुवे जिहां।
टल जाय प्राचीन रोग नूतन रोग नहीं व्यापे तिहां॥
इम तीश चार गिणा श्रतिशय श्रङ्ग चौथे जिम कह्या।
श्रनुसार तहने ये प्रकाश्या, जिम गुरु मुख में लह्या ॥४॥
ऐसे श्रतिशय धारक स्वामी शुक्र माव नमूं शिरनामी।
प्रभु शिवपुर सुख के कामी, जिन श्ररहंत श्रमित गुणधारी ॥०
गुण धामी श्रावश कहा स्होटा जपो मन निश्चय करी।
जिम लहे वंछित सुख सम्पत्त, विपत दुख जावे टरी ॥
पच्चे श्रमीरिख मावसुं प्रभु भक्ति कीजे हितधरी।
निज दास जाणी नाथ, भव भव सेव दीजो श्राकरी ॥५॥

नरक दुःख वर्णन।

राग काफी होरी।

रे जिया जिन धर्म न पाया हसी हसी कर्म कमाया रे जिया टेर
कुगुरु कुदेव कुधर्म के मांहि निशिदिन चित्त रमाया।
मुगत पन्थ शुद्ध दूर तजी मैं मिथ्या मत मद छाया ॥
वृथा नर जन्म गमाया ॥ रे जिया० ॥१॥
परजीवों का प्राण हरत, नहीं करुणा दिल लाया।
कपट भूठ परपंच करी मैं जग जन को ठग खाया ॥
पराया माल चुराया ॥ रे जिया० ॥२॥

विषय भोग में मगन भया है, पर त्रिया से ललचाया।
लोभ मोह तृष्णा अति करके, पाप से द्रव्य कमाया ॥
धर्म मारग विसराया ॥ रे जिया० ॥३॥

अशुभ करम अति संचय करके, नरका मांहि सिधाया।
परमाधामी मिल पुद्गल से, मारूं मार मचाया ॥
त्रिशूलां अधर ऊठाया ॥ रे जिया० ॥४॥

पकड़ पांव सिल्लापर पटके, अम्बर मांहि भमाया।
सरप श्वान सिंह काग रूप में, तोड़ तोड़ तन खाया ॥
जीव अधिका दुःख पाया ॥ रे जिया०॥५॥

कूट सामली हेठ विठाया, वैतरणी में वहाया।
पकड़ पांव कुम्भी मांहि घाल्यो, अग्नि मांहि पचाया ॥
जीव परवश विललाया ॥ रे जिया० ॥६॥

कान नाक जिव्हा छेदी ने, नयन में तीर चलाया।
तातो थम्भ लोह मय करके, तिण से च
अङ्ग सब भस्म कर

मनुष्य जन्म महा उत्तम पाई, सुकृत ना
धर्म ध्यान गुरु ज्ञान न मान्यो, श्री जिन
तभी इतना दुःख प

कीधा कर्म छूटे नहीं प्राणी, शास्त्र मांहि
दुकृत छोड़ सुकृत को आराधो,
अमीरिख

चेतन मुसाफिर को उपदेश रूप सज्झाय ।

इसको छोड चले बेनी माधव ॥ यह देशी ॥

जाग मुसाफिर समझ सयाना, पाठ निकट दिन थोरा है रे जिय
गोयत काल अनन्त बिताया, मोह नींद मन भोरा है रे ।
निज घर भूल पड्यो अटवी में पंच विषय भ्रम ठोरा है रे जा
देह सराय आयकर ठहरा यही हेतु नहीं तोरा है रे ।
रत्न त्रय निधि पास तिहारे मान अखूट किरोध है रे ॥
मिथ्या निश अंधियारी कारी कुगुरु करम बकोरा है रे ।
काम चोर महा दुष्ट जोर में पकर करत झकझोरा है रे जा०
इन्द्रिय पंच है अवर ठगारी तू मन का अति भोरा है रे ।
माल अखूट लेवे छिन में कर दे निरधन कोरा है रे ॥ जा०
पंच प्रमाद कषाय चार ये हेरू विकट कठोरा है रे ।
आठ चोर संग लागत तेरे राग द्वेष ठगोरा है रे ॥ जा०
पहिरायत गुरु देव दुखियारी क्यों सोता दुर चोरा है रे ।
तज मोह निंद मगन कर मनका शिर पर जमका दोरा है रे ॥ जा०
श्री जिन चरन बोहाठ करके पहोंच म न मिज ठोर है रे ।
अवसर पाय न चूक अमीरिख जोग मिलन फिर दोरा है रे ॥ जा०

उपदेशी ।

राग पूर्वीय् ।

समझ प्यारे हित शिक्षा सुखासी रत्न चिंतामणी खोवे क्यारे टेक
कठिन पुन्य से नरतन पाके, फिर विषियन संग मोवे क्यारे ।
सुरत फल अनमोल छोड के झूठी पोत पिरोवे क्यारे ॥ स०

जिन आगम शुद्ध समुद्र त्याग के, छीलर सर जल डोवे क्यारे।
पाय विवेक टेक गही झूठी, अपनी समझ विगोवे क्यारे॥स०
पत्थर नाव बेठ हिंसा में, आतम रिध डूबोवे क्यारे।
रुधिर भर्यो पट रुधिर के मांहि, मूरख मल-मल धोवे क्यारे॥स०
संचित कर्म उदय दुर्गत में, व्याकुल हो मन रोवे क्यारे।
पाप करत पहिले नहीं सोच्यो, अब रोवे तो होवे क्यारे॥स०
काल अनादि भयो मिथ्यावश, मोह निंद फिर सोवे क्यारे।
कहत अमीरिख अवसर पाया, गाफिल इत उत जोवे क्यारे॥स०

——x——

कुमति ग्रसित जन को हित शिक्षा।

उपदेश—राग-बनजारी।

एक मान शीख शुद्ध मेरी, मत हो दया का वेरी॥ टेक॥
छः काय जीव की हिंसा, करे धरम काज परस साजी।
घट छाई कुमत अन्धेरी॥ मत०॥१॥
पहिली हिंसा फिर धर्म, कहे झूठ पाठ निश रमानी।
हिंसा फल कड़वे हेरी॥ मत०॥२॥
चेइय पद प्रतिमा ठावे, सब ठाम अर्थ यही गावेजी।
केइ सूत्र पाठ दिये फेरी॥ मत०॥३॥
चेइय अठा पुढवी विणाशे, प्रभु दशमे अङ्ग प्रकाशेजी।
तस मिले नरक पुर शेरी॥ मत०॥४॥
अमृत में जहर मिलाया, अपने मन को समझायाजी।
आमे मुश्किल जमकी कचेरी॥मत०॥५

हिंसा से तो शुम गति पावे, फिर कुगति में कुण जावेजी।
यह समझ भली नहीं तेरी ॥ मत० ॥४॥
कहे अमीरिख मव माखी, परखो निरखय जिनवाणीजी।
नहीं मोक्ष मिलने में देरी ॥ मत० ॥५॥

अरिहन्त देव को अरजी (लावणी)

फिरती है तेरी तसवीर मेरे चशमों में ॥ यह देशी ॥

अरिहन्त देव भव अन्त करो जिनवरजी।
तुम सुणियो दीन दयाल दीन की अरजी ॥ टेर ॥
जगमांहि लाखों देव नजर सब आते
नहीं शुद्ध मोक्ष की राह कोई दिखलाते।
जो भव सागर में आपही गोते खाते
कहो कैसे वह सेवक को पार लगावे ॥
भयातुर दूषण भरे कर्म के करजी ॥ तुम० ॥१॥
भव स्थिती निकट संसार मेरे अब आया
जिन धर्म चिंतामणी सार पुन्य से पाया।
अरिहन्त नाम निकलंक मेरे मन भाया
भव सफल भया और रोम रोम हरखाया ॥
ज्यूं जाप भव ताप पाप सब हरजी ॥ तुम० ॥२॥
ओपे जग में माखी अपार दुखियारे
करुणा कर तिन को भव सागर से तारे।
अब मैं भी भरोसे बैठा नाथ तुम्हारे,
सब हरो कष्ट भय विपत अनादि हमारे ॥
म्हे अरज करूं फिर है हजूर की मर्जी ॥ तुम० ॥३॥

कर दया नाथ मुझको शरने रख लीजे,
वसु कर्म दुष्ट दुख दाय तिने क्षय कीजे।
शुद्ध सम्यक् शिव साधन अब मुझको दीजे,
तुम कृपा भयें ते तुरत काज सब सीजे॥
कर जोड़ अमीरिख कहे मोक्ष का गरजी॥तुम०॥४॥
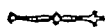
श्री महावीर भगवान का स्तवन।

मनवा नाहिं विचारीरे॥ यह देशी॥

मन तुं क्यूं पछतावे रे, शिर पर श्री अरिहंत बेड़ा लगावेरे।टेर
इन्द्रभूति अभिमान करी, प्रभु पासे आवेरे।
भर्म मिटाय देई संजम, शिवपुर पहोंचावेरे॥ म० ॥१॥
गोशालक जम्माली दोनूं, सुर पद पावेरे।
चन्दन बाला दान दियां सब कष्ट पुलावेरे॥ म० ॥२॥
चण्डकोशिये डङ्क दीयो, प्रभु रीस न लावेरे।
दे समकित उपदेश, आठमें स्वर्ग सिधावेरे॥ म० ॥३॥
अर्जुन माली जिनवर पासे संजम ठावेरे।
षट् मासां मांहि कर्म टाल अविचल पद नावेरे॥म०॥४॥
क्रोधी कुटिल दुष्ट अभिमानी, जो प्रभु ध्यावेरे।
कृपा नाथ प्रभु महिर करी, भव दुःख मिटावेरे॥म०॥५॥
अधम उधारन तारन साहिब सब गुन गावेरे।
अमीरिख त्रिकाल नाथ को, शीश नमावेरे॥ म० ॥६॥

उपदेशी ।

राग ठुमरी ।

समझ समझ गुणवन्त सयाना सत गुरु यों समझावत हैरे।स
विषय कषाय करम वस मोला क्यों नर जन्म गमावतहैरोस
अल्प सुख सरसव सम कहिये दुःख मेरु सम पावतहैरे ।स
इण भव मांहि कष्ट घणेरो गहन बिंदु बरसावतहैरे ॥स
पर भव नरक पशु दुःख अधिका भव भव मांहि भमावतहैरे।स
झूठा सकल व्यवहार जगत का, क्यों निज माल गमावतहैरे।स
शिवपुर सदा शिवपुर सुखदाता अमीरिख दरशावतहैरे ॥स०

नर भव व्यर्थ नहीं गंवाना ।

राग पूर्ववत् ।

चिंतामणी सम नरभव पाके, मूरख व्यर्थ गमावतहैरे ॥ टेर ॥
लख चौरासी भटकत २, उत्तम अवसर पावतहैरे ॥ चिं० ॥१
अशुभ कर्म मिथ्यात्व मोहवश शिव मारग नहीं भावतहैरे।चिं०
कंचन थाल भरे रज मूरख अमृत कुम्भ ढुलावतहैरे ॥चिं
कल्प तरु अज्ञान से काटी बबूल कंटक बोवतहैरे ॥चिं०
उत्तम होय असंजमी सेवत क्यों नहीं चित्त लगावतहैरे ॥चिं०
पर गुण त्याग धार आतम गुण अमीरिख समजावतहैरे ॥चिं०

श्री गज सुकुमालजी महाराज की लावणी ।

राग लगडी ।

जय जय श्री जिनराज नेम महाराज पास उपदेश सुनी ।
सजम लीनो भाव से, धन २ गजसुकुमाल मुनि ॥ टेर ॥
भरत क्षेत्र मध्यखंड देश सोरठ में नगरी द्वारामती ।
इन्द्र हुकम से देवता रची मनोहर शोभ अती ॥
छप्पन क्रोड़ जादव के नाथ श्रीकृष्णचन्द्र त्रिखण्ड पती ।
सब को सुखदाई पुन्य से दिन दिन चढ़ती जिन कीरति ॥
शेर–एक दिन श्रीकृष्णजी आया है जननी पासजी ।
माता मन आरत भई नन्दन खेलावन आशजी ॥
कहे श्रीहरी आज माजी क्यों भया हो उदासजी ।
पुत्र चिंता भेद सब ही दियो ताम प्रकाशजी ॥ ॥
चलत–सुन के माजी के हाल, किया तेला तत्काल ।
रात आधी के काल देव प्रगट भया अर्ज कीनी गोपाल ॥
दीजे माजी को लाल, मेरे भाई के काज तुम्हे याद किया ॥
दौड़–कहे देव सुणो कृष्ण एक वात हमारी ।
होगा तुम्हारे भ्रात महा तेज करारी ॥
छोड़ी सकल संसार होगा सन्त आचारी ।
सुर देके वचन तुरत गयो भवन सिधारी ॥
खड़ी–जब कृष्णराय पोषधा पाल पारनो कीनो ।
कही मधुर वचन विश्वास मात को दीनो ॥
चवि सुर भवसे अवतार कुंवरजी लीनो ।
जादव कुल तारन जनमें नन्दन नगीनो ॥
मिलत–हरखित सब परिवार वृन्द,
आनंद मनावत सकल दुनी ॥ संजम लीनो० ॥१॥

गज तालू सम देह सकोमल गजसुकुमालजी नाम दिया
बाल भाव से अनुक्रम आप कुंवर हुंशियार भया ॥
तिण अवसर श्री नेम पधारे, भव जीवों पर करी दया।
पुर के नरनारी प्रभु का दरशन, कर भव सफल किया ॥

शेर—सजी सेन्या श्री हरी जगनाथ को वन्दन चले,
गज पे विराजे आप गज सुकुमालजी को साथ ले।
देव सोमल सुता मेले कुंवर अन्ते उर मले
भेटया चरम जिनराज का शुभ भाव मन वंछित फले

चलत—प्रभु दीनो उपदेश सम्यो प्रमादि हमेश।
किये माना मव भेष सहा सकट विशेष ॥
तजो राग द्वेष क्लेश छोड़ो मिथ्या मत रेश।
जासे मिले शिव देश कहे नेमि जिनेश ॥

दौड़—कुंवर सुन के प्रभु वचन शाम मन में विचारे।
यही जगत है असार बिन वैराग को धारे ॥
कर विनय कहे प्रभु से सत्य वचन तुम्हारे।
माता पिता को पूछ तजूं जग्त असारे ॥

कड़ी—प्रभु वंदन करके कुंवर भवन निज आवे।
कर जोड़ मात को वचन मधुर फरमावे ॥
जिन वचन अपूरव सुणया आज घर आवे।
दीजे आज्ञा मुझ संजम चित्त वसावे ॥

मिलत—गई मात मुरझाय मोह वश घुमी
अपूर्व मन्द प्यमी ॥ संजम लीनो० ॥२॥

दोय सचेत भयन जल भर के, मोह मधुर बोले वाणी।
सुण नन्द सयाना वचन मुझ बोलो सोच समझ वाणी ॥

पच महाव्रत बावीस परिग्रह दुक्कर सन्त पथ जानी ।
तेरी कोमल काया बाल वय सुख रिध विलसो मनमानी ॥

शेर-कुंवर कहे सातो नरक में, बहोत सकट मे सहा ।
किये वास निगोद माता गर्भ नव महिना रहा ॥
भुगते है कष्ट अनन्त मुख से जात नहीं मोंसे कहा ।
जिनराज आज दया करी यह भेद श्री मुख से लहा ॥

चलत-सुन के नन्दन की बात, सोचे दिल में मात तात ।
नहीं धारे अवदात, कहा वचन अति आर्त ॥
सुन के जद जादुनाथ, बेटा लिया गौद भ्रात ।
नाना विध से समजात नहीं मानी रती ॥

दौड़-एक दिन का करो राज मानो बात हमारी ।
होवे खुशी परिवार फिर मरजी तुम्हारी ॥
बैठाय राज तख्त कहे वचन उचारी ।
दीक्षा की करो आज तुम्हे तुरत तैयारी ॥

खड़ी-तीन लाख सुनैया श्री भंडार से लाना ।
दोय लाख भेजकर ओघा पात्रा मंगाना ॥
नाई को बुलाकर एक लाख दिलवाना ।
हरी हलधर सब ने किया हुकम परमाना ॥

मिलत-कुल कंचन मय रची शिविका,
जड़ित रत्न पंचरंग मणी ॥ संजम लीनो० ॥३॥

महोछव किया अपार, सकल परिवार संग जादव लीना ।
जाय बाग में किये दर्शन, प्रभु पद वन्दन कीना ॥
उतार भूषण पहिन भेषकर, लोच शोच सब तज दीना ।
प्रभु दिये महाव्रत कुंवर शुद्ध, धार लिया जिनमत झीना ॥

गुर-वचन सुन भर कहे माता, सुना गरीब निवाजजी।
प्रात जीवन प्रभु पुत्र भेंट कीनो आजजी॥
है अति सुकुमाल लघुवय, मत कराओ काजजी।
दए वचन था मुझे अब, तुम शरण है महाराजजी॥

वसंत-वचन सीना कुंवर धार सभी आदर परिवार।
आया द्वारिका मझार, मन में शोच भरे॥
गज सुकुमाल अणगार अचंभ दिल में अपार।
वन्दन करके तीन बार, ऐसी अरज करें॥

दोहा-सुनो कृपानाथ अरज अब दीजे सिखाई।
मिल जाय तुरत मोक्ष ऐसी राह बताई॥
प्रभुजी कहे अठम करी समशान में जाई।
पडिमा महो मुनी की अचल ध्यान लगाई॥

छड़ी-जिन वचन सुनी गज मुनी, हरख दिल धारे।
सब सन्त नमी शिव साधन काज पधारे॥
जप ठाय महाकाल ध्यान धर ठारे।
मन वच तन निश्चल दृष्टि अंगुष्ट पसारे॥

मिलत-सोमल विप्र जब देख ध्यान में
करी मुनि पर रीस घनी॥ संयम लीनो० ॥४॥

पूर्व वैरसे नेत्र अरुण कर कहे वचन महा द्वेष भरे।
मुझ सुता के ब्याही हुए फल वास अमोलके लाद मरे॥
यों कही मिट्टी पाल बांधकर, खीर अङ्गार शीश धरे।
मन में भय आयी तुरत ही विप्र सिधायो पाप भरे॥
अचल वेदन सही मुनि समता सुधारस को पिया।
तज कर्म केवल ज्ञान पाया तुरत ही शिव वास लिया॥

प्रातः समय गोविंद श्री जिनराज वन्दन आविया।
लघु सन्त तो दीशे नहीं कह्यो किहां नाथ पधारिया॥
चलत-कहे नेमी जिनराज, लिया मोक्षपुरी राज।
दिया एक पुरुष साज, काज सफल किया॥
सुन के कृष्ण महाराज, किया फिकर दिल के दाज।
कैसे भया ये अकाज, साज किसने दिया॥
दौड़-कहे नाथ जो मरेगा तुरत तुमको निहारी।
जिन वन्द शोकातुर फिरे तत्काल मुरारी॥
सोमल के गये प्राण, देख भूप सवारी।
हरि जाण लिया दुष्ट कीवी देह से खारी॥
खड़ी-भव पूर्व शोक सुत सिर पर रोट बंधायो।
नन्याणु लाख भव भ्रमत उदय में आयो॥
यह कथन अष्ट में अङ्ग प्रभु दरशायो।
श्री सुखारिखजी महाराज मुझे समझायो॥
मिलत-कहे अमीरिख गुनी गुन गावे,
है यह सफल अवतार गुनी॥ संजम लीनो० ॥५॥
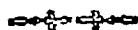
शुद्ध देव स्वरूप निरूपण।

किण मारी पिचकारी रे ॥ यह देशी ॥

सकल दोष से न्यारारे, सोही देव हमारा॥ टेर॥
घन घाती रूप कर्म निवारे, वर्जित दोष अठारारे।
द्वादश गुणधारा ॥ सकल० ॥१॥
लोका लोक त्रिकाल के ज्ञाता, दर्शन ज्ञान उजियारारे।
जाने सकल विचारा ॥सकल०॥२॥

चौंतीस अतिशय पैंतीस वाणी, वयन अमृत धारारे।
सब जीव को प्यारा ॥सकल०॥१॥
सत्य सिद्धांत धर्म उपदेशक, निर्मल ज्ञान दातारारे।
भवि जन्म सुधारा ॥ सकल० ॥२॥
नर सुर इन्द्र सकल पद सेवित, निज आतम गुण धायरे।
दुर्गति भय टारा ॥ सकल० ॥३॥
अधम उधारन तारन स्वामी, भारत अभयन साय रे।
गुण अनंत अपारो ॥ सकल० ॥४॥
दूषण भरिया देव जगत में, पीड़ित विषय विकारारे।
सब लागत खारा ॥ सकल० ॥७॥
कहत अमीरिख गुरुदेव कृपा से, शुद्ध देव उरधारारे।
धन्य भाग्य हमारा ॥ सकल० ॥८॥

——×——

शुद्ध गुरु स्वरूप।

राग पूर्ववत्।

विषय कषाय से दूरा रे, सोही सतगुरु पूरा ॥ टेर ॥
पंच महाव्रत समिति गुप्ति के पालक संत सनूरारे।
जिम चकम हजूरा ॥ वि० ॥१॥
षट् पोडश विध संजम पाले उज्वल भाव पंडूरारे।
अरि करम रिपुरा ॥ वि० ॥२॥
कंचन काच सबो सम भावे सहन परिसह शूरारे।
शिव पंथ समूरा ॥ वि० ॥३॥
द्वादश विध दुक्कर तप धारे करे कर्म चक चूरारे।
वारे विपत अंकूरा ॥ वि० ॥४॥

आर्त रौद्र कुध्यान निवारे, राग द्वेष तज कुरारे।
जगी ज्ञान हिलूरा ॥ वि० ॥५॥
सप्त वीशगुन पूरन भरिया, जाने विषय विष धुरारे।
शिव साधे जरूरा ॥ वि० ॥६॥
आप तिरे अरु भविजन तारे, करत पाप निरमुरारे।
भव भय दुःख चूरा ॥ वि०॥७॥
कहत अमीरिख धन गुरु ज्ञानी, निजानन्द पूरारे ॥
गुण नाहीं अधूरा ॥ वि० ॥८॥

शुद्ध धर्म स्वरूप।

राग पूर्ववत्।

जीव दया उर धारे रे, सोही धर्म हमारे ॥ टेर ॥
दर्शन ज्ञान चारित्र तप ये, शिव मग चार प्रकारे रे।
निर्मल आचारे ॥ जीव० ॥१॥
छहुं काया नहीं मूल विराधे, निरवद्य वचन उचारे रे।
सच अदत्त निवारे ॥ जीव० ॥२॥
शियल रतन जतन करी राखे, ममत्व परिग्रह टारे रे।
रहे पापसुं न्यारे ॥ जीव० ॥३॥
इह विध पंच महाव्रत रिख के, श्रावक के व्रत बारे रे।
सब अव्रत वारे ॥ जीव० ॥४॥
दान शीयल तप भाव अराधे, धर्म भेद यह चारे।
उपयोग विचारे ॥ जीव० ॥५॥
विषय विकार महा दुःख दाता, जानत विष के क्यारे रे।
दुर्गति दातारे ॥ जीव० ॥६॥

औपाधिक वाधामल परबल, उपशम जल से ठारे रे।
राग द्वेष निवारे ॥ जीव० ॥७॥
धर्म शुकल शुद्ध ध्यान ध्यावे जिन वचना अनुसार रे।
निज आतम तारे ॥ जीव० ॥८॥
कहत धर्मसिंह धर्म पसाये कर्म प्रबल रिपु हारे रे।
शिवपुर सुख त्यारे ॥ जीव० ॥९॥

श्री नेमनाथजी का स्तवन।

तुम्हें नमस्ते स्वामी ॥ यह देशी ॥

धन धन दयाल स्वामी नेमी जिनन्दाजी।
तुम नामे परम आनन्दा आदव कुल चन्दा ॥धन धन०॥टेर॥
आदव की जान सजाए ब्याहन कु आयेजी।
बलभद्र कृष्ण संग लाये, सब के मन भाये ॥ धन० ॥१॥
पशित पशु वृन्द निहारी करुणा चित्त धारीजी।
तज दीनी सबल दुखारी पहौंचे गिरनारी ॥ धन० ॥२॥
राजुल सुन के बिलखानी धीरज मन आनीजी।
मैं पालूं प्रीत पुरानी संजम चित्त ठानी ॥ धन० ॥३॥
तुम दीना नाथ दयाला, भविजन के पालाजी।
यो समता रस भर प्याला, मेटो भव जाला ॥ धन० ॥४॥
भव भ्रमण विपत को टारी ये अरज हमारीजी।
कहे धर्मसिंह हितधारी औं शरण तुम्हारी ॥ धन० ॥५॥

श्री दशारण राजा की लावणी।

वर्द्धमान जिनराज जगत गुरु, भवि जीवन कुं हितकारी।
राय दशारण चले वन्दने, चउविध सेना ले लारी ॥ टेर ॥
चउदे सहस मुनिराज दीपता, बड़े बड़े उत्तम ज्ञानी।
महासती है सहस्र छत्तीशे, उत्तम करणी मनमानी ॥
ग्राम नगर पुर विहार करतां, आये दशारण पुर मांई।
इन्द्र इन्द्राणी देवी देवता, सेव करत है उलसाइ ॥
समवसरन को रचा देव ने, पाखण्ड मत जावे हारी ॥ रा०
खबर हुई दशारन भद्र को, महावीर स्वामी आया।
करे सजाइ वन्दन कारन, जिन दर्शन को मन चाया ॥
सहस्र अठारे हस्ति सजाए, एक एक से अधिकाई।
मोतियन की भूल बनी अति सुन्दर, घटा बीज ज्यों चमकाई।
अश्व सहस्र चौवीश जिनों के, रत्न जड़ित पाखर भारी ॥रा०
रथ सहस्र एकवीश पालखी, एक सहस्र शोभे लारे।
लेइ अन्तेउर संग पांच सें, सजिया नव सत शिनगारे ॥
क्रोड़ एकावन यमदल चाले, जय २ शब्द मुख से बोले।
गज होदे आरूढ़ शीश पे, छत्र चमर जिनके ढोले ॥
सोलह सहस्र है संग भूपति, मुकुट बंध आज्ञाकारी ॥रा०
सोलह सहस्र ध्वजा अति सुन्दर, वाजितर बहुविध बाजे।
चले मध्य बाजार बीच में, महावीर वन्दन काजे ॥
देख आडम्बर चहु दिश गहिरा, गरव किया है दिल म्याने।
शक्र इन्द्र जब देखा ज्ञान से, राय चड्यो है अभिमाने ॥
इन्द्र दशारन भद्र राय को, मान उतारन दिल धारी ॥रा०
चौसठ सहस्र जो हस्ती बनाये गगन बीच गरजारव करे।
कहुं विस्तार एक हस्ति का, सुनतां अचरिज मन धरे ॥
एक एक हस्ति के मुख है, पांच सें द्वादश शोभ रहे।
मुख मुख ऊपर अष्ट दन्तुशल, दन्त दन्त अठ वाव्य कहे ॥

एक एक वाव्य के अन्दर आठ कमल कहिए भारी ।रा०
एक एक कमल के पांखड़ि, लाख लाख कहिये भाई ।
पांखड़ी ऊपर इन्द्र भुवन हैं रत्न जड़ित किरना छाई ॥
बत्तीश विध नाटक तीन आगे बाजा के हो रहे घोरे ।
ऐसी सजाई कीनी इन्द्र ने आय प्रभु को कर जोरे ॥
देखे इन्द्र की रिध राय को गरव गल्यो है तिणवारी ।रा०
राय दशारन सोचत मन में, गरव गल्यों सुरपति आगे ।
शक इन्द्र से जीत न सकिये कोय उपाय नहीं लागे ।
यों समझी नृप संयम लीनो राजरिध सम्पत छोड़ी ।
अमर पती शिरनाय मुनि को अरज करत है कर जोड़ी ॥
राखयी मान अखड आपने धन धन हैं तुम अणगारी ।रा०
माफ करो अपराध कृपानिध, तुम करनन की बलिहारी ।
नहीं शक्ति मुझ में संयम की सामर्थ्य और बहुत भारी ॥
अमीरिख गुण गाय मुनि का इन्द्र सिधायो निज ठामे ।
शुद्ध भाय रिख संयम पाले अन्त समय केवल पामे ।
कम पुज गढ़ तोड़ गया शिव मंदिर में आतम तारी ।रा०

उपदेशी पद ।

राग ख्याल की तथा रसिये की ।

जिन धर्म बिना नहीं होवे निस्तरना ॥ जिन धर्म० ॥ टेर ॥
श्री जिन धर्म पदारथ जग में, भारत मिटत जनम मरन ।जि०
पञ्चाश्रव सब दूर निवारी निज आतम पावन करना ।जि०
जीव दया सत्य अदत्त न लीजे शियल सन्तोष हिये धरना ।जि०
रत्नत्रये शुद्ध आराधो, किरिया कर पातिक हरना ॥ जि०
कहत अमीरिख सुण सब प्राणी लीजे सदा सतगुरु शरना ।जि०

तुंगिया नगरी के श्रावकों के गुण।

(भगवती सूत्रानुसार)

धन सो दिन लेखे गिणे ॥ यह देशी ॥

धन श्रावक तुंगिया तणा,
　　　　जांरा जिनवर किया है वखाण हो भवियन ॥ टेर ॥
तुंगिया नगरी शोभती, जन पद देश मझार हो ।भवियन०
इन्द्रपुरी सम ओपता, सुखिया लोक अपार हो ॥भ०।घन०।१
श्रावक लोक वसे घणा, दृढ़ धर्मी गुणवन्त हो । भवियन०
हाड मींजी धरमे रंगी, मुगत जावण की खन्त हो ।।भ०।घ०।२
धन धान घर में घणों, पूरण भर्यां है भंडार हो ॥ भवि० ॥
किराणा चउ भेदना, निरवद्य करत वेपार हो ॥ भ० ॥ घ०॥३
दासी दास परिकर घणा, हुकम करे परमान हो ॥ भवि० ॥
सयण जाण वाहण घणा, अव रही वस्तु वखाण हो ।भ०।घ०४
गाय भैंस चउ पद घणा, पालखी रथ अधिकाय हो ॥भवि०॥
वीछुड़ अन्न वहु निकले, कमियन दीसे काय हो ॥भ०॥घ०॥५
महर्धिक रिद्धि घणी, चतुर महा वुधवान हो ॥ भवि० ॥
अभंग द्वार जेहना कह्या, उलट भाव दिये दान हो ॥भ०॥घ०६
जीवा जीव याणया भला, पुन्य पापादिक सार हो ॥ भवि० ॥
कीधी गुरु मुख धारना, साह्यन वंछे लगार हो ॥भ०॥घ०७
देव दानव व्यंतर मिली, देत परिषह आप हो ॥ भवि० ॥
धर्म थकी सो नहीं डिगे, निश्चल मन वच काय ॥भ०॥घ०॥८
द्वादश व्रत धारी गुणी, फासुक चौदे प्रकार हो ॥ भवि० ॥
दान दिये मुनिराज ने, सफल करे अवतार हो ॥भ०॥घ०॥९

पद पोषध एक मास में ध्यावे धर्म सुध्याम हो ॥ भवि ॥
पोषे आतम आपणी, निर्मल गुण मणी खाण हो ॥म०।५०।।१०
तपी अठामें गही अठा, पूछी अठा तिणवार हो ॥ भवि० ॥
निश्चय कर धार्या हिये सूत्र अर्थ सुविचार हो ॥म०।।५०।।११
तिण काले तिण अवसरे पूरव पुन्य प्रमाण हो ॥ भवि० ॥
पार्श्व प्रभु सन्तानिया आया तिहां गुणखाण हो ॥म ॥म १२
आई सम्प मैं आदि दे कुंतियापण सम तेह हो ॥ भवि० ॥
सकल गुणे करी शोभता सजम धर गुण गेह हो ॥म०।५०।।१३
पांच से मुनि परिवार सु आया बाग मझार हो ॥ भवि० ॥
खबर हुई श्रावक प्रते वन्दन हुवा छे तैयार हो ॥म०।।५०।।१४
चला गुपचे सब थई, मिलिया आय बजार हो ॥ भवि० ॥
अन्योअन्य सब जन कहे अवसर मिलियो सारहो॥म।५०।।१५
मुनि वन्दन महा फल कह्यो पूछिये प्रश्न विचार हो ॥भवि०॥
मन संशय मेटण भणी आप्या होय तैयार हो ॥म०।।५०।।१६
बाग परीसर आयने पंच अभिगमन साच हो ॥ भवि० ॥
जन्म कृतारथ जाणता वन्दे तजि परमाद हो ॥म०।।५०।।१७
सेव करे शुद्ध भाव स बैठा मुनिवर पास हो ॥ भवि० ॥
तप संजम फल पूछियो आणी चित्त उल्लास हो ॥म०।।५०।।१८
मुनिवर संशय मेटियो भगवती सूत्र मझार हो ॥ भवि० ॥
कहत अमीरिख मासमु सांभलजो नरनार हो ॥म०।५० ॥१९

शिवरमणी का बनड़ा ।

गौतम गुण धारी ॥ यह देशी ॥

समकित पीठी ज्ञान नीर से, स्नान करे मुनिराज ।
शिवरमणी ने परणवा सरे, इण विध सजियो साज हो ।
धन २ उपकारी ऐसे गुणधारी शिवरमणी वरे ॥ टेक ॥१॥
संवर को सिर पाव बनायो, धीरज धोती सार ।
जयणा जामो शोभनो सरे, पहिरे हरख अपार हो ॥ ध० ॥२
परमारथ की पाग है सरे, बाधी अधिक उमंग ।
शियल तणो शिरपंच विराजे, क्षम्या छोगो सुरग हो ॥ध०॥३
तप को तुररो जलहले सकाई, करणा कुंडल कान ।
चौकड़ा है उपयोग का सरे, भक्ति भमर कड़ी जाण हो ॥ध०४
तत्व कचोरी तिलक विराजे, दश विध धर्म को हार ।
दान कड़ा वैयावच की चिंटी किरिया कन्दोरो सार हो ॥ध०५
श्रद्धा को शिर सेहरो सरे, विनय दुपट्टो होय ।
तीन तत्व को रुमाल हाथे, दया तणी खुसबोय हो ॥ध०॥६
शुकल ध्यान घोड़े चढ्या सरे, संजम बाजा साज ।
सुमत सुहागण जिण गुण मंगल, गावे मधुर आवाज हो ।ध०७
चारुं तीरथ जानिया सरे, चाल्या हरख धरत ।।
शिव बनड़ी ने परणिया सरे, पाम्या सुख अनन्त हो ॥ध०॥८
केवल ज्ञान दर्श थिर पाया, हुवा सिध महाराज ।
तीन लोक के नाथ कहाया, पाम्या अविचल राज हो ॥ध०॥९
अखय अनन्त सदा सुख विलसे, मुक्ति प्रिया के संग ।
कहत अमीरिख सदा त्रिकाले, वन्दुं आण उमंग हो ॥ध०॥१०

उपदेशी।

राग पूर्वीय्

सुणज्यो भव प्राणी प्यारो जिन वाणी पूरण मीठयु ॥ टेर ॥
चेत चेत भवि प्राणिया सरे, ये जग जाण असार।
धार धर्म शुद्ध भावसुं सरे, जिम उतरो भव पार हो ॥सु०॥१
स्वपन धर्म जगत के सरे थिर मति मान सुजाण।
विनसत वार लगे नहीं सरे संध्या रंग समान हो ॥सु०॥२
काल व्याल विकराल है सरे, छिन में करे विहाल।
क्यों बेटो निर्भय हुई सरे, कर निज गुण संभाल हो ॥सु०॥३
श्री जिन धर्म आराधियां सरे सब संकट मिट जाय।
जग जलधि में डूबतां सरे, होसी धर्म सहाय हो ॥ सु० ॥४
रे प्राणी इस जगत में सरे तेरा कौन ही मित।
मोह ममत की नींद में सरे सोया केम अचित हो ॥ सु० ॥५
तू पंथी इस जग विषे सरे काम चोर तुम्ह लाय।
निज गुण सम्पत लूटके सरे दुर्गत दे पहोंचाय हो ॥सु०॥६
जिन आज्ञा सम्मुख रहे सरे, दे आश्रव कू पूठ।
कहत अमीरिख जनम मरण के जावे सब दुख छूट हो ॥सु०७

चौवीशी।

म्हारे बारया मुनिजी दिल में बसोजी ॥ यह देशी ॥

म्हारे चौवीश जिनेश्वर दिल में बसोजी।
जिनवर तारन भव जल पार, मुझने नाम तणो आधार ॥टेर
जिनवर रिषभ अजीत जिन ध्याइये हो ये तो संभव सुख दातार।
अभिनन्दन भव ताप मिवाए ॥ मा० ॥ १ ॥ जि० ॥

सुमति पदम सुपासजी हो साहिब, चन्द प्रभु गुणवन्त ।
कीधा सकन कर्म का अन्त ॥ मा० ॥ २ ॥ जि० ॥
सुविध शीतल शिवपुर पती हो, श्री श्रेयांश अनन्त गुणधार ।
वन्दू वासपूज्ञ अविकार ॥ मा० ॥ ३ ॥ जि० ॥
विमल अनन्त धर्मनाथजी हो, शाता कारक शांति जिनन्द ।
केवल दर्शन ज्ञान दिनन्द ॥ मा० ॥ ४ ॥ जि० ॥
कुंथु अरह जिन साहिवा हो, प्रभुजी मल्लीनाथ जग भाण ।
मुनि सुव्रत आत्म गुण खान ॥ मा० ॥ ५ ॥ जि० ॥
नमिजिन नेम पार्श्व प्रभु हो, श्री वर्धमान नाथ जगदीश ।
चरने नित्य नमावुं शीश ॥ मा० ॥ ६ ॥ जि० ॥
वहिरमान गणधर गुणी हो, सिध अनंत गया निरवान ।
ध्यावुं भाव सहित धर ध्यान ॥ मा० ॥ ७ ॥ जि० ॥
अधम उधारन जगपती हो, वन्दे अमीरिख त्रिकाल ।
शिवसुख दीजे दीन दयाल ॥ मा० ॥ ८ ॥ जिन० ॥

—— x ——

कपट छत्तीशी ।

बन्धव बोल मानो हो ॥ यह देशी ॥

प्रणमूं श्री जिनराय ने, गणधर शिर नांउ हो ।
सतगुरु सरस्वती मांय के चरना चित्त लाउं होके ॥
सुगुणा कपट निवारो हो ॥१॥
कपटी मानुष्य नो कदा विश्वास न कीजे हो ।
मन को भेद न दीजिये, दूरा टल रीजे होके ॥ सुगुणा० ॥२॥
प्रीत किया कपटी थकी, पीछें पछतावे हो ।
काम विगाड़े आपणो, जग कुजस पावे होके ॥ सुगुणा० ॥३॥

मुख मीठो धीठो हिये मन में अति घाठो हो।
वचन कहे अमृत जिसा तनु अमने सुहावो होके ॥ सु० ॥४॥
कपटी जग संसार ज्यूं बुल ताकतो ओले हो।
दाव हिये मारन तणा, अति मीठो बोले होके ॥ सुगुणा०॥५॥
आंवा आंबु आमली, पकी बोर विचारो हो।
मांहि कठिन ऊपर मृदु तिम कपटी धारो ॥ सुगुणा० ॥६॥
मीठा बोर कवाब ज्यू अति ही मन भावे हो।
कपटी पुर विश्वास दे फिर मान गमावे होके ॥ सुगुणा०॥७॥
स्नेह वचन बोले घणा, अति मीत चढावे हो।
काम पड्यां सहायक नहीं छिन में छिटकावे होके ॥ सु० ॥८॥
कपटी मीति कारमी जिम बादल छायां हो।
डूंगर केरा मेहला, तिम स्नेह बतावा होके ॥ सुगुणा० ॥९॥
कपटी मे सोक सदा रहे मद्दे घाट अपारो हो।
मित्रा नहीं आवे सुखे रहे चित्त विचारो होके ॥ सु० ॥१०॥
सूत्र ठाणांयंग में कहा घट चार प्रकारे हो।
जहिर कुंभ मधु ढांकणो तिम वचन उचारे होके ॥सु०॥११॥
कमल प्रभा सूरि कपट से बांध्या भव अनन्ता हो।
अपवाद पंथ पडपियो महा मलीन विरतंता होके ॥ सु०॥१२॥
कपट प्रदेशीराय भी सुरिकन्ता कीयो हो।
विष खारच निज कन्त ने छिन में विष दीयो होके ॥सु०॥१३॥
चूलणी दुमति चुलणी छोड़े पंथ चाली हो।
सुबपी दीर्घ राजा सकी कुलरीती टाली होके ॥ सु० ॥१४॥
ब्रह्मदत्त सुत ने मारवा लाखी महल बनायो हो।
आगन लगाई पापणी चित्त साहस आयो होके ॥ सु० ॥१५॥

मणिरथ विषयनो लंपटी, मार्यो निज भाई हो।
कपट प्रतापे अही डस्यो, गयो दुर्गन मांई होके ॥ सु० । १६॥
रेवति नारी कपट सुं, वारे शोक ने मारी हो।
मरन वह नरके गई, पांमी दुःख भारी होके ॥ सु० ॥१७॥
रयणा देवी निरदही, महा कपटनी कुंडी हो।
जिन रखनो मन मोहियो, अति क्रोधन भुंडी होके ॥सु०१८
हाव भाव वचने करी, जिन रख मन मोयो हो।
प्रेमवशे फिर देखियो, त्रिशूल में पोयो होके ॥ सु० ॥१९॥
कपट कियो नल भूपति, दमयन्ती नारी हो।
निद्रावश रानी तजी वन में, निराधारी होके ॥ सु० ॥२०॥
कोणिक कुमर पिता प्रतें, नाख्यो पिंजरा माही हो।
जगमांहि अपयश हुवो, देखो कपट कमाई होके ॥ सु०॥२१॥
कपिला नामे ब्राह्मणी, अभया नृप राणी हो।
कपट सुदर्शन थी कियो, भई कुजस कहानी होके ॥सु०॥२२॥
बारे वर्ष मुनी सङ्ग रह्यो, अति वीरज रायो हो।
राय उदाइने मारने, लेइ रात सिधायो होके ॥ सु० ॥२३॥
महाबल रिख मोटा मुनि, कपटे तप कीनो हो।
मल्लि जिन उगनीशमां, वेद पहिलो लीनो होके ॥ सु० ॥२४॥
ज्ञान गिरी भजन भणी, कह्यो वज्र समानो हो।
काम अगन प्रदिप्तवा, घृत रूप वखानो होके ॥ सु० ॥२५॥
कपट कुव्यसन को मित्र है, व्रत लक्ष्मी चोर हो।
कपट प्रभावे जीव के, बंधे कर्म कठोर होके ॥ सु० ॥२६॥
कारन ये दुर भाग्य को, जग कपट प्रकाश्यो हो।
सूत्र ठाणायङ्ग में प्रभु, तिर्यंच गति भाखे होके ॥ सु० ॥२७॥
मुक्त लताने वालवा, अग्नि सम भाख्यो हो।
मोक्ष इच्छा कपटी करें, तप निष्फल दाख्या होके ॥ सु०॥२८

दशवैकालिक आठमे जिनराज बतावे हो।
माया हुवे मिथ्यात्मे अपयश जग पावे होके ॥ सु० ॥२७॥
ध्यान धरे बुगला जिसो मीठो नीर ज्युं बोले हो।
भीतर अगनी दाझहे ऊपर जल होले होके ॥ सु० ॥१०॥
कैंची राखे कांख में हाथे जप माला हो।
ऊपर से जल सींचनो मांहे अगनी झाला होके ॥ सु० ॥११॥
आप थापी पर निंदकी केरे दोष बतावे हा।
दूजे संवर वेस लो नहीं मोक्ष सिधावे होके ॥ सु० ॥१२॥
कपटी मरी नारी हुवे नारी पशंग थावे हो।
पशुग कपट प्रभाव से भव भव दुःख पावे होके ॥ सु० ॥१३॥
तिण कारण मवि माखिया तुमे कपट निवार वो।
दूजे अङ्ग इग्यार में शिव मारग धारो होके ॥ सु० ॥१४॥
सरल मारग वीतराग को भव भव दुःख टाले हो।
वज्र जिम धर्ममें सिसरो रिव सुख मन पाले होके ॥सु० ॥१५॥
कपट करी रूखिया घणा भव में कोई प्रानी हो।
सरल मारग गही के भवी वरिया शिव रानी होके ॥सु ॥१६
कपट छत्तीसी चोमसी भव दुःख भी हरसे हो।
श्री जिनभाष भरायमे भव सागर तरसे होके ॥सु०॥१७॥
पूज्य श्री रिख सोमजी हरखारिखजी स्वामी हो।
तसु शिष्य श्री गुरु माहरा जासु समकित पामी होके ॥सु १८
श्री सुखारिखजी गुणी चरमासु वसाये हो।
कहत धर्मारिष इण विध भावे अविजन हाय होके ॥सु०१०
उगनीसे एकावने ससामा मांही हो।
पोष सुदी पाग्स दिने पद जोड़ बनाई होके ॥ सु० ॥४०॥

चतुर्दश नियम की स्वाध्याय ।

जीवन के परिणामन की ॥ यह देशी ॥

चउदा नियम करो भव प्रानी, श्रावक को आचार सुहानी ।टेर
जीव सहित होवे जेह वस्तु, जानि सचेत करो परमानी ।
होई स्वाद सो धारो द्रव्य नाम पहिचानी ॥ चउदा० ॥१॥
दुग्ध दधि घृत मिष्ट आदि दे, विगय गिनत करिये रुचि ठानि ।
पन्नी पग त्राणी मौजादिक राखी, शेष करो पचखानी ॥च०
लौंग सुपारी इलायची आदि वस्तु तम्बोल से प्रीत घटानी ।
वस्त्र नियम परिमान करो नित, पुष्प सुगंध त्यजो अपजानी ।च०
चौकि पाट पल्यंक बिछोना, शयन गिनत धारो अनुमानी ।
गाड़ी रथ घोड़ादिक वाहन, ता परिमान करो हित आनी ॥च०
केशर चन्दन आदि विलेपन, करिये त्याग राखि मन मानी ।
अब्रम्भ नियम परिमान करीने, धारो शीयल सदा सुखदानी ।च०
दिश मर्याद स्नान-की गिनती, भात नियम कहिये अन पानी ।
या विध त्याग करो नित भावे, आश्रव द्वार रोक अभिमानी ।च०
पर पुद्गल से प्रीत अनादि, करत भई आतमरिद्ध हानी ।
निज गुन तत्त्व पिछान मान अब कहत अमीरिख शीख समानी च

उपदेशी हित शिक्षा लावणी ।

रगत लंगडी ।

शिव सुखदायक परम एक जिनधर्म हिये धरना चाहिये ।
तज कर्म भर्म को दया का नित उद्यम करना चाहिये ॥ टेर ॥
आर्य क्षेत्र उत्तम कुल पाके वृथा गमाना ना चैये ।
शिव मारग विन पाप में, चित्त लगाना ना चैये ॥
वार वार अवसर नहीं मिलता, शीख भूलाना ना चैये ॥

पर गुण देखी कभी चित्त में हरखाना ना चैये ।
क्रोध कपट अभिमान लोभ पद धारूं परहरना चैये ॥त०॥१
तप जप संयम नित्य नियम विन पवन गुमाना ना चैये ।
धम काम में कभी कायर हो जाना नां चैये ॥
जैन तत्व का विचार पाया उसें छिपाना नां चैये ।
शुभ कारज में, कभी मनसें सरमाना नां चैये ॥
समकित रत्न जतन सें राखो पातिक सें डरनां चैये ॥त०॥२
सद्गुरु जैसा मित्र न जग में, यह दिल में लाना चैये ।
मिथ्यात्वी सम रिपु नहीं, मन निश्चय ठाना चैये ॥
पाखण्डी के देख आडम्बर मन ललचाना नां चैये ।
अमृत भोजन छोड़ कड़वे फल खाना नां चैये ॥
मिथ्यामत की झूंठी बातें चित्त में नहीं धरनां चैये ॥त०॥३
गुणी जन का नित्य विनय करो यह शुभ शिक्षा मानी चैये ।
धर्मीजन को देख के चित्तसें हरखानां चैये ॥
धन्य धन्य श्री जैन धर्म जो गुण हमेश गाना चैये ।
परगुण पद को छोड़ निज आतम गुण ध्याना चये ॥
कहत अमीरिख शीख हिये धर भवसागर तिरना चैये ॥त० ४

श्री गुरु गुण स्तवन ।

रंगरेज रंगीला कांसु रंग दो म्हारे केसरीयां । यह देशी ॥

सत गुरुजी म्हारा मारग बताया मुगती महेल का ॥ टेक ॥
लख चौरासी मांहि भटकतो चेतन अंध अजान ।
ज्ञान शलाई आंज केसरे दीधी तत्व पिछानजी ॥ सत ॥१॥
भर्म मिथ्यात्व अनादि काल का घट में घोर अन्धार ।
ज्ञान भानसें तिमिर हटायो कियो परम उपकारजी ॥स ॥२

हिये ज्योति प्रगटी सुमता की, दीधी कुमत भगाय।
जिन गुण सपद ज्ञान बतायो, कुमी न राखी कांयजी ॥स०॥३

विषय कषाय प्रबल दावानल, व्यापी घटके मांय।
छांटी समता नीरने सरे, शीतलता उपजायजी ॥ सत० ॥४॥

चिन्ता वेल चिंतामणी प रस, कल्पतरु सुर गाय।
ये तो इण भवमें सुखदाई, गुरु भव २ सुखदायजी ॥स०॥५॥

ये संसार समुद्र मांहि चेतन गोता खाय।
धर्म जहाज के माय बिठाई, देवे पार लगायजी ॥ स० ॥६॥

परदेशी महा पापियो सरे, जीव हणे दिन रात।
केसी गुरु समझावियो सरे, छोड़ दियो मिथ्यातजी ॥स०॥७

मृग आखेट सजेती राजा पहोंच्यो वन के माय।
मुनिवर भेटी संजम लीधो, दियो राज छिटकायजी ॥स०॥८

सात जीव नित मारतो सरे, अरजुन माली नाम।
शासन नायक भेटिया सरे, पायो अविचल ठामजी ॥स०॥९

पापी चोर चिलायती सरे, दृढ़ प्रहारी जाण।
सतगुरु के उपकार से सरे, पहोतो अमर विमानजी ॥स०॥१०

इत्यादिक तिरिया घणा सरे, ज्ञानी गुरु उपकार।
इम जाणी भवि प्रानिया सरे, भेटो श्री अणगारजी ॥स०॥११

सुखारिखजी गुरु हमारे तारन तिरन जहाज।
अमीरिख सेवा किया सरे, सारे वंछित काजजी । सत०॥१२

विषय त्यजनोपदेशी पद।

हमको छोड चले वेमी माधव ॥ यह देशी ॥

अरे विवेकी समझ किव कोई, क्यों विषयन से हुमामाहेरे ।टेर
अल्प विषय सुख लाग सयाना ज्यों खस खस के दाना हेरे।
सेवत ही अघ पुंज चढ़ शिर सो दुःख मेरु समाना हेरे ।अरे
सूखा हाड चाम मूख चाखत जानत मधुर अयानाहेरे।
निज मुख कढ़ चाटि सुख मानत मूरख मन हरखानाहेरे ।अ
जो विषयन में मगन भया है निज सुधि सब विसरानाहेरे।
छोड़ सुधि विष खाय रुधिर घर कहो किस विध सुख पानाहेरे ।अ०
काम भोग सुख है दुःख दाता फल किंपाक समानाहेरे।
चाखत मधुर मान फिर हारे भव वन में भटकानाहेरे ।अ०
निज गुण रतन यतन बिन खोंधी भोला होय ठगानाहेरे।
कन्दर्प वश हुई मोह पास में अपने आप बंधानाहेरे ।अ०
विषय लीन मर जाय अधोगति तिहाँ परवश विललानाहेरे।
तब कछु भी हित बन नहीं आवे, रोय रोय पछितानाहेरे ।अ०
तज अघ चाल धार जिनवाणी वक्षत कठिन फिर आनाहेरे।
कहत अमीरिख शीयल अराध्या पावे पद निरवानाहेरे ।अ०

धर्मोपदेशी पद ।

राग पूर्ववत् ।

चेतन चेत करो सुखियारी तिरन जोग सही हारे प्यारे ।टेर
श्री जिन धर्म सहाई जीव के, तिन को मूढ़ विसारे प्यारे।
तन धन कुटुम्ब सभी स्वारथ के चलते संग तुम्हारे प्यारे ।चे०
धर्म जहाज सुगुरु बिन जग में भव जल पार उतारे प्यारे।
तज प्रमाद चाल शिव मंदिर इत उत चित विचारे प्यारे ।चे०

लहि शुभ पंथ धरम जिन भाषित, विषय व्यथा चित्त धारे क्यारे।
अवसर कठिन लही नर भव का रत्न चिंतामनी डारे क्यारे। चे०
हो हुशियार धार शिव मारग, उत्तम जनम विगारे क्यारे।
कहत अमीरिख, अतुल बलीतु, पड्या कर्म के सारे क्यारे। चे०

अथोपदेशी पद।

जाड का माला सरथानो दिवस किती आलो ॥ यह देशी ॥

क्यों भूला थारा सयाने, झूठा जग सारा ॥ टेर ॥
मात पिता वनिता सुत न्याती, बहु विध परिवारा ॥सयाने०१
सब स्वारथ के सगे, बखत पर कोय नहीं थारा ॥क्यों०॥१॥
तन धन जोवन सर्व अथिर है, क्यों मानत म्हारा ॥स०॥२॥
कर्म रिपु जग में भटकावे, भव २ दुःख कारा ॥ क्यों० ॥२॥
फल किंपाक विषय रस जाणों, ज्यों विष का क्यारा ॥स०॥२
मोह ममत में लीन भयो होय के, आतम गुन हारा ॥क्यों०॥३
दुर्गुण त्याग लाग शिव मारग, रहे जग सें न्यारा ॥ स०॥२॥
कहत अमीरिख धर्म किये सें होवे भव पारा ॥ क्यों० ॥४॥

उपदेशी गजल।

पहलू में यार है उसकी मुझे खबर नहीं ॥ यह देशी ॥

पाया अमोल्य देह, नेह पाप से करता, ।
गफलत फिरे हैं मोह के नशे में अन्धता ॥ पा० ॥१॥
विषयन के संग लाग यों ही उम्र दी विता।
करमों की पोट बाध, मरी नरक में गता ॥ पा० ॥२॥
चक्री हरी बल इन्द्र गये, जिसका नहीं पता।
इस मौत से बचा है, कौन सो सूझवता ॥ पा० ॥३॥

पाया है जैन धर्म, तो ही कर्ममें रता।
सुकृत नहीं कमाएगा तो आएगा वता ॥ पा० ॥
बैठा है क्यों नचिंत रही उम्र घटपता।
अपने समान जीव जान मत किसे सता ॥ पा० ॥३॥
कहता अमीरिख मान जरा ज्ञान की कथा।
जिन धर्म एक सार और सर्व है वृथा ॥ पा० ॥४॥

—×—

उपदेशी।

राग पूर्ववत्।

दुनिया के बीच आय, जैन धर्म ना किया।
नर जन्म रत्न पाय के वृथा गुमादिया ॥ दुनिया० ॥१॥
मद मोह क्रोध लोभ के नशे में छुक रया।
कर कुड कपट पाप बोझ शिर पे धर लिया ॥ दुनिया० ॥२॥
सुत नार और परिवार कुटुंब वाहि पच मुवा।
लिछने का दाव आय तेरे हाथ से गया ॥ दुनिया० ॥३॥
जिन बेन सुधा स्वाद पे, कभी न चित्त दिया।
इन्द्रियाँ विषय विष तुल्य है सो हर्ष से पिया ॥ दु० ॥४॥
ज्ञानी गुरु का चरण कभी मूल न लिया।
जिन नाम सुमरने का तेरा चित्त ना भया ॥ दु० ॥५॥
तज के सभी परमाद धार मोक्ष की क्रिया।
कहता अमीरिख होय तेरा सफल यों जिया ॥ दु० ॥६॥

कर्मों का जुल्म निवेदन रूप विज्ञप्ति ।

सखी पनिया भरन कैसे जाना, पनघट पै खडा है काना । यह देशी ।

प्रभु मोक्ष नगर कैसे जाना, करमों से पड़ा है पाना ॥ टेर ॥
नाना स्वरूप बनवाता, भव मंडप में नचवाताजी ।
यह ऐसे दुष्ट वेईमाना ॥ करमों० ॥१॥
मुझे पुद्गल से ललचाया, अपना स्वरूप विसरायाजी ।
अब बहुत पछताना ॥ क० ॥ २ ॥
मेरा आतम धन सब लूटा, जब से शिव मारग छूटाजी ।
मैं ऐसा जुलम नहीं जाना ॥क०॥३
अमृत कही जहिर पिलाया, हिंसा में धर्म बतायाजी ।
फिर किया बहुत हेराना ॥ क० ॥४
मेरा अनंत ज्ञान ढक लीना, मुझे पुद्गल के वश कीनाजी ।
कछु नहीं आर से छाना ॥ क० ॥५
जिया धर्म सुभट का शरना, मिट जाय मेरा डरनाजी ।
मुझे ऐसी राह बताना ॥ क० ॥६
पहुंचा दे मोक्ष ठिकाना, नहीं होय फेर यहा आनाजी ।
इतना सा हुकुम फरमाना ॥क०॥७
सब माल मेरा मिल जावे, प्रभु यही अमीरिख चावेजी ।
तब होय काज मन माना ॥करमों से पड़ा है पाना ॥८॥

उपदेशी लावणी ।

रगत छोटी दोहा सहित ।

करे जिन धर्म सोहि जीता, और जग जाय हाथ रीता ॥टेर॥
उमर छिन छिन होवे हानी, जाण जिम अञ्जली को पानी ।
मोह में राच रह्यो प्रानी, करे नहीं सुकृत अभिमानी ॥

दोहरा —

काल अनन्त यह जगत में, भम्यो उदय वश कर्म।
भ्रम मांहि उलझी रह्यो किये नहीं जिन धर्म॥
धर्म बिन भव यों ही बीता २ ॥ करे० ॥१॥

पाय नर भव का अवसर जीना धार गुरु जिन मारग जीना
रहो संयम धाम मीना धरम धर करो करम छीना॥

दोहरा—

राचो मति पर द्रव्य में काचो रंग पतंग।
साचो शिव सुख जान के कर आतम गुण संग॥
गाय जिनराज ज्ञान गीता २ ॥ करे० ॥२॥

एक दिन सबही को मरना नहीं जिन धर्म बिना शरना।
सदा निज आतम हित करना, शील यह उत्तम चित्त धरना॥

दोहरा—

तन धन सर्व असार है विनश जाय छिन मांय।
काल बली कब आयगो खबर पड़े कछु नांय॥
आय गहे ज्यों मृग पर चिता २ ॥ करे ॥३॥

काल की धाक जगत सारे, इसीसे सूरवीर हारे फिरे।
तन छाया ज्यों लारे, रहो होंशियार सदा प्यारे॥

दोहरा—

इन्द्र देव चक्री हरि पड़े बड़े तिति पाल।
करत ग्रस्त या सबन को ऐसो जुलमी काल॥
काल से सब ही जन भीता २ ॥ करे० ॥४॥

देव गुरु धर्म परख कीजे रत्न त्रय हिरदे धर लीजे।
भ्रम मिथ्यात्व छोड़ दीजे, जैन आगम अमृत पीजे॥

दोहा—

कीजे निर्मल आतमा, सीजे वंचित काज।
दीजे सुख सब जीव को, लीजे शिवपुर राज॥
अमीरिख कहे समझ मीता २ ॥करे०॥१॥

संसार समुद्र वर्णन।

खबर नहीं जग में पल की ॥ यह देशी ॥

चतुर नर सुनिये जिनवानी,
यो संसार समुद्र अनादि डूब रह्यो प्रानी ॥ टेक ॥
जनम जरा अरु मरण इसीमें, भर्यो अथाग पानी।
खुंच्यो काम भोग कर्दममें, फेन ज्यों अभिमानी ॥चतुर०॥१॥
कलसा चार गति के चारूं, तृष्णा वेल जानी।
कच्छप मच्छ कुटुम्ब है सब ही कर रहे हैरानी ॥ च० ॥२॥
मगर अन्याइ हिंसक कहिये, करम डूंगर ठानी।
मिथ्या मति कुगुरु शंखोल्या संघ रत्न खानी ॥ च० ॥३॥
क्रोध रूप वडवानल मांहि, तप रहे अज्ञानी।
पड़त कपट के भ्रमर उसीमें, डूब जात प्रानी ॥ च० ॥४॥
धर्म द्वीप शिवपुरका रे कांठो, जानो सुखदानी।
काल अनन्त बहुत दुःख देखत, मिलि तिरन ठानी ॥च०॥५
कहत अमीरिख तप संयम की जहाज उत्तम ठानी।
यह संसार उदधि तिरने को कर उद्यम ज्ञानी ॥ चतुर० ॥६॥

कुमति जनको हित शिक्षा पद।

राग काफी।

जिन मत ऐसे भजहुं न पायो
तुझे कुमति भरमायो तुझे कुगुरु बहकायो ॥ जिन० ॥टेर॥
मनुष्य जन्म शुभ क्षेत्र जन कुल पुण्य योग से पायो।
श्री जिन आगम सुनत सयाने तोहि विवेक न आयो ॥
हिता हित ज्ञान नशायो ॥ जिन० ॥१॥
निराकार निष्कलङ्क जिनेश्वर, तिन को भेष रचायो।
स्थापना करके मन में बहुत हरखायो ॥
करत अपनो मन चायो ॥ जिन० ॥२॥
षट् काया को मथन करीने श्री जिन भवन बनायो।
पूजन स्नान पुष्प धोवन में शिव पुर लाभ बतायो ॥
पथ पाखंड चलायो ॥ जिन० ॥३॥
शिवपुर मुगट काम में कुंडल केशर से लिपटायो।
अंगि रचाय ध्यान मुद्रा में तिलकादिक भेष बनायो ॥
गुंथ सिर पुष्प चढ़ायो ॥ जिन० ॥४॥
ताल मृदंग नगारा झालर गहिरे नाद बजायो।
नाचत गावत ताल बजावत, नेक न चित्त सरमायो ॥
दया को नाम उठायो ॥ जिन० ॥५॥
संवर नियम सामायक आदि शिव मारग बिसरायो।
कर माल मीलाम बोल घृत, निज रुजगार चलायो ॥
मुग्ध या विध ठग खायो ॥ जि० ॥६॥
देव गुरु अरु धर्म कारने किंचित जीव हणायो ॥
ता फल कडुक दाय गत्यादिक सब आगम में गायो ॥
पाठ कुगुरु ने छिपायो ॥ जिन० ॥७॥

दोष नहीं श्रावक को यामें, गुरुजी पन्थ वतायो ।
श्राप डूबे श्रौरों को डूबोवे, श्रजहु तत्व नहीं पायो ॥
तिमिर मिथ्या दृग छायो ॥ जिन० ॥८॥
दोष कोऽनो मत कहे भाई, मोह राज जग छायो ।
राज्य कुमर वस होय करत है, सवलां पक्ष सवायो ॥
ज्ञानी मन यों समझायो ॥ जिन० ॥६॥
कहत श्रमीरिख क्रोध न करियो, में हित वैन सुनायो ।
राग द्वेष तज न्याय विचारे, ज्यों सुख होय सवायो ॥
रहे नहीं करम को दायो ॥ जिन०॥१०॥

——×——

वीश बोल तीर्थंकर गोत्र बांधनेका ।

नटुवा कर जोगी को भेष श्रागरे चालरे ॥ यह देशी ॥

चैतन कर श्रातम हित काज, मुगत साधरे, हांरे मुगतने साधरे ।
चैतन कहे सतगुरु महाराज त्याग परमादरे ॥ टेर ॥
ज्ञाता धर्म कथाग सूत्र में, श्री जिनराज सुणावे ।
वीश वोल सेवन कर स्वामी, तीर्थंकर पद पावे ॥ चैतन० ॥१
श्री श्ररिहंत सिद्ध महाराजा, प्रवचन ने गुरुराय ।
थिवर सन्त वहु श्रुत धारी, तपसी रिख सुखदाय ॥ चै० ॥२
इण सातो का गुण नित गातां, रसना पावन होत ।
उज्वल भाव होय उत्कृष्टा, वांधे तीर्थंकर गौत्र । चै० ॥३
ज्ञान उपयोग दीपावे समकित, गुणवन्त विनय करत ।
उभय काल आवश्यक ठावे, श्रल्प वचन वोलंत ॥ चै० ॥४
निर्मल शील श्राचार व्रत को, पाले निर श्रतिचार ।
तप कर दान सुपात्रे देता, लहिये लाभ श्रपार ॥ चै० ॥५

गुणवन्तो की करे यथावत, मसे अपूरब ज्ञान।
राखे मत समाधि उज्वल, सुन भक्ति चित ठान॥ च० ॥१
प्रवचन की मित करे प्रभावना भी जिम धर्म दीपावे।
या विध आगम वेद धरावे, भव भ्रमणा मिट जावे॥ चै०॥७
जिम आज्ञा में करिये उद्यम सो सब ही सुख दाता।
कहत अमीरिख कर्म खपायाँ, पामे अविचल साता॥ च०॥८

उपदेशी लावणी।

चली चलन क्यों हाके लख चेतन्य क्रांत दिखलावे। यह देशी।

क्यों होके ममत में लीन पाप करते हो
पाते हो दुःख फलतो भी नहीं डरते हो॥ टेर॥
इस करम वशी मै दुःख सागर में पटका।
चौरासी लख में वार अनन्ती भटका॥
तेने किये बहुत भेष वेश जिम नटका।
जहां गया तहां तुझे काल वशी मै गटका॥
इस तरह अनादि काल भ्रमत फिरते हो॥ पाते०॥१।
गहेरी गफलत में मोह नींद सोता है।
एक एक श्वास अनमोल यों ही खोता है॥
नर भव भूमी में पाप बीज बोता है।
तू समझ बूझ के अजान क्यों होता है॥
इस झूठे जग में क्यों पच पच मरते हो॥ पाते०॥२॥
माया के मद में छका फिरत क्यों झूला।
स्वारथी सकल परिवार देख कर फूला॥
जोबन के जोर शिवपुर का मारग भूला।

अमृत भोजन को छोड़ खात क्यों धूला ॥
इस अन्ध कूप में तुम फिर क्यों गिरते हो ॥ पाते० ॥३॥
तुझे दुर्लभ अवसर मिला समझ दिल प्यारे ।
जिन धर्म चिन्तामणी पाय व्यर्थ क्यों हारे ॥
लख अनुभव तत्व विचार जीव जड़ न्यारे ।
यों कहत अमीरिख आतम को समझारे ॥
यह जोग पाय सुकृत क्यों नहीं भरते हो ॥ पाते० ॥४॥

उपदेशी पद ।

किण भुरमायेरे पापीडा म्हारा पीवने ॥ यह देशी ॥

निज गुण भूलोरे, चेतनजी माया जाल में ॥ टेक ॥
सयण सभी मतलब के गरजी, निज स्वारथ को रोवे ।
करम उदय जब होय जीव के, रक्षक कोय न होवे ॥निज०॥१
ममत मोह से लीन होय के, क्यों आतम रिध हारे ।
सब ही धन सम्पद् के भागी, पाप चढ़े शिर थारे ॥निज०॥२
रात समय पंखी होय भेला, तरु पर वासो वसता ।
रजनी वीत हुवा उजियाला, लिया सभी ने रस्ता ॥निज०॥३
बादीगर जब बाद पसारा, हुवा लोक बहु मेला ।
बाजी भयी सभी उठ चाल्या, रह गया आप अकेला ॥नि०॥४
इण विध सब परिवार मिल्यो है, पुन्य उदय से भाई ।
परभव जातां इस चैतन के, कोई न होय सहाई ॥निज०॥५
जैन धर्म शुद्ध भाव अराध्यां, सर्व संकट मिट जावे ।
कहत अमीरिख करम दूर कर, अविचल सम्पद पावे ॥नि०६

उपदेशी ।

राग पूर्ववत् ।

किम सुख मिलसी रे चेतनियां थारा जीव मे ॥ टेर ॥

सतगुरु शीख हिये नहीं धारी जिनवर गुण नहीं गाया ।
श्री जिन आगम धर्म पदारथ मूरख होय गमाया ॥किम०॥१
षटकाया के जीव विनाशे आरंभ कर हरखावे ।
धर्म विमुख पातिक में राची भेक सरम नहीं आवे ॥कि०।२
क्रोध कपट मद लोभ विषय में लीन रहे दिन रात ।
कूड कपट कर परधन ठगतो डरे नहीं तिलमात । कि०॥३
अथिर देह परिवार कारणै बहुविध पाप कमावे ।
पाप उदय दुर्गति दुख देखे कोई नहीं आन छुडावे॥कि०॥४
असना साच सबाय हिये में मम समता नहीं आवी ।
अनाचार में राच के सरे करी धर्म की हाणी ॥कि०॥५
धर्म काम में आलसी आवे, पाप काम अगधामी ।
मिथ्या शास्त्र कथा को रसियो रूचि नहीं जिनवाणी ॥कि०॥६
धर्म शिक्षावच सुण के पापी अधिको रोस मगावे ।
कर्म बंध की शीख सुणी मे कम कम हरखावे ॥ कि ॥७
ज्ञानादिक शिव मारग छोड़ी, कुमति पन्थ पधारे ।
अपना गुन पर औगुण दाखी नर भव निरफल हारे ॥कि०॥८
देहादिक पर वस्तु सब ही तिन सें ममता बांधे ।
आतम तत्व लखे नहीं मानी व्रत नियम नहीं साधे ॥कि ॥९
इस भव भव हटवाड़ा मांही धर्म बिणज को आया ।
कोई मै माल कमाया औगुण पिण मैं मूल गमाया ॥कि०॥१०
श्री गुरु आगम भेद बतावे तोहि विवेक न धारे ।
कहत अमीरिख धन जिन मारग भव जल पार उतारे॥कि०११

उपदेशी ।

राग पूर्ववत् ।

इम सुख मिलसी रे, चेतनिया थारा जीव ने ॥ टेर ॥
भाव नयन मुद्रित अनादि से, ज्ञान नीर से धोय ।
हो हुशियार प्रमाद छोड़ के, शिव मारग को जोय ॥इम०॥१
सतगुरु सेव सूत्र की श्रद्धा, आगम शीख आराधे ।
श्री जिन धर्म धारी हिरदे में, समकित निर्मल साधे ॥इम०॥२
जीव दया सदन प्रकाशे, अदत्त वस्तु सब त्यागे ।
शियल अराध ममत सब छोड़ी, शिव पदसें अनुरागे ॥इ०॥३
विषय कषाय डरे आरंभ सें, करे पाप से टारा ।
लूखा भाव उदास जगत सें रहे, कमल ज्युं न्यारा ॥इम०॥४
दर्शन ज्ञान चारित्र तप धारे, मोक्ष पंथ अविरुद्ध ।
पुद्गल द्रव्य विनाशक माती लखे निजातम शुद्ध ॥इम०॥५
धर्म कमाई कर सुखदाई, कर्म बंध से डरिये ।
नित्य नियम संवर व्रतधारी, इम आतम हित करिये ॥इ०॥६
भव समुद्र तिरने के कारण, धर्म जहाज आदरना ।
सतगुरु खेवटिया संग रेके, इस विध पार उतरना ॥इ०॥७
इत्यादिक सुकृत करनी में, निश दिन उद्यम कीजे ।
कहत अभीरिख शीख हिये धर, तो अविचल सुख लीजे ॥इ०॥८

श्री महावीरजी की गरबी।

मारे साभीरे समुचे वेगा आवजोजी ॥ यह देशी ॥

माने महेर करीने वेगा तारजोजी,
म्हारा जनम मरनरा दुःख टारजोजी ॥ म्हाने० ॥ टेक ॥
प्रभु वीर जिनन्द शासन धणीजी ।
म्हारी विनतड़ी अवधारजोजी ॥ म्हाने० ॥१॥

प्रभु दास भी छे म्हारी आतमाजी ।
म्हारा भवगुण दूर निवारजोजी ॥म्हाने २॥
म्हे तो शरण आयो जी प्रभु आपकीजी ।
भव सागर सूं पार उतारजोजी ॥म्हाने॰३॥
प्रभु अरज अमीरिख इम करजी ।
म्हारा आतम काज सारजोजी ॥ म्हाने॰ ४॥

—x—

उपदेशी पद।

राग महाड ॥ मेवाडो ॥

चेतन संग खरची लीजोजी, जाणो वाट विषम घर दुर।
थाने चलनो पन्थ जरूर ॥ चेतन ॥ टेर ॥
चार कोश गामान्तर जाता, हाथे खरची साथ।
परभव को कछु सोच करे नहीं, जासी रीते हाथ ॥ चे० ॥१॥
नानी को घर छे नही आगे, चाले नहीं संग दाम।
वहा नहीं जाने नाम तिहारो, किस विध होय आराम ॥चे०२
घर धन्धा में दिवस गमायो, रात गमाई सोय।
चिंतामणी सम नरभव पाके, फोगट दीधो खोय ॥ चे० ॥३॥
पाप करी माया रिध जोड़ी पोख्यो सब परिवार।
निज हित साधन ना कियो, अब चाल्यो हाथ पसार ॥चे०॥४
कूच तणा दिन नेड़ा आवे, विषमी दुर्गत वाट।
गफलत त्यागी, धार हुशियारी, जिम लेसी सुख ठाठ ॥चे०॥५
तप जप संवर करनी कीजे, लीजे पूजी रोक।
कहत अमीरिख सुकृत करले, ज्यों सुधरे परलोक ॥ चे० ॥६

उपदेशी।

महाड राग में।

अरिहन नाम पूजी, पल्ले बाधोरे मना ॥ टेक ॥
नरभव पाय विषय में राची कीने वहोत गुना।
धर्मोद्यम सुकृत का सोदा, तो से नाहिं बना ॥ अ० ॥१॥
कूड कपट कर माया जोड़ी, कर कर पाप घणा।
रीते हाथ धर्म विन जासी, भव जल माहि [illegible] ॥ अ० ॥ ॥

समकित नींव काम संजम की नींको महिल चुणा लरची।
रोक भरम की खेले, पासी सुख घणा ॥ झ० ॥३॥
तम मारग पद धारत तोकूं सतगुरु करत मना।
शिवपुर रस्ते चाल सयाना औसर खूब बना ॥ झ० ॥४॥
रक्षक जग में कोय नहीं है एक जिन धर्म बिना।
कहत अमीरिख आतम कारज करलो रात दिना ॥ झ०॥५॥

विषय विटम्बनोपरि ललितांग कुमरकी लावणी।

रंगत लंगड़ी।

विषय भोग अनुराग बुरा है जिसमें मन ललचावेगा।
ललितांग कुँवर ज्यों विषया का संग किया दुःख पावेगा ॥टेर॥
पुर बसन्त एक ग्राम सत्यप्रभ नाम राय तिहां राज करे।
चन्द्रावती रानी रति सम तन स्वरूप नृप चित्त हरे ॥
सेठ सिरीधर नन्द दिप्त द्युति चन्द्र इन्द्र सम रूप धरे।
ललितांग कुँवर है नाम अभिराम काम वश भ्रमत फिरे ॥
शेर-एक दिन शृङ्गार कर गोखे खड़ी है नृप प्रिया।
देखे तमाशा शहर का कामी पुरुष पर चित्त दिया ॥
तिण ही समय वह सेठ सुत तन वस्त्र भूषण सज लिया।
आता था अश्व खिलावता रानी के नजर में आगया ॥
कड़ी-कुँवर को देख रानी का मन ललचाया।
हुई विकल विषय सुख भोगन दिल चाया ॥
अवकाश देखी दासी को भेज बुलाया।
अति उमंग धरी ललितांग महिल में आया ॥
बात-रानी खुशी भई कुँवर को आदर
भला २ भवन के मांहि आप से ग

कहे मान कही देख विषय सुख सही,
भला २ कुँवर से लाज छोड़ यों कहीजी ॥
मिल्लत-पावेगा सुख ऐश कुँवर जो,
मुझ से प्रीत लगावेगा ॥ ललितांग० ॥१॥

हाव भाव दिखलाय नैन सर सांध कुँवर मन वींध लिया ।
कही मधुर वचन को तुरत ही, मोह पाश में जकड़ लिया ॥
होनहार तिन सम करम वश, भूप महिल में आय गया ।
तव हुए भयाकुल दोनुं को, प्रान वचाना कठिन भया ॥
शेर-धुजे है थर थर देह कहे मुझ को छिपा तत्कालजी ।
राजा जो आवे देखले, मेरा क्या करे हालजी ॥
रस्से से रानी वांध पग, संडास में दिया डालजी ।
ऊँधे जो मुख वागुल जिसो, लटके कुँवर सुकुमालजी ॥

खड़ी-मल मूत्र अशुचि वहे नाक पर सारा ।
डारे कोई उष्टी थाल करे सो अहारा ॥
महा दु खी भया दिल मांहि, करत विचारा ।
नहीं करूँ विषय का संग, जो हो छुटकारा ॥
खात-नव मास रह्या ऊपर सात दिन लिया ।
भला २ कुंवर ने दुर्गत जैसा कष्ट सयाजी ॥
वरसाद चुया रस्सा पुराना भया ।
भला २ वोझ से तुरत टूट गयाजी ॥
मिल्लत-करूँगा नहीं रानी का संगजो,
अब के प्रान वच जावेगा ॥ ललितांग० ॥२॥

जल प्रवाह से मास पिंड सम पड़ी, आय बाहिर काया ।
तव मिली पिता को खवर कर जतन कुँवर को घर लाया ॥

खड़ी-पञ्च इन्द्रिय जग सुख, जान जहर का प्यारा।
दुःख दाय विषय लख खड्ग मधु भर धारा॥
समझ वे सतगुरु रहो पाप से न्यारा।
शुद्ध शियल व्रत चित्त धार होय निस्तारा॥

खान-पंडित नामी श्री सुखारिखजी स्वामी।
भला २ किया उपकार ज्ञान समकित पामी॥
दुर्मति वामी भया सुमन आगामी।
भला २ गुरु अध्यात्म गुण धामीजी॥

मिलन-कहत अमीरिख मंगल वरते,
जो सतगुरु गुण गावेगा॥ ललिताग० ॥४॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी म० सा० की
सम्पदाय के पं० मुनि श्री सुखाऋषिजी
म० सा० के शिष्य कविवर पं० मुनि श्री
अमीऋषिजी म० सा० विरचित
जैनामृत सुबोध संग्रह
॥ सम्पूर्ण ॥

आर्थिक सहायताओं की शुभ नामावली।

—॥—

रु०
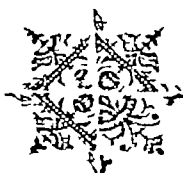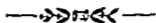
१२५) श्रीमान सेठ पुखराजजी साहब कोचर एम० एल० ए० हिंगणघाट

१००) श्रीमान सेठ जेठमलजी हरकचन्दजी लोढ़ा हिंगणघाट

१००) श्रीमान सेठ सुरजमलजी मोहनलालजी झामड़ राजका पिंपलगांव

१००) श्रीमान सेठ भीमराजजी आसकरणजी गुलेच्छा धमतरी

५०) श्रीमान भीकमचन्दजी बागा रायपुर (सी० पी०)

५०) श्रीमान सेठ नथमलजी जालमचंदजी सांड रायपुर (सी० पी०)

२५) श्रीमान सेठ छोटमलजी गणपतसिंहजी शुजालपुर